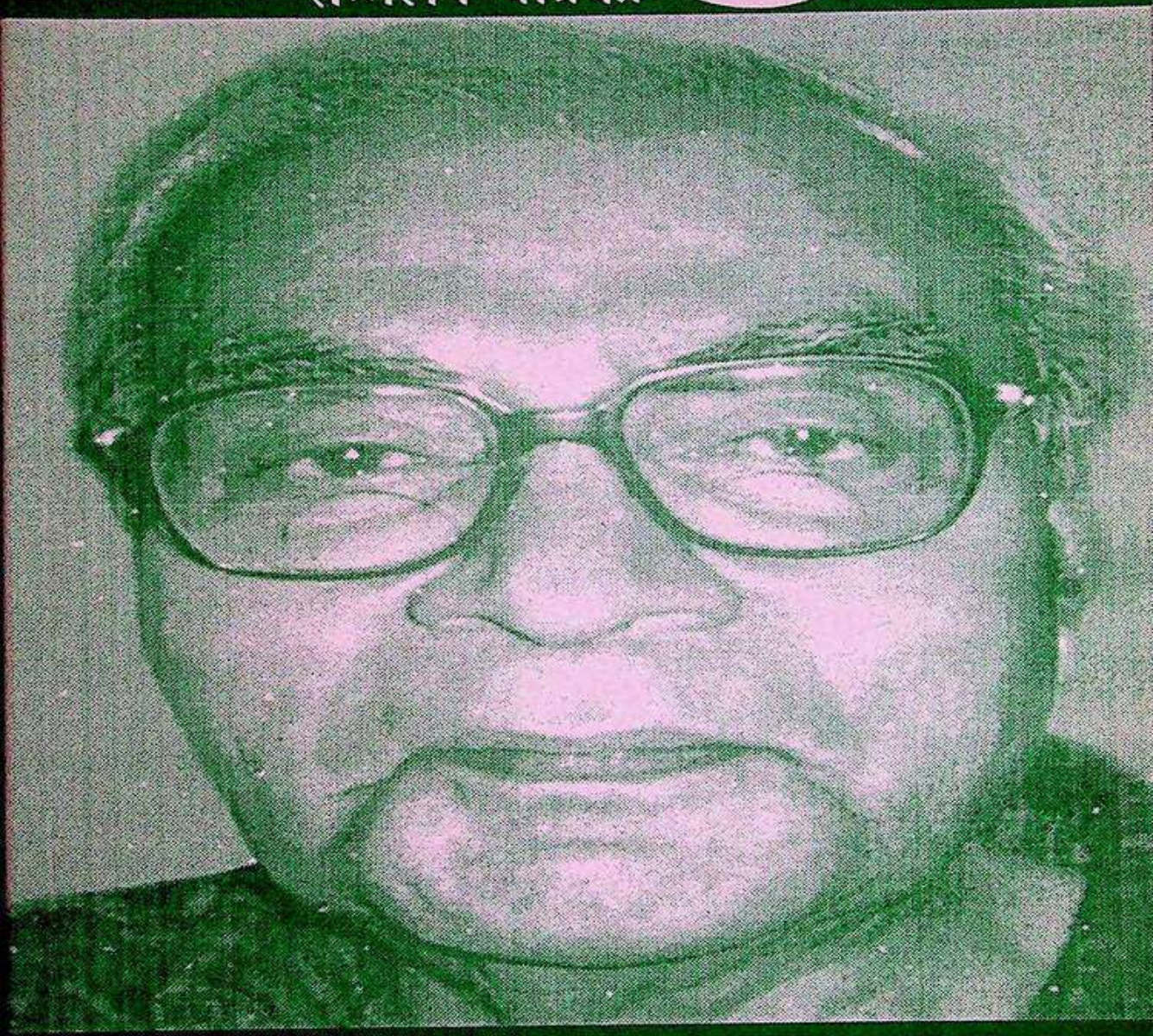
जुलाई-अगस्त-सितंबर-
अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर, 2018

ISSN2321-7677 Bhojpurisammelanpatrika

भाषा-साहित्य-सांस्कृति-समाज आ विकास खातिर समर्पित

भोजपुरी

सम्मेलन पत्रिका



पाण्डेय कपिल स्मृति अंक

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका

वर्ष-28, अंक-7-12, पूर्णांक-341-346, जुलाई-सितंबर, अक्टूबर-दिसंबर, 2018, दस पचास रुपया

संपादक
प्रो॰ ब्रजकिशोर
मोबाइल : 9334112960

अतिथि संपादक
भगवती प्रसाद द्विवेदी
मोबाइल : 9430600958

संपादक (समन्वय)
डॉ. गुरुचरण सिंह
मोबाइल : 9431844000

प्रबंध संपादक
डॉ. जौहर शफियाबादी
मोबाइल : 9470793586

सह संपादक
डॉ॰ जीतेन्द्र वर्मा
मोबाइल : 9430677523

संपादक मंडल
डॉ. राजनारायण दीक्षित, डॉ॰ महामाया प्रसाद विनोद, अंबदत्त गुंजन,
ब्रजकिशोर दूबे, प्रो. (डॉ.) जयकांत सिंह 'जय', दिलीप कुमार,
प्रो. सुरेन्द्र सिंह, ई० राजेश्वर सिंह, सुखनंदन सिंह 'सदय'

संपादकीय संपर्क
फ्लैट 204, ब्लॉक-ए, साकेत प्लाजा, जमाल रोड, पोस्ट- जमाल रोड,
द्वारा- जी.पी.ओ., पटना-800 001
ईमेल- abbhojpuriss@gmail.com

कार्यालय संपर्क
डॉ. महामाया प्रसाद 'विनोद', बी-12, आश्रय होम्स, आरा गार्डेन रोड, बेली रोड,
जगदेव पथ, पटना-800 014, मो० : 9430054236

शाखा कार्यालय :
1. भवन संख्या 21, शिवालिक, साईं मंदिर के पीछे, सेक्टर-61, नोएडा—201303
2. बाल भारती पथ, सिविल लाइन्स, सासाराम-821115 (रोहतास)

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे ।
लेखन, संपादन अवैतनिक ।

अ॰भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के	'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के
वार्षिक सदस्यता शुल्क 51 रुपया सालाना	वार्षिक ग्राहक शुल्क 100 रुपया
आजीवन सदस्यता शुल्क 551 रुपया	सम्मेलन के सदस्य खातिर
	वार्षिक ग्राहक शुल्क 80 रुपया
विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क 1501 रुपया	प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 1000 रुपया

www.bhojpurisahityangan.com

सिलसिला

- **संपादकीय–1** –भगवती प्रसाद द्विवेदी 2
- **संपादकीय–2** –डॉ. महामाया प्रसाद विनोद 5

1. पाण्डेय कपिल –डॉ. शंभुशरण सिन्हा 7
2. पाण्डेय कपिल के प्रति –डॉ. शंभुशरण सिन्हा 13
3. भोजपुरी के समर्पित साधक..... –सूर्यदेव पाठक 'पराग' 14
4. एगो अभूतपूर्व व्यक्तित्व : पाण्डेय कपिल जी –गंगा प्र0 अरुण 23
5. जिनिगी के जीयल हऽ बड़की लड़ाई –भगवती प्र0 द्विवेदी 29
6. भोजपुरी साहित्य में पाण्डेय कपिल के योगदान –डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' 34
7. बेवहार–कुशल पांडेय कपिल जी से हमार लगाव –डॉ. ब्रजभूषण मिश्र 39
8. पांडेय कपिल : एगो संस्मरण –रामनिहाल गुंजन 47
9. भोजपुरी साहित्य के मील के पत्थर : पांडेय कपिल –डॉ. महामाया प्रंसाद विनोद 54
10. भोजपुरी के मलहोरी –रामनारायण उपाध्याय 59
11. पाण्डेय कपिल : एगो स्फटकीय व्यक्तित्व –डॉ. शारदा पाण्डेय 63
12. भोजपुरी के शिखर व्यक्तित्व : पाण्डेय कपिल –प्रो. (डॉ.) नीरज सिंह 67
13. 'हम त राही हई, रुकीं कबले : पाण्डेय कपिल –डॉ. सुनील कुमार पाठक 75
14. भोजपुरी के शिखर पुरुष आचार्य पाण्डेय कपिल –व्यास मिश्र 80
15. भोजपुरी के अमर साधक : पाण्डेय कपिल –डॉ. बलराम दूबे 88
16. दीया बुताइल इँजोर दे गइल –ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी 95
17. सरलता,, सहजता के जीवन्त मूर्ति : कपिल जी –मार्कण्डेय शारदेय 101
18. संत सुभाव के साहित्यकार : पांडेय कपिल –दिलीप कुमार 103
19. भोजपुरी के मजबूत स्तम्भ : पाण्डेय कपिल –प्रो. अरविन्द कुमार वर्मा 'अरविन्द' 107
20. इयाद के ऐनक में पाण्डेय कपिल –श्रीमती सुशीला पाण्डेय 110
21. बानगी : आचार्य पाण्डेय कपिल के चुनिन्दा गजल 116

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय



भोजपुरी के भगीरथ

भोजपुरी के गौरव–स्तम्भ आचार्य पाण्डेय कपिल । भाषा–साहित्य के बढ़ंती खातिर आपन हाड़–माँस गलावेवाला पाण्डेय कपिल । भोजपुरी के भगीरथ पाण्डेय कपिल । पाण्डेय कपिल–माने अपना भोजपुरी माई बदे हरेक मोरचा पर 'वन मैन आर्मी' नियर जूझेवाला एगो दीढ़ इच्छाशक्ति से लबालब भरल सिपाही ।

ई आ एह तरह के कवनो विभूषण–अलंकरण पाण्डेय कपिल के शख्सियत का सोझा बौना लागत बा। पिछिला 2 नवम्बर, 2017 के उहाँ के देहावसान के बाद भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संगठन के स्तर पर जवन खालीपन आइल बा, ओकर भरपाई कइसहूँ सम्भव नइखे बुझात । कपिल जी व्यक्ति ना होके एगो संस्था रहनीं ।

भोजपुरी में उहाँ के तब डेग बढ़वले रहनीं, जब हिन्दी कविता में आ कवि सम्मेलनन के मंच पर उहाँ के निठाह पहिचान बनि चुकल रहे । बाकिर अपना महतारी भाषा के बढ़ंती खातिर उहाँ के जब भोजपुरी में अइनीं, त मनसा–वाचा–कर्मणा भोजपुरिए के होके रहि गइनीं ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के जब 1970 में नेंव धराइल, त मेंह में उहें के रहनीं । ओह घरी के आन्दोलन तब रंग ले आइल रहे, जब बिहार में (सउँसे देश में सबसे पहिले) भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

अकादमी के स्थापना भइल रहे आ आकाशवाणी, पटना से भोजपुरी कार्यक्रम 'आरती' के सिरीगनेस भइल । जहाँ–जहाँ पाण्डेय कपिल जी के आवास रहल, सम्मेलन के दफ्तरो उहँवें रहल– पहिले ईस्ट गार्डिनर रोड में, फेरु आगा चलिके इन्द्रपुरी में । ओह घरी सम्मेलन के सचहूँ अखिल भारतीय स्वरूप रहे आ सम्मेलन के अधिवेशने में ना, कार्य समिति के बइठको में देश के कोना–कोना से नेही–छोही भाषा–साहित्य के टहलुआ लोग पहुँचत रहे आ अपना खेवा–खरचा से तन–मन–धन से सहजोग करत रहे । भोजपुरिया भाई–बहिन से घरे–घरे जाके मदत के गोहारो लगावल जात रहे । 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' पहिले तिमाही आ फेरु मासिक के रूप में उहें के संपादन में प्रकाशित होके इतिहास रचलस आ कई गो यादगार विशेषांक चरचा का केन्द्र में रहलन स, जवना में खास विशेषांक रहलन स– कहानी विशेषांक, लघुकथा विशेषांक, हाइकु विशेषांक, दोहा विशेषांक, गीत विशेषांक वगैरह । मए विशेषांक पत्रिका में प्रकाशित भइला का बाद किताबो के शकल में छपिके चर्चित भइलन स । शोधार्थियन खातिर उहाँ के एगो संदर्भो विशेषांक निकलले रहनीं, जवना में समहुतांक से दिसंबर 2000 तक छपल रचनन के क्रमवार ब्यौरा रहे । बाद में किछु ओइसन परिस्थिति बनल कि उहाँ के संपादन से मुँह मोड़ि लिहनीं आ सम्मेलन के कार्यालय कतहीं अउर ले जाए के निहोरा कइनीं । तब से कार्यालय–स्थल आ संपादन प्रो. ब्रजकिशोर के जिम्मे आ गइल । अपना संपादन–काल में उहाँ के लोकतांत्रिक तरीका अपनावत रहनीं आ संपादकमंडल के सदस्यनो से, जे जवना विधा/विषय के विशेषज्ञ होत रहे, पारी–पारी से संपादकीय 'कथनी संपादक के' लिखवावत रहनीं । एह नाचीजो से उहाँ के बीस–पच्चीस गो संपादकीय लेख लिखववले रहनीं, जवन उहाँ के अग्रलेखन के संग्रह 'विविधा' में संकलित बाड़न स– किछु नाँव से आ किछु बेनामो ।

सम्मेलन कार्यालय में उहाँ के एगो टाइपराइटरो रखले रहनीं आ बतौर संपादक तमाम चिट्ठी–पतरी खुदे टंकित कऽके भेजत रहनीं । बाहर के लेाग बूझे कि कार्यालय में अच्छा–खासा स्टाफ होइहन, बाकिर मए काम उहाँ के खुदे निपटावत रहनीं । रचनन के छँटाई, प्रूफ रीडिंग, संपादन से लेके लिफाफा पर नाँव–पता लिखला, टिकट सटला आ मए बंडल के पटना जी.पी.ओ में छोड़ला तक । तबो कवनो किसिम के

www.bhojpurisahityangan.com

शिकवा–शिकायत ना । कतना बड़हन करमजोगी रहनीं उहाँ के !

निधन के बाद जब सरधांजलि सभा आयोजित भइल रहे, त ओही में ई तय भइल रहे कि 'सम्मेलन पत्रिका' उहाँ पर केन्द्रित खास अंक के प्रकाशन करी आ किताबो के शकल में ऊ छपी । आलेख खातिर उहाँ से अंतरंग–आत्मीय जुड़ाव राखेवाला तमाम रचनाकारन से हाथ जोड़िके निहोरा कइल गइल, बाकिर किछु वरिष्ठ साहित्यकार बेमार रहला के कारन किछु लिखेके स्थिति में नइखन । तबहूँ नेही–छोही रचनिहार लोगन के बड़ा महत्वपूर्ण, सेसर आ संग्रहणीय आलेख समेटल गइल बा । ओइसे त पुन्नश्लोक पाण्डेय कपिल के व्यक्तित्व–कृतित्व के अतना आयाम आ अवदान बा कि ओह सबके एगो छोट काया में समेटि पावल सम्भवे नइखे, तबो उहाँके स्मृति में सरधा के अँजुरी से पत्रिका के फूल समर्पित कइल जा रहल बा– त्वदीयं वस्तु गोविन्दः.... सादर प्रणामांजलि !

–भगवती प्रसाद द्विवेदी

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय–2



भोजपुरी खातिर समर्पित व्यक्तित्व : पाण्डेय कपिल

समय सरकत चलेला । ना रुकेला, ना थकेला । घटना पर घटना घटत जाला । घटनन का चक्र में कुछ अइसन घटना घटित होला, जवन समय के शिलाखंड पर इतिहास बन के अंकित हो जाला । अबाध गति से चलत समय के सफर में ओकरा गोद में जनम लेला कुछ अइसन व्यक्तित्व, जे इतिहास का छाती पर अमिट छाप बन के अजर–अमर हो जाला । अखिल भारतीय भोजपुरी सहित्य सम्मेलन के गठनो भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इतिहास में एगो अइसने घटना रहे। एकरा भोजपुरी आन्दोलन आ भोजपुरी साहित्य के एगो महत्वपूर्ण अध्याय कहल जाव त कवनो अधिकई ना होई । एह संस्था के जनमे का समय से जुड़ल एगो सक्रिय, कर्मठ आ जुझारू योद्धा के नाँव बा पांडेय कपिल । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आधार स्तंभन में एगो प्रमुख स्तंभ रहनीं पांडेय कपिल जी ।

गंगा–यमुना–सरस्वती के संगम प्रयाग से पटना के गंगा तट के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के यात्रा के कर्मठ सहभागी पांडेय कपिल बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानन से घूमत–घूमत फेर पटना में आयोजित सम्मेलन के पच्चीसवाँ रजत जयन्ती अधिवेशन उनका जीवन के अन्तिम अधिवेशन रहे । ओह अधिवेशन में उहाँ का

www.bhojpurisahityangan.com

कवि सम्मेलन के अध्यक्षतो कइले रहनीं । एह अवधि में भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति आ संगठनात्मक क्रियाशीलन में उनकर सहयोग कबो भुलाइल ना जा सके । सम्मेलन के महामंत्री से अध्यक्ष पद तक के जीवन–यात्रा का संगे–संगे 'लोग', 'उरेह', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' आ अन्य पुस्तकन के संपादन, भोजपुरी संस्थान का माध्यम से पुस्तक प्रकाशन के अलावे ऊ अपने भोजपुरी साहित्य के विविध विधन पर आपन सशक्त कलम चलवलें । एह क्रम में 'भोर हो गइल' (कविता–संग्रह), 'कह ना सकलीं' आ 'परिन्दा उड़ान पर' (गजल–संग्रह) 'विविधा' (निबंध–संग्रह), 'जीभ बेचारी का कही' आ 'साँस जबले चलत रहे' (दोहा–संग्रह) के अलावे भोजपुरी के सर्वाधिक लोकप्रिय कालजयी उपन्यास 'फुलसुंघी' उनकर प्रमुख कृति बा । 'फुलसुंघी' उपन्यास के भोजपुरी साहित्य में हिमालयी ऊँचाई मिलल ।

भोजपुरी साहित्य के अलावे भोजपुरी भाषा के संबंध में आपन बेबाक विचार व्यक्त करत एगो पत्रिका में प्रकाशित भाषा नीति के समीक्षा करत लिखलीं– 'भाषा केहू के बनवले ना बने । भाषा ऊ नदी ह, जवन आपन राह अपनहीं बनावेले । भाषा के मानक आ शिष्ट रूप लिखात–लिखात अपनहीं उभरेला । सहज–स्वाभाविक रूप से मँजत–सँवरत, कालक्रम से भाषा के आपन लीक अपनहीं बन जाला । लिखात–लिखात स्थानिक प्रयोगन के मोह छूट जाला आ सर्वमान्य प्रयोग उभर आवेला ।'

1980 से 2001 तक लगातार 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के सफल संपादन आ प्रबंधन के गुरुतर दायित्व के निर्वहन के उनका जिनगी के एगो विशिष्ट उपलब्धि कहल जा सकेला । सम्मेलन के समर्पित अइसन व्यक्ति के श्रद्धांजलि प्रकाशन हमनी के फर्ज बनत बा । उनका प्रति आपन श्रद्धा–सुमन अर्पित करे के क्रम में उनकर नेही–छोही आ भोजपुरी साहित्य के प्रेमी लोगन के, संस्मरण भेजे वाला लोगन के एगो लमहर पाँति बनत देख के मन अभिभूत हो उठल । रचनाकारन के श्रद्धा–सुमन अर्पित कइला खातिर संपादक मंडल विशेष रूप से आभारी बा ।

–महामाया प्रसाद विनोद

❖❖❖

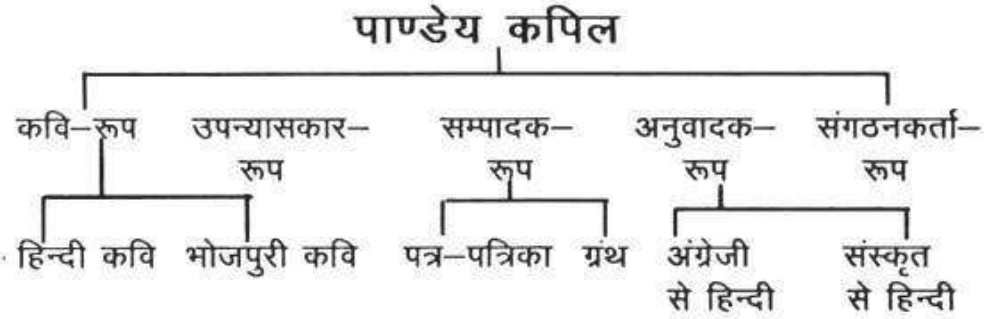
www.bhojpurisahityangan.com



पाण्डेय कपिल

–डॉ. शंभुशरण सिन्हा

पाण्डेय कपिल भोजपुरी के कालजयी साहित्यकार रहन । उनकर हिन्दी–साहित्य के भी सेवा महत्त्वपूर्ण बा । उनकर पूरा साहित्यिक व्यक्तित्व के समझे खातिर नीचे के तालिका सुविधाजनक होई :



एह विविध रूपन के समझे खातिर उनकर लिखल साहित्यिक कृतियन के ज्ञान आवश्यक बा; एह से नीचे उहनी के प्रकाशन–वर्ष का साथ उल्लेख कइल जा रहल बा :

1. आभास (हिन्दी–कविता–संग्रह) 1956 ई.
2. आरा में दो मास (टू मंथ्स इन आरा के अनुवाद) 1961 ई.
3. भोर हो गइल (भोजपुरी कविता–संग्रह) 1971 ई.

www.bhojpurisahityangan.com

4.	फुलसुंघी (भोजपुरी उपन्यास)	1977 ई.
5.	कह ना सकली (भोजपुरी–गजल)	1995 ई.
6.	जीभ बेचारी का कही (भोजपुरी गजल)	2004 ई.
7.	परिन्दा उड़ान पर (भोजपुरी गजल)	2007 ई.
8.	विविधा (संपादकीय निबंध तथा अन्य)	2011 ई.
9.	दुनिया के सतरंज बिछल बा	2014 ई.
10.	कृष्णार्जुन संवाद (गीता के भोजपुरी अनुवाद)	2015 ई.
11.	साँस चलत जब ले रहे (भोजपुरी दोहा–संग्रह)	2017 ई.

इहनी के अलावा उनकर कुछ आउर–आउर किताब बाड़ी स जवन अनुपलब्ध बाड़ी स । फूल और कलियाँ', 'हीरे के टुकड़े', नवीन सुबोध व्याकरण', आचार्य महेन्द्र शास्त्री, 'सारण्यक' अइसन रचना बाड़ी स ।

पाण्डेय कपिल के कवि–रूप के सिलसिला में ई जानल जरूरी बा कि ऊ प्रातिभ कवि रहन; अभ्याससिद्ध ना । कविताई खातिर उनका में ईश्वरीय प्रतिभा त रहले रहे, निपुणतो भी भरपूर रहे । ऊ हिन्दी आ भोजपुरी का साथ अंगरेजी आ संस्कृत–ज्ञान में भी निपुण रहन । उनका लोक आ शास्त्र–दूनों के बहुत ज्ञान रहे । ऊ कवियें ना, कविता के अंतरंग पाठक रहन । ऊ द्विवेदीयुगीन दामोदर सहाय 'कविकिंकर' के पौत्र आउर हिन्दी आ भोजपुरी के यशस्वी आ अनूठा कथाकार बाबू जगन्नाथ प्रसाद सिंह के ज्येष्ठ पुत्र रहन । कहे के मतलब कि साहित्यिक संस्कार त उनका घुट्टिये में मिल गइल रहे । ऊ अइसन साहित्यिक परिवेश में पलल रहन, जवना में उनका बाद उनकर दूगो छोट भाई लोग अतुल कवि, कथाकार आ कलाकार भइल जवना लोग के कलात्मक सूक्ष्मता के ऊँचाई समझते–समझते समझ में आई ।

जहाँ तक पाण्डेय कपिल के हिन्दी कवि–रूप के सवाल बा, हमरा कहे में तनिको संकोच नइखे कि भोजपुरी के तरफ उनकर मुड़ल त भोजपुरी खातिर शुभ भइल, बाकिर हिन्दी कविता खातिर ई बहुत घातक भइल । हिन्दी में निराला जइसन एगो दोसर गीतकार मिलते–मिलते रह गइल । हमार ई मूल्यांकन अकारण तब ना लागी, जब 'आभास' के एह पंक्तियन पर ध्यान जाई;

आते हो तो पाहुन–सा क्यों आते हो,
मन को अकूल प्लावन से भर जाते हो ।

www.bhojpurisahityangan.com

तुम क्या जानो कि तुम्हारे पदचिह्नों को,
किन फूलों ने कैसे जल से धोया है !
क्या नहीं तुम्हें पाकर मैंने पाया था,
खोये तुम क्या, मन ही खोया–खोया है !!

ऊ जमाना छायावाद के अवसान के रहे, बाकिर खुमारी बनल रहे । आत्मा–परमात्मा, अलौकिक प्रिया–प्रियतम के जवन खेल महादेवी खेलत रही, कपिल जी भी ओह आध्यात्मिक काव्य क्रीड़ा के एगो बरियार गोइयां रहन ।

जादेतर एगो कवि दोसरा कवि के प्रशंसा ना करे, बाकिर पाण्डेय कपिल के काव्य–प्रतिभा में ऊ बल रहे, जवना के अनदेखी ना कइल जा सकत रहे । इहे कारण बा कि 'आभास' के 'पूर्वाभास' में महाकवि केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' लिखले बाड़न– " 'आभास' के करुण स्वर में हृदय–तंतुओं को हिला देने की शक्ति है ।" अइसन कहल अकारण नइखे, काहे कि 'आभास' के कई गीतन में आध्यात्मिक प्रेम के ओइसने चटक रंग बा, जइसन निराला आ महादेवी के प्रेम–गीतन में । इहे देख के प्रसिद्ध कवि ब्रजकिशोर नारायण भी लिखले बाड़न –"आभास की गीत–कृतियों में अगर हिन्दी–जगत् यमुना के पार वाले युवक का आभास देख रहा है, तो यह परम प्राकृतिक और गौरवास्पद है ।"

जहाँ तक पाण्डेय कपिल के भोजपुरी कविता– लेखन के बात बा, एकर शुरुआत त 1948 ई. के आसपास लउकता, बाकिर 1951 ई. से त ऊ नियमित रूप से भोजपुरी में ही कविता लिखे लगलन । 'भोर हो गइल' उनकर एकावन कवितन के संग्रह बा, जवना में मनोज्ञ गीतन के अलावा ग़ज़ल, मुक्तक आ व्यंग्य–कविता बाड़ी स । एह संग्रह के गीतन में भोजपुरी जनपद के माटी के गमक आ आवाज के खनक भरल बा । –'फेरि फेरि जाला रे नजरिया, घेरि घेरि सावन आवे ना", "मधुआ जे लागेला मोजरिया, हो रामा, लागे बइसाखी" आ "झमकि चलेली रानी बदरी त छलकेला गगरी नू हो" में क्रमशः कजरी, चइता आ सोहर छंदन के प्रौढ़ आ कलात्मक प्रयोग बा । ई सब देख के लागता कि कपिल जी कविता खाली कविता लिखे खातिर ना लिखत रहन । ऊ एगो सजग कलाकार रहन । ऊ चाहत रहन कि भोजपुरी जनपद के पहचान करावेवाली रागरागिनियन में रचना कर के उहनी के सुरक्षित राख लेल जाव । एह संग्रह के कई कवितन में प्रकृति के विविध रूपन के मनोरम अंकन भइल बा । 'विभावरी' के एगो उत्प्रेक्षायुक्त चित्र देखीं–

www.bhojpurisahityangan.com

रात जइसे पहिर लेलस पियरी
जोत से जगमगा गइल सगरो
स्वर्ग के हो गइल धरा धियरी ।

कवि के नजर जहाँ एक ओर धरती पर बा त दोसरा ओर स्रष्टा के अलोकिक सुन्दरतो पर जवना पर, जीव सहसा निछावर हो जाता–

दर्द तोहरे बा, हमार गम भी त अब तोहरे बा
दिल भी तोहरे बा, हमार दम भी त अब तोहरे बा
जिन्दगी हो चुकल निछावर तोहरे ऊपर
जान तोहरे बा, हमार 'हम' भी त अब तोहरे बा ।

इहे अहंकारहीनता आ पूर्ण समर्पण के भाव कपिल जी के भोजपुरी कविता के सबसे ऊँचा आसन पर बइठा देता ।

'भोर हो गइल' के कवितन में काल–चेतना के दार्शनिकता के अलावा अकेलापन, बेसहारापन, भागत जवानी के पछतावा आ मृत्युबोध के कई स्तर लउकत बाड़न स ।

कपिल जी गढ़िया ना, जड़िया कवि हवन । उनकर भोजपुरी शब्द–भण्डार बहुत बड़ बा । ओमें बहुते चमकदार शब्दन के जगमग करत नग भरल बाड़न स, जवनन के जरूरत के मुताबिक कपिल जी कबो–कबो जड़ के कमाल करत लउकलन । विभावरी के चित्रण में 'धियरी' के जड़ावँ त कमाल के बड़ले बा–

हम ना जोहत रहब विदेश के मुँह
अन्न जो ना दीहन त नौजी ।

'भाँय भाँय भोर के' में 'भाँय–भाँय' आ 'नौजी' के जड़े में कवि के जौहरीवासी कारीगरी के जड़िया रूप देखते बनता । कपिल जी 'जड़िया' माने मौलिक आ 'जड़िया' माने जड़ेवाला दूनों रूप में अनूठा कवि बाड़न । का साँझ आ का भिनसहरा, का रात आ का प्रात, का मधुमास आ का बरसात– सबके चित्र उरेहे में कपिल जी पूरा पूरा मगन लउकत बाड़न ।

अइसे त हमरा लागता कि कपिल जी भोजपुरी में गजल 1950 ई. के कुछ पहिलहीं से लिखत रहन, बाकिर एकर लरछुत उनका में भोजपुरी आंदोलन का साथ तब लागल, जब जगन्नाथ जी से उनकर साथ भइल । उनका पर गजल के जइसे भूत सवार हो गइल । ग़ज़ल लिखत हरदम उनकर ध्यान जगन्नाथ जी पर रहत रहे । इहे कारण बा कि उनका ग़ज़लन में ग़ज़ल के व्याकरण के सर्वत्र निर्वाह बा । ऊ एक

www.bhojpurisahityangan.com

से एक बढ़ के ग़ज़ल लिखलन आ मृत्यु तक ग़ज़ल लिखे खातिर कलम–कागज के माँग करत रह गइलन । उनका मरे के पहिले तक ग़ज़ल के परी उनका सिरहाने उनका खिदमत में हाजिरी देत रह गइली स । उनका ग़ज़लन में खाली आशिक–माशूका के दर्द के इजहारे नइखे, ऊ ग़ज़ल के एह लिजलिजा अवस्था से निकाल के ओकरा में भाव–वैविध्य भरलन । उनका ग़ज़लन में भाषा के नजाकत आ नफासत से जादे चमत्कार भरल अनुभूति के समृद्धि बा । 'साँस चलत जबले रहे' उनकर भोजपुरी दोहा सब के संग्रह ह ।

ई सब साँच बा, बाकिर उनकर भोजपुरी–लेखन के अक्षय स्मारक उनकर उपन्यास फुलसुंघी बा, जवना पर कई, पुरस्कार मिल चुकल बा । प्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ. विवेकी राय से लेके हिन्दी–भोजपुरी के ख्यातिलब्ध साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी वगैरह– सभे 'फुलसुंघी' के मूल्यांकन कर चुकल बा । फुलसुंघी भोजपुरी कथा–साहित्य के सचमुच मुकुटमणि ह । इतिहास आ कल्पना के अइसन कलात्मक मेल दुर्लभ बा । ढेला, महेन्दर मिसिर, हलिवंत सहाय आ रिवेल साहेब के जीवंत चरित्र ! आह, हमहूँ ओह काल में काहे ना पैदा भइलीं । ओह काल के हवा आ माटी के सुगंध नाक में भर आवता ।

सम्पादक रूप में कपिल जी 'सारण्यक' 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' आ 'उरेह' के सम्पादन कइलन । सब में उनकर आदर्श सम्पादक–रूप झलकता । उनकर सम्पादन वाला काम बलिदानी वाला काम रहे, जवना में उनकर पूरा परिवार झोंकाइल रहे । पीर बावर्ची भिस्ती खर सब कपिल जी । रचनन के संशोधन, छपाई के पइसा के जोगाड़ से लेके 2 ईस्ट गार्डिनर रोड से जीपीओ तक के पैदल सफर आ पत्रिकन के पोस्टिंग तक– सबकुछ अकेले गजब के हुता तरा पत्रिकन के अलावा ऊ आचार्य महेन्द्र शास्त्री पर जवन ग्रंथ सम्पादन कइलन ऊ आजकल के पी–एच.डी. के शोध प्रबंधन के समतुल्य बा । से बहुत ऊपर के काम बा ।

अनुवादक रूप में ऊ श्रीमद्भगवद्गीता के कृष्णार्जुन संवाद के भोजपुरी में गद्यात्मक अनुवाद कइलन । एकरा अलावा कपिल जी जॉन जेम्स हॉल्स के अंगरेजी में लिखल किताब 'टू मंथ्स इन आरा' के हिन्दी अनुवाद 'आरा में दो मास' नाम से कइलन । एह अनुवाद पर गद्गद् होके तत्कालीन प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. कालीकिंकर दत्त (कालिकिंकर दत्त) लिखलन –''हॉल्स की पुस्तक– 'टू मंथ्स इन आरा' एक महत्त्वपूर्ण

www.bhojpurisahityangan.com

कृति है । .....यह एक अत्यंत दुलर्भ कृति है और श्री पाण्डेय कपिल ने इसे हमारी राष्ट्रभाषा में अनूदित करके, एक ओर जहाँ इतिहास के विद्वानों की सेवा की है, वहीं दूसरी ओर सामान्य पाठकों का भी उपकार किया है ।''

जहाँ तक कपिल जी के संगठनकर्ता–रूप के बात बा– के ना मानी कि कपिल जी के एह में ना केहू जोड़ रहे, ना बा आ अब ना होखी । घर आ पड़ोस के त केहू जोड़िए नइखे पावत, अखिल भारत के के जोड़ी ? के जोड़ी आरा आ बक्सर के, के जोड़ी, बलिया आ गाजीपुर के, के जोड़ी बनारस आ मिर्जापुर के, के जोड़ी छपरा, सीवान आ गोपालगंज के, के जोड़ी पूरबी, पच्छिमी आ मोतिहारी आ भाटपार के, के जोड़ी जमशेदपुर, डाल्टनगंज आ राँची के, के जोड़ी अपना से सुदूर छत्तीसगढ़ के भोजपुरी भाषा भाषियन के ? केकरा में ताकत बा आ केकरा में सबके जोड़ेवाला लूर आ काबू बा ? कपिल जी भोजपुरी के प्रति आपन निःस्वार्थ सेवा–भाव, अद्‌भुत भाषण कला आ अप्रतिम आतिथ्य के चलते सचमुच भोजपुरी साहित्य के अइसन सच्चा नायक रहन, जे भोजपुरी के उत्थान खातिर हींग से हरदी तक के जोगाड़ करत अंतिम साँस लेल । कुछ अति महत्त्वाकांक्षी निपट निर्लज्ज लोग उनका साथ गद्दारी कइलन, बाकिर खुल के ना । ओह मरखंडा अवधूत से भिड़े के केकरा में हूब रहे ?

उनकर सम्पादक आ संगठनकर्ता रूप के सही पहचान खातिर उनकर 'विविधा' देखे के चाहीं ।

एन/14, प्रोफेसर कॉलोनी,
पोस्ट– लोहियानगर पटना–20
सम्पर्क : 9431214557
7488452442

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

पाण्डेय कपिल के प्रति

—डॉ. शम्भुशरण

शीतलपुर के हे पुरुषराट्
कविकिंकर के वंशज विराट् !
आभासित तुममें सूर्यकांत
अपनी बोली हित चिर अशांत !
कविता के हो तुम सुखद रूप
ज्यों अगहन की गुनगुनी धूप !
कितने प्रयोग मात्रादिक गण
प्रतिभा, शिक्षा, अभ्यास–निपुण !
'फुलसुंघी' में सूँघता जगत्
तद्देश–काल पात्रादि सकल
चल क्या अविचल !
तुम थे 'उरेहते, सम्मेलन
वारा जिनपर निज तन मन धन !
मूर्तिकार भ्रातादय कवि औ कथाकार
तादृश भ्रातृज प्रख्यात,
सुरेन्द्र के कण्ठहार !
नीरज–संजय विद्या विनीत !
पिता यशस्वी जगन्नाथ
सधे–मँजे थे कथा–हाथ;
घर टोला गाँव अमर रचना
कुछ सच है कुछ सच है ना
दामोदर के वंशावतंश
तुम नहीं रहे, यह दीर्घ दंश !

—एन–14, चित्रगुप्त नगर, कंकड़बाग, पटना–20

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी के समर्पित साधक : पाण्डेय कपिल

–सूर्यदेव पाठक 'पराग'

भोजपुरी भाषा–साहित्य का विकास में आपन पूरा जिनगी खपा देबेवाला भोजपुरी के कुछ गिनल–चुनल साधकन में एगो नॉव बहुत आदर का साथे लिहल जाला, ऊ नॉव ह 'पाण्डेय कपिल ।'

कपिल जी के पूरा नॉव रहे पाण्डेय कपिलदेव नारायण सिन्हा । उहॉ के जनम बिहार का सारन जिला के शीतलपुर गॉव में 24 सितम्बर 1930 के एगो प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में भइल रहे, जे पिछिला कई पुश्त से साहित्य, संगीत आ कला का सेवा में लागल रहल बा । कपिल जी स्वयं भोजपुरी आ हिन्दी के प्रौढ़ कवि निबन्ध, लेखक, संपादक आ भोजपुरी के सर्वताभावेन उन्नायक रहीं । उहॉ के बाबूजी स्वर्गीय पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह हिन्दी आ भोजपुरी के कथाकार आ निबन्ध लेखक रहीं। दादा स्वर्गीय दामोदर सहाय सिंह 'कविकिंकर' डिस्ट्रिक्ट इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स द्विवेदीयुग के चर्चित कवि लेखक रहीं आ परदादा स्वर्गीय शिव शंकर सहाय–मुख्तार, प्रसिद्ध संगीतज्ञ । छोट भाई पाण्डेय सुरेन्द्र आ पी. चन्द्रविनोद दूनू जाना सुप्रसिद्ध मूर्ति शिल्पी, मूर्तिकला के प्राध्यापक आउर भोजपुरी आ हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, कथाकार हई । कपिल जी एम.ए. हिन्दी, के उपाधि पवलीं आ राजभाषा विभाग में

www.bhojpurisahityangan.com

उपनिदेशक का पद से 1988 के सेवानिवृत्त भइलीं ।

पाण्डेय कपिल का बहुआयामी व्यक्तित्व आ कृतित्व के सही मूल्यांकन तीन रूप में कइल जा सकेला । ऊ रूप ह लेखक, संपादक आ साहित्यिक संस्थन के संगठनकर्त्ता के । एगो लेखक का रूप में विचार कइला पर जनाता कि कपिल जी का लेखन के आरंभ हिन्दी आ भोजपुरी– दूनू में बीतल सदी का पचास के दशक में हो गइल रहे, बाकिर पुस्तकन का प्रकाशन के आरंभ हिन्दी कविता से भइल आ पहिलका हिन्दी कविता–संग्रह सन् 1956 में 'आभास' नॉव से प्रकाशित भइल । ओह संग्रह में संकलित रचनन का बारे में हिन्दी–भोजपुरी के वरिष्ठ नवगीतकार श्री सत्यनारायण लिखले बानी –''बीतल सदी के पचास के दशक में कपिल जी के एगो प्रौढ़ आ दमगर संकलन 'आभास' प्रकाशित भइल रहे । सघन अनुभूति, सजीव चित्रात्मकता के साथ अभिव्यक्ति के तरलता से कइसे बदल जाला, 'आभास' के कई–कई गीत में देखल जा सकेला ।''

'आभास' का अलावा कपिल जी के तीन गो हिन्दी बाल कविता संग्रह आ एगो हिन्दी व्याकरण का प्रकाशित भइला के उल्लेख मिलेला– फूल और कलियाँ (1961) हीरे के टुकड़े (1961), हवा और पानी (1989) आ सुबोध हिन्दी व्याकरण (1959) । एह प्रकार से, कपिल जी के हिन्दी के सफल गीतकार आ बाल साहित्य का रचयिता के रूप में प्रसिद्धि मिलल ।

कपिल जी के पहिलका भोजपुरी कविता–संग्रह 'भोर हो गइल' सन् 1971 में प्रकाशित भइल, जवना में तीन गो गजल, अठाइस गो मुक्तक, चउदह गो गीत, एगो मुक्त छन्द के कविता आ पॉचगो व्यंग्य कवितन के मिला के कुल एकावन गो रचना संगृहीत बा । एह पुस्तक का भूमिका में कपिल जी बतवले बानी कि उहाँ का सन् 1948 से भोजपुरी कविता लिखे के शुरू कइलीं, बाकिर एह संग्रह में 1951 से 1971 यानी बीस बरिस के बीच में लिखाइल कवितन में से छाँट के ई संग्रह प्रकाशित करवले बानीं । एह पुस्तक के पढ़ला पर ई बात साफ हो जाति बा कि कपिल जी शुरुए से भोजपुरी कविता के अनेक विधन में रचना करे लागल रहीं, जवना के प्रौढ़ रूप पहिलके संग्रह में देखे के मिलत बा ।

सन् 1977 में कपिल जी के भोजपुरी उपन्यास 'फुलसुंघी' प्रकाशित भइल, जवना से उहाँ के नॉव भोजपुरी के श्रेष्ठ उपन्यासकार

www.bhojpurisahityangan.com

का रूपमें चर्चा में आइल । प्रसिद्ध कथाकार कृष्णानन्द 'कृष्ण' का अनुसार, 'फुलसुंघी' भाषा, शिल्प शैली आ अपना कसावट का चलते श्रेष्ठ कृति के रूप में प्रतिष्ठित बा । फुलसुंघी के कथा बाबू हलिवन्त सहाय, महेन्द्र मिसिर आ ढेला बाई के प्रेम के त्रिकोण में फँसल अपना चरम ऊँचाई के प्राप्त करता । उपन्यासकार के सजग दृष्टि, जीवनानुभव आ ओकरा भीतर बइठल सहृदय मानव पात्रन के चरित्रन के उदात्तीकरन करत खा कतहूँ मानवीय संवेदना आ सामाजिक मर्यादा के उल्लंघन नइखे कइले ।"

प्रख्यात कथा–शिल्पी आ कथा–समीक्षक डॉ. विवेकी राय 'फुलसुंघी' का बारे में आपन विचार एह रूप में प्रगट कइले बानी– 'भोजपुरी कथा साहित्य का विकास में इतिहास में कल्पना आ लोकयात्रा का मिलावट से बनल 'फुलसुंघी' एगो मानक उपलब्धि आ मील का पत्थर नियर सामने आवति बा । बड़हर असरवाला ई लघु उपन्यास आंचलिकता का संगे–संगे मध्यकालीन आदर्शवादी जीवन मूल्यन के जबर्दस्त वकालत करत बा । एकर कसल रोमैंटिक रूप पढ़बैयन के मोहि लेत बा । लेखक के रूपवादी शिल्प जगह–जगह पर अनुरंजनकारी सिद्ध होत बा आ उपन्यास के साधारण वर्णनात्मकता का स्तर से ऊपर उठा के सही माने में क्लासिकल उपन्यास बना देत बा ।" एगो उदाहरन देखे जोग बा, जवना में गुलजारी बाई के माई मीना बाई का एगो नाच के चित्र बिम्ब एह रूप में उरेहल गइल बा– "बीस–बाइस बरिस के गदराइल देह उमड़ल सरजू लेखा भरल रहे लबालब । जरीदार लहगा, सावन के सरजू लेखा लहरा लेवे । घूमसत बुझाय जइसे सरजू में चकोह पड़ गइल बा ।" 'फुलसुंघी' के अबतक कई संस्करण प्रकाशित होके ओकरा पठनीयता आ लोकप्रियता के कथा कह रहल बा ।

कपिल जी के पहिलका गजल–संग्रह 'कह ना सकली' सन् 1995 में प्रकाशित भइल । एह में एकावन गो गजलन के संग्रह कइल बा । शुरुआती दौर में कपिल जी के झुकाव गीत का ओर ज्यादा रहे, बाकिर बाद में गजल का ओर ज्यादा हो गइल, जवना के परिणति 'कह ना सकलीं' का रूप में भइल । एह संग्रह का प्रकाशन से भोजपुरी गजल के एगो प्रौढ़ आ निखरल रूप देखे के मिलल । एह गजलन का बारे में प्रसिद्ध गजलकार आ उर्दू साहित्य समीक्षक प्रो. शमीम अहमद आपन विचार प्रगट करत लिखले बानी– "पाण्डेय कपिल के गजलन में रख–रखाव, मिजाज अउर अन्दाज अइसन पावल जाला, जवन आम तौर पर अच्छा

www.bhojpurisahityangan.com

गजलन में पावल जाला । इनकर भोजपुरी गजल पढ़ला से अइसन नइखे बुझात कि हम गजलन के परम्परा से कट रहल बानी । उनका गजलन में परम्परा के चासनी भी बा अउर साथे–साथ अनुभव आ तजुर्बा के ताजगी भी पावल जाता । गजल के एगो कसौटी इहो ह कि छोट–छोट छन्द में सीधा–सादा शब्दन के जरिये सीधा–सादा जज्बात बेतकल्लुफी से कहल जाय । कपिल जी के गजलन में एह तरह के भाव देखे के मिलत बा, जेकरा कारण ऊ अच्छा से अच्छा गजलगो के बीच अजनबी अइसन नइखन लागत ।" प्रो. शमीम अहमद के एह कथन से मालूम होत बा कि भोजपुरी गजल उर्दू गजल का सामने खड़ा होखे में सामर्थ्य रखेले आ कपिल जी उर्दू गजलकारनो के बीच आदर पावे के जोग रहीं ।

कपिल जी के एगो दोहा–संग्रह 'जीभ बेचारी क़ा कही' नॉव से सन् 2004 में प्रकाशित भइल, जवना में तीन सौ एकावन दोहन के संग्रह भइल बा । एह दोहा–संग्रह का बारे में भगवती प्रसाद द्विवेदी के ई वक्तव्य ध्यान देवे जोग बा– "जीभ बेचारी का कही" के एक–एक दोहा दोहाकार के लमहर साधना, प्रौढ़ जीवनानुभव, दृष्टि सम्पन्नता आ वैचारिक प्रतिबद्धता के सूचक बा । जीवन–दर्शन इन्हनी में कूटि–कूटि के भरल बा । कहीं तरल अनुभूति के सघनता बा, त कतहीं भक्ति भाव के पराकाष्ठा । सामाजिक विसंगति–विद्रूपता, आर्थिक असमानता, राजनीतिक परिदृश्य, भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यन के अवमूल्यन, साम्प्रदायिक आ जातीय संकीर्णता, जुझारूपन अउर जिजीविषा के सुर इन्हनी के खासियत बा ।"

'परिन्दा उड़ान पर' नॉव से कपिल जी के दुसरका गजल–संग्रह सन् 2007 में प्रकाशित भइल । एह गजल–संग्रह में एकावन गो गजल सगृहीत बा । 'कह ना सकली' का प्रकाशन के तेरह बरिस बाद आइल एह संग्रह में कपिल जी के गजलगोई अनुभव के गहिराई, शिल्पगत प्रौढ़ता आ अन्दाजे–बयाँ का ताजगी के साथे उपस्थित बा । कुछ लोग मानेला कि भोजपुरी, गजल कहे के अनुकूल भाषा ना ह, एह बात के नकारत कपिलजी के गजल भोजपुरी के सर्वथा अनुकूल कहल जा सकेला । कवि सत्यनारायण का शब्दन में– "गजल भोजपुरी के प्रकृति के काफी अनुकूल पड़ेला । कथ्य के भंगिमा आ अनूठापन त भोजपुरी के लोकोक्ति, मुहावरा, लोकगीत इहाँ तक कि रोज–रोज के बतकही में चउतरफा फइलल बा । उक्ति–वैचित्र्य आ मारक मगर महीन व्यंग्य

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के संस्कार–स्वभाव में बा । "सत्यनारायण जी कपिल जी का एह संग्रह के बारे में लिखले बानी– "उमिर के सतहत्तरवाँ पायदान पर ठाढ़ कवि के ताजा संकलन में अनुभव के परिपक्वता, गजलीयत के विवेक आ तर्जे बयानी के संजीदगी एक साथ देखल जा सकेला ।"

एह संग्रह के प्रकाशित भइला का बादो कपिल जी का गजल के परिन्दा ना हारल ना थथमल । उहाँ के ताजा गजल बराबर पत्र–पत्रिकन में पढ़े के मिलत रहलि बा । डॉ. नन्दकिशोर तिवारी का संपादन में सासाराम (बिहार) से निकलेवाली सुरसती (तिमाही) के अक्टूबर–दिसम्बर 2010 का अंक में कपिल जी के एगो गजल छपल रहे, जवना में उहाँ के अस्सी बरिस का उमर में भी उत्कृष्ट जिजीविषा, संतोष, सन्तुष्टि का साथे रहे के अपना गजल में वार्धक्य जीवन के कतना साफ–सुथरा चित्र उरेहले बानी, ओकर बानगी 'सुरसती' में छपल ओह गजल में देखल जाय–

बुढ़वा–बुढ़िया हमनी दूनू परानी जी,
अपना गिरिही में हमनी खुश बानी जी ।
पेंशन पा के हम भइलीं मन के राजा,
बुढ़िया भइली हमरा घर के रानी जी ।
रानी जी देखस घर के दुखरा–धंधा,
अउर सम्हारस भोरे–साँझ चुहानी जी ।
करत रहीले हम दिन–रात मटरगस्ती,
दोस्त–मुहिम का साथे काटीं चानी जी ।
धिया–पुता परिवार संगे बाहर बाड़े,
पेरत जिनगी के कोल्हू के घानी जी ।
जब–तब फोन करेले सन नाती–पोता,
अगराली बतिया के, दादी–नानी जी ।
सब अपना में खुश बाटे, हमहूँ बानी,
जिनिगी में नइखे कवनो हलकानी जी ।
जबतक देह चलत बा हमनी दूनू के,
तबतक गह–गह करी हमार पलानी जी ।
नइखीं जानत जे दोसर के का होई,
जब एगो मउअत के चद्दर तानी जी ।

कपिल जी पिछिला कुछ बरिसन से अपना छितराइल गद्य–पद्य रचनन के सहोर–बटोर के पुस्तककार प्रकाशित करावे में जुट गइली ।

www.bhojpurisahityangan.com

ओही क्रम में सन् 2011 में 'विविधा' नाँव से एगो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित भइल । चार सौ एकासी पृष्ठन के एह ग्रंथ में कपिल जी के संपादित भोजपुरी पत्रिकन खातिर लिखल लेखन के संग्रह कइल बा । एह में संकलित संपादकीय लेख भोजपुरी भाषा–साहित्य के मन–मिजाज आ प्रगति के विगत तीन दशक के लेखा–जोखा जाने खातिर बहुत उपयोगी बा । ई अइसन सामयिक आ ऐतिहासिक दस्तावेज बा, जवना से भोजपुरी संस्थन के संगठन, आन्दोलन आ उपलब्धियन का बारे में पूरा विस्तार से जानल जा सकेला । चाहे भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के बात होखे, चाहे भोजपुरी के मानकीकरन के सवाल, कपिल जी के संपादकीय लेख काफी सुलझल आ विचारोत्तेजक होत रहे ।

संपादकीय लेख का अलावहूँ कपिल जी समय–समय पर पत्र–पत्रिकन, स्मारिकन आ सेमिनारन में पढ़े खातिर, लेख लिखत रहीं । ओह लेखन के एगो, संग्रह सन् 2012 में 'लेखांजलि' नाँव से प्रकाशित भइल ।

सन् 2013 में कपिलजी के लिखल कुछ संस्मरणन के एगो संग्रह 'घर आ बाहर' नावे से प्रकाशित भइल । एह में कपिल जी अपना आत्मीय आ परिचित लोगन के स्मरण कइले बानी ।

'दुनिया के सतरंज बिछल बा' कपिल जी के कविता संग्रह ह, जवन सन् 2014 में प्रकाशित भइल । अइसन जनाता कि कपिल जी ओह समय तक लिखल आ संकलन से छूटल कवितन के एह संग्रह में आखिरी बेर समेटे के प्रयास कइले बानी । मिलल जानकारी का मोताबिक, कपिल जी के आखिरी पुस्तक 'कृष्णार्जुन वार्त्ता' सन् 2015 में प्रकाशित भइल । ई पुस्तक 'श्रीमद्भगवद्गीता' के भोजपुरी में गद्यानुवाद ह ।

कपिल जी कुछ वैदिक मंत्रन के अनुवादो भोजपुरी में कइले रहीं, जवना के पुस्तकाकार संकलन संभवतः नइखे हो सकल । उहाँ का कुछ कहानी, लघुकथा आ हाइकु कवितो के रचना कइले रहीं, जवन पत्रिकन आ संपादित संग्रहन में पढ़े के मिलेला ।

कपिल जी जॉन जेम्स हॉब्स लिखित 'टू मन्थ्स इन आरा' 1857 के हिन्दी में अनुवाद 'आरा में दो मास' नाँव से कइले रहीं, जवन 1961 में प्रकाशित होके काफी चर्चा में रहल ।

अपना लमहर साहित्यिक जीवन में कपिल जी के कइल संपादनो

www.bhojpurisahityangan.com

का काम के सूची छोट नइखे, भोजपुरी का क्षेत्र में सक्रिय होखे का पहिले उहाँ का दूगो हिन्दी कविता–संग्रह 'नवांजलि' (नवगो युवा कवियन का हिन्दी कवितन के संग्रह 1965 आ 'सारण्यक' सारन जिला के बारह वृद्ध कवियन के प्रतिनिधि संकलन अपना संपादन में प्रकाशित करवलीं । ओकरा बाद भोजपुरी आन्दोलन के अप्रतिम योद्धा आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी के व्यक्तित्व–कृतित्व पर केन्द्रित एगो वृहदाकार ग्रंथ के संपादन कइलीं । 'आचार्य महेन्द्र शास्त्री : व्यक्तित्व और कृतित्व' नाँव के सन् 1971 में प्रकाशित एह ग्रंथ में विविध लेखकन के बानबे गो लेख आ शास्त्री जी के एक सौ पचहत्तर हिन्दी आ भोजपुरी कवितन के शामिल कइल बा ।

कपिल जी शुरुआती दौर में हिन्दी पत्रकारिता से जुड़ल रहीं । उहाँ का 1951–1952 में हिन्दी साप्ताहिक 'हुंकार' के सहायक संपादक, 1954 से 1958 तक हिन्दी साप्ताहिक 'उत्तर बिहार' में 'उष्ण शीतलपुरी' नाँव से 'कुछ ऐसे कुछ वैसे, स्तंभ के नियमित लेखक आ 1955–1956 में हिन्दी के व्यंग्य पत्रिका' 'चाणक्य' के संपादक मण्डल के सदस्य रहीं ।

कपिल जी जब भोजपुरी से समर्पण भाव से जुडलीं त स्वयं स्थापित भोजपुरी संस्थान का तत्वावधान में 'उरेह' (भोजपुरी तिमाही) के संपादन पूरा मनोयोग का साथे 1976 से 1980 तक कइलीं । फेर 'लोग' (भोजपुरी तिमाही) के 1980 में संपादन कइलीं । उहाँ का संपादन में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के मुखपत्र 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' तिमाही 1980 से 1988 तक आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' (मासिक) के संपादन 1990 से 2001 ले पूरा लगन आ निष्ठा का साथे कइलीं ।

कपिल जी के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के संपादनकाल में कई गो महत्वपूर्ण विशेषांकन के प्रकाशन भइल, जवन बाद में उहाँ का संपादन में पुस्तकाकार प्रकाशित होके काफी लोकप्रिय भइल । ओह विशेषांकन के पुस्तकाकार प्रकाशित पुस्तकन के नाँव बा– 1. दसरतन (सम्मेलन के प्रारंभिक दस अध्यक्षन पर केन्द्रित विविध लेखकन के लिखल दसगो व्यक्तिपरक निबन्ध के संग्रह, 1988), 2. 'भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु' (भोजपुरी के डेढ़ सौ हाइकुकारन के चुनिन्दा हाइकुअन के संग्रह 1995), 3. एक मुट्ठी लाई (एकसठ लघुकथाकारन के लघुकथा के संग्रह, 1997), 4. 'भोजपुरी कहानी हाल–साल के' (एकइस कहानीकारन के कहानियन के संग्रह, 1998), 5. भोजपुरी सतसई (छियासी भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

कवियन के प्रतिनिधि दोहा–संकलन, 2001), 6. धार के खिलाफ (भोजपुरी गीत संग्रह, 2001) ।

भोजपुरी पत्रिकन का सम्पादन काल में कपिल जी केतने हिन्दी रचनाकारन के भोजपुरी लेखन से जोड़लीं आ कतना नवहा लोगन के भोजपुरी लिखे के तरफ प्रोत्साहित कइलीं आ केतने लोग के चिरौरी कके भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के प्रायोजक बनवलीं । पत्रिका खातिर रचना मंगावल, प्रूफ देखल आ छपला पर पता लिख के भर–भर झोरी पत्रिकन के कान्ह पर लटकवले पोस्ट ऑफिस में जा के डिस्पैच करे तक के काम कपिल जी अकेले कइलीं ।

कपिल जी के साहित्यिक संस्थन से जुड़ाव नये उमिर से हो गइल रहे । उहाँ का हिन्दी का साथे भोजपुरी संस्थन का गतिविधियनो में भाग लेत रहीं आ विभिन्न पदन पर रह के मनोयोग का साथे काम करत रहीं । कुछ के विवरण एह प्रकार बा– बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का स्थायी समिति के सदस्य, 1955 से 1963 तक, सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री, 1966 से 1967 तक आ अध्यक्ष, 1972 से 1973 तक; सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, 1981 से 1982 तक, निराला साहित्य परिषद्, पटना के महामंत्री, 1966 से 1968 तक भोजपुरी संस्थान, पटना के अध्यक्ष, 1971 से जीवन–पर्यन्त, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का तदर्थ समिति के संयोजक 1973 से 1975 तक; महामंत्री 1975 से 1977 तक, उपाध्यक्ष 1982 से 1984 आ अध्यक्ष 1996 से 1998 तक ।

कपिल जी का बारे में इहो जानल जरूरी बा कि जब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के रूपरेखा बनावे खातिर बइठक होत रहे त कपिल जी के ओकरा तदर्थ समिति के समन्वयक काहे बनावल गइल । एह संबंध में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के वर्तमान संपादक प्रो. ब्रजकिशोर जी एगो लेख में चर्चा कइले बानीं– "महेन्द्र शास्त्री जी का पाण्डेय कपिल के कार्यक्षमता आ दमखम के पूरा पता रहे । उनका भरोसा रहे कि कपिल जी के भार दियाय त संगठन के ठाढ़ कइल जा सकत बा । अन्तिम बैठक में एगो तदर्थ समिति बनावल गइल आ ओकर संयोजक बनावल गइल पाण्डेय कपिल के । नाँव धराइल "अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन ।"

कपिल जी सम्मेलन के खड़ा करे आ ओकर अखिल भारतीय रूप देवे में लगातार काम करत सम्मेलन के पर्याय बन गइलीं- । सन्

www.bhojpurisahityangan.com

2001 के दिसम्बर तक निष्ठापूर्वक भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका मासिक के संपादन कइलीं, ओकरा बाद शारीरिक असमर्थता का चलते संपादन के भार सम्मेलन के वरिष्ठ आ सुयोग्य–सक्रिय सदस्य प्रो. ब्रजकिशोर के सउँप के स्वतंत्र रूप से लेखन आ अपना पुस्तकन के प्रकाशन में जुट गइलीं । उहाँ के आखिरी पुस्तक 'साँस चलत जबले रहे' 2017 में प्रकाशित भइल ।

कपिल जी पिछिला पचास बरिस से ज्यादा समय तक भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सर्वतोभावेन विकास खातिर मिशन भाव से संलग्न रहीं, जवना के परिणामस्वरूप भोजपुरी के साहित्यकारन से अकूत आदर आ भोजपुरी सेवी संस्थन से लगातार सम्मानित पुरस्कृत आ सम्मानोपाधि पवलीं । जइसे 'फुलसुंघी' (उपन्यास) पर 'भोजपुरी अकादमी पुरस्कार 1980 आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 'अभय आनन्द पुरस्कार 1990, सर्वतोभावेन भोजपुरी सेवा खातिर भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 'माधव सिंह पुरस्कार 2012 विश्व भोजपुरी सम्मेलन के सेतु सम्मान । एकरा अलावा जमशेदपुर, बक्सर, पतरातू, बिलासपुर, लखनऊ, छपरा कोलकाता आदि शहरन का संस्थन का ओर से सम्मान अभिनन्दन होत रहल । कुछ साहित्यिक संस्थन का ओर से कपिल जी के विद्यावाचस्पति (पी–एच.डी. 1988), संपादकरत्न (1993), भोजपुरी शिरोमणि (1994), भोजपुरी भास्कर (1994) समाजरत्न (1994), साहित्य वारिधि (1994) आदि सम्मानोपाधि से अलंकृत कइल गइल ।

कपिल जी सतासी बरिस के लमहर उमिर में 2 नवम्बर, 2017 के भौतिक देह त्याग के पंचतत्त्व में विलीन हो गइलीं, बाकिर भोजपुरी भाषा–साहित्य का विकास खातिर उहाँ के कइल काम हरमेसा इयाद कइल जात रही । कीर्तियस्य स जीवति ।

–8 ओ, अशोक नगर, दक्षिणी बशारतपुर,
गोरखपुर–273004, (उ.प्र.), मो:0945146773

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



एगो अभूतपूर्व व्यक्तित्व : पाण्डेय कपिल जी

—गंगा प्रसाद अरुण

मन बिसमाधल रहे । ससुरारी के एगो गमी कायक्रम से 2 नवम्बर के लौटत रहीं जमशेदपुर पुरुषोत्तम एक्सप्रेस से । लगभग डेढ़ घंटा लेट एह गाडी से अबहीं गया पार कइलहीं रहीं कि पटना से भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के फोन आइल– "पाण्डेय कपिल जी ना रहलीं । आजुए 4.00 बजे के लगभग उहाँ के हमनी का साथ सदा–सदा खातिर छोड गइलीं ।" द्विवेदी जी इहो बतवलीं कि अंतिम समय में उहाँ के महामाया प्रसाद विनोद जी के साथे कपिल जी के महा–प्रस्थान के गवाह रहलीं । मन खिन्न हो गइल । दुख पर दुख ! आ ई त एगो अइसन रिक्ति के सूचना रहे, जेकर क्षति–पूर्त्ति होइये नइखे सकत । हमरा अउर कुछ ना बुझाइल त अपना लड़िका 'राजेश भोजपुरिया' के एह दुखद घटना के सूचना दिहली जे संजोग से बिक्रमेगंज में बस के इंतजार में रहले । उहो सदमा गइले आ अपना सीमित साधन–माध्यम से एह दुखद समाचार के प्रसारित कइले, जेह से कि भोजपुरीसेवी लोगन–संस्थन के सूचना मिलल आ दोसरे दिन जमशेदपुर के अखबारन में ई दुखद समाचार प्रकाशित भइल ।

पाण्डेय कपिल जी के ना रहले हम भीषण अवसाद में आ

www.bhojpurisahityangan.com

गइलीं । इहाँ के संगे मिले–जुले, बात–बतकहीं ओही गति से चलत चले, जवना गति से पुरुषोत्तम एक्सप्रेस । ऊ सनेह, ऊ आत्मीयता त अब जोहलो पर ना मिली । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दूसरा अधिवेशन (पटना) के मंच से उहाँ से मिलल आत्मीयता–संबंध अंत–अंत तक बनल रहल । अइसना में पटना जाये के कवनो बहाना पाण्डेय कपिलजी से भेंट–मुलाकात–बतकही बदे एगो अजबे उत्साह भर देबे । सवाल–अपेक्षा–प्रशंसा–ओरहन के एगो लंबा कड़ी बनल रहल कपिल जी के साथे । फिर त हर अधिवेशन के अवसर पर उहाँ के प्रेम भरल खोज–आग्रह– 'अधिवेशन में जरूर आईं, हमरा नीक लागी ।'

26–27 मई 1990 के रेणुकूट अधिवेशन के अवसर पर आयोजित तीन पीढ़ियन के प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में पुरनकी पीढ़ी में हमरा से 16 साल से अधिका के पाण्डेय कपिल जी रहलीं, बीच के पीढ़ी के हम आ नइकी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में हमरा से 20–21 बरीस छोट संध्या सिन्हा रहली । एह संदर्भ में आदरणीय पाण्डेय कपिल जी के 11–5–1990 के लिखल पोस्टकार्ड हमरा मिलल –"रेणुकूट अधिवेशन में रउआ आपन चुनल तीन गो कविता पढ़े के बा । रउआ समेत कुल तीन कवि के तीन–तीन कविता के पाठ होई आ ओकरा बाद विद्वान लोग ओकरा पर बोली । .....एगो छोट पुस्तिका में तीनो कवि के कुल नौ कविता कवि के संक्षिप्त परिचय का साथे छपा के उहाँ वितरण खातिर ले जाये के बा..... ।"

18–19 अक्टूबर 1994 के सम्मेलन के 14वाँ अधिवेशन मुबारकपुर में आयोजित रहे, जवना में आदरणीय जगन्नाथ जी के आपन पाँच गो गजल पढ़े के रहे । कवनो कारण से जगन्नाथ जी के मुबारकपुर ना पहुँचला पर पाण्डेय कपिल जी हमरा लगे अइलीं आ आदेश दिहलीं –"गजल राउर विधा बा आ निहोरा बा कि उहाँ के अनुपस्थिति में ओह गजलन के पाठ रउरे कर दिहितीं त अच्छा रही ।" एह सौभाग्य के नकारे के सवाले ना रहे ।

पाण्डेय कपिल जी अराजकता के घोर विरोधी रहलीं । हमरा इयाद बा, 29–30–31 अक्टूबर 1982 के सम्मेलन के 7वाँ अधिवेशन अमनौर में भइल रहे । एह अवसर पर पाण्डेय कपिल जी के अध्यक्षता में आयोजित कवि–सम्मेलन के गवाह 5–6 हजार लोग रहे । टीकासन भर ऊँच एह कवि–मंच पर एगो कविजी आपन ताजा–तातल रचना सुनावे लगले । एह पर कपिल जी के धीरज जवाब दे गइल आ

www.bhojpurisahityangan.com

तमतमइले ओह कवि जीके फेंफरी में हाथ डाल के मंच से नीचे ढकेल दिहली– "चुप चोट्टा ! मुहदुब्बरजी के कविता के आपन बतावत लाज नइखे लागत ?" अइसन हिम्मती खाली पाण्डेय कपिले जी हो सकत रहलीं । आज के मंच पर त अध्यक्षे–संचालक लोग के कविता डिठारे पढ़ दिहल जात बा आपन बतावत । कविता के अइसन चोरी में मंच–मरजादा कइसन ! अइसने अराजकता के खिलाफ उहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से आपन सभ नाता तूर दिहलीं ।

खान–पान में कपिल जी के विशेष ताम–झाम ना सोहात रहे । 19 जून 1999 के जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् उहाँ के साहित्यिक अभिनन्दन से गौरवान्वित भइल । ओह रात परिषद् के सचिव के आवास पर उहाँ के खिआवे–पिआवे के इंतजाम रहे । मुख्य थाली के चारो ओर छोट–छोट 7–8 कटोरी में ना जाने का–का परोसाइल रहे । साथ ही हमनियो 3–4 आदमी के साथे भोजन के आग्रह रहे । भोजन से निपटला के बाद पसगइबत में उहाँ के हमरा से कहलीं– "अरुण जी, सीधा–सादा भोजन हमरा प्रिय ह । भात आ परेहगर मछरी हमरा जतना नीक लागेला, ओतना अउर कुछो ना । अइसन ताम–झाम हमरा खातिर 'डिस्टर्बिंग फैक्टर' ह । हम दोसरा दिने अपना आवास पर भोजन के व्यवस्था कइलीं– उहे मछरी–दाल–भात । साथे तीन गो परहेजियो लोग रहे एके टेबुल पर । बेटी इन्दु एगो परहेजी का सोझा मछरी के पलेट–कटोरा धर दिहली आ ओह सज्जन के टोकला पर ऊ उठावते रही कि बगल में बइठल एगो खनिहार रोक दिहले– आ गइल बा त अब रसोई में वापस ना, पेटे में जाई । इहो हमरे ह आ सभे मुस्किया देल । जमशेदपुर से पटना लवट के कपिल जी अपना 27–6–99 के पत्र में लिखलीं –"प्रिय भाई, परिषद् के समारोह आ रउरा सभे के सत्संग के मधुर स्मृति लिहले हम 21–6–99 के साँझ खा पटना पहुँच गइलीं । एह यात्रा के दौरान रउरा सभे के जे प्रेम आ आत्मीयता मिलल, ऊ जिन्दगी भर इयाद रही, आउर आज के बिसइल माहौल में जीये के हिम्मत देत रही । .....जगन्नाथ जी के..... कविता–पत्रिका खातिर आ सम्मेलन पत्रिका खातिर राउर कुछ नवगीत चाहीं .....लिख के भेज के कृतार्थ करीं ।" हमरा हाथ के लिखन आपन अभिनन्दन–पत्र उहाँ अपना आँख के सोझा राखत रहीं ।

15–10–2011 के सम्मेलन–संचालन समिति के बइठक सम्मेलन कार्यालय, पटना में जमशेदपुर में निर्धारित 24वाँ अधिवेशन के

www.bhojpurisahityangan.com

तइयारी–समीक्षा खातिर भइल रहे । बइठक के बाद हम, जयबहादुर सिंह आ अरविद विद्रोही कपिल जी से मिले खातिर उनका आवास पर गइलीं । उहाँ के आपन सद्यः प्रकाशित संदर्भ–ग्रंथ विविधा के एक प्रति हमरा खातिर रखले रहीं । एह तीनो मूरत के देख के उहाँ के संकोच में पर गइलीं आ 'परिषद् खातिर' लिख के हमरा हाथ में धरा दिहलीं । एकरा के हमार आपन व्यक्तिगत प्रति माने में हमरा कवनो हिचक–संकोच ना भइल आ एह ग्रंथ के सदुपयोग हम अनेक जगह कइले बानीं । एह अनमोल ग्रंथ के बारे में भगवती प्रसाद द्विवेदी जी लिखले बानी– ''..... 'विविधा' एगो अइसन ऐतिहासिक दस्तावेज बा, जवन भोजपुरी पत्रकारिता के दशा–दिशा पर रोशनी डाले के दिसाईं अखियान करे पर अलचार करत बा । साथ ही भोजपुरी पत्रकारिता पर शोध करे वालन खातिर ई संदर्भ–ग्रंथ के भूमिको निबाहत बा । उमेद बा, भोजपुरी हलका के जरत–बरत मुद्दन, साहित्य–संस्कृति आ सामाजिक चेतना के अनछुअल अउर जरूरी बिन्दुअन पर केन्द्रित सारगर्भित विचारन के ई बेबाक संग्रह 'सुरसरि सम सबकर हित होई' लेखा उपयोगी साबित होई । ई नीर–क्षीर विवेक के जियतार ऐनक बा ।'' एह ग्रंथ पर शम्भुशरण सिन्हा जी लिखत बानी– ''.....ई किताब भोजपुरी आन्दोलन में संघर्षरत योद्धा लोग के ओह नायक के जुझारू व्यक्तित्व आ उत्कट जिजीविषा के सबूत (बा) जे अपना समकालीन हिन्दी गीतन के सर्वोच्च शिखर के छू लेलो के बावजूद एक झटका के साथ दृढ़ संकल्पित हो के तन–मन–धन से सकल परिवार, परिजन आ बड़हन मित्र–मंडली का साथ भोजपुरी लेखन के क्षेत्र में उतर आइल आ का गीत, का गजल, का दोहा आ का हाइकु सब में ईर्ष्य ऊँचाई पा लेल आ ओहू पर भोजपुरी माटी के महक से मह–मह करत आपन कालजयी उपन्यास 'फुलसुंघी' के रचना कइलक । ई किताब, जवना में एह पूरा अवधि के साहित्यिक धड़कन आ हलचल, भोजपुरी रचना ओकर साहित्य के भरे खातिर लेखकीय आकुलता, भोजपुरी के मानकीकरण, भोजपुरी अकादमी के गलत भाषा–नीति के प्रबल आ साहसपूर्ण विरोध आ उठा–पटक से भरल सम्पूर्ण ऐतिहासिक गाथा बा ।''

17–9–1985 के हरिशंकर वर्मा जी के नाम लिखल अपना पोस्टकार्ड में कपिल जी उहाँ से 20–9–85 के अपना आवास, 2 ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना में आयोजित सम्मेलन–कार्यकारिणी आ प्रवर समिति के बइठक में अनिवार्य रूप से शामिल होखे के अनुरोध कइले रहीं । वर्मा

www.bhojpurisahityangan.com

जी त ना आ सकलीं, बाकिर उहाँ के आपन प्रतिनिधि रूप में हमरा के निर्भीक जी के साथे भेजलीं, जवन कि हमरा के पाण्डेय कपिल जी के निकटतर बनवलस । 6–2–1992 के उहाँ के पोस्टकार्ड के माध्यम से भेजल ओरहनो द्रष्टव्य बा । अपेक्षा त ओकरे से नू होखेला, जेकरा से अपनइती हो ! "....रउआ हमरा चिट्ठी के कुछ जबाब ना देलीं । काहे ? हम रउआ के पत्रिका के एगो डिजाइन बना देबे के लिखले रहीं, कुछ ग्राहक आ सम्मेलन–सदस्य बनावे के लिखले रहीं, पत्रिका प्रकाशन खातिर एक अंक के वित्त–सहयोग करे के निवेदन कइले रहीं, कुछ रचना भेजे के अरज लगवले रहीं, महीना दिन से ऊपर हो गइल चिट्ठी भेजला । राउर 'हाँ–ना' कुछ उत्तर ना आइल । रउआ हमार चिट्ठी मिलल बा कि ना ? मिलल होखे त उत्तर देब कि हमार कवन अपेक्षा रउआ मंजूर कइलीं, कवन ना कइलीं..... 7–8 मार्च के छपरा में सम्मेलन के बारहवाँ अधिवेशन में त भेंट होइबे करी, उमेद करत बानी । चिट्ठी लिखीं..... ।" अब हम अपना काहिली के का कहीं, सभतर सामरथी रहलो पर हम ई कुल्हि अपेक्षा तब शायद पूरा ना कर सकल रहलीं, जेकर मलाल रहल ।

फिर उहाँ के अपना 17–10–96 के पत्र में लिखलीं– ".....ग्राम विकास केन्द्र के विज्ञापन अक्टूबर 96 के अंक में प्रकाशित हो गइल बा । अंक के दू प्रति ग्राम विकास केन्द्र..... के पता पर रजिस्टर्ड डाक से भेज रहल बानी । राउर अइसने निर्देश रहे । ....पता क के पेमेंट भेजवावे के कृपा करब....।" एही संदर्भ में अपना 18–12–96 के पोस्टकार्ड में लिखलीं– ".....राउर 13–12–96 के चिट्ठी आ ग्राम विकास केन्द्र के विज्ञापन शुल्क के एक हजार रूपया के ड्राफ्ट मिलल । पत्रिका के वित्त–पोषण खातिर रउआ सोचत बानी, जान के खुशी भइल । .... मनोकामना अजय के लघुकथा मिलल बा । लघुकथा अंक के मैटर प्रेस में दिया गइल बा । लुकार खातिर हमार रचना मिल गइल बा, जान के प्रसन्नता भइल । कुछ नवगीत लिखा जाय त आगे खातिर भेजे के कृपा करब । उमेद बा जे सपरिवार सानंद होखब.....।" आउर एह विनम्रता के जोड़ कहाँ बा ? 15–4–97 के चिट्ठी के देखीं– ".....रउआ से फोन पर बात भइला के दस मिनट बादे ई चिट्ठी लिख रहल बानी । श्री जय बहादुर सिंह के पता सम्मेलन रेकार्ड में अबहियो गलत रह गइल ह । उनकर पुरनके पता फिर लिखा गइल रहल ह। अबगे देखलीं ह त करेक्शन कर देलीं । .....अपना गलती पर हम लज्जित बानी.....।"

www.bhojpurisahityangan.com

21–4–97 के चिट्ठी में उहाँ के लिखलीं– ".....राउर 16–4–97 के चिट्ठी एगो नवगीत आ 1500/–रु0 के चेक मिलल । धन्यवाद ! राउर आ जयबहादुर सिंह के अलग–अलग रसीद पत्रिका के अगिला अंक में डाल के भेजब । राउर नवगीत पसंद आइल । अगिला अंक (जून–97) में छपी । कुछ आउर रचना भेजत–भेजवावत रहीं, इहे निहोरा बा.....।"

एकरा बाद फोन के सुविधा होखे से चिठिऑव–पतिऑव कम हो गइल, बाकिर संबंध–सम्पर्क अटूट रहल । अपना 21–6–2010 के पत्र में उहाँ के लिखलीं– ".....प्रिय अरुण जी, 'अंगना महुआ झरल' पहिले दू बेर पढ़लीं । ओकरा बाद सत्यनारायण के लिखल भूमिका पढ़लीं, आ तब फेर दू बेर पढ़लीं आ रचना के आनन्द उठवलीं । राउर काव्य–विवेक के पड़ताल सत्यनारायण भूमिका स्वरूप कइले बाड़े, ऊ राउर कविता के रस लेबे में बहुत सहायक भइल । ....."अंगना महुआ झरल' में राउर कलम अपना पिछिला अवदान से कहीं आगे चल रहल बा । भगवान रउरा रचना–क्रम के अइसहीं परवान चढ़ावत रहस.....।"

पाण्डेय कपिल जी साबित कर दिहलीं कि व्यक्ति पद से ना, प्रतिभा से पहचानल जाला । 1973 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना में सक्रिय भूमिका निभावेवाला कपिल जी आपन हिन्दी–रचना–क्षेत्र के पूरा पूरी तज दिहलीं आ भोजपुरिये नीनि जागत–सूतत रहलीं । सम्मेलन से हटला का बादो अंत–अंत तक भोजपुरिये के आगी–काठी जरत–बरत जीयत रहलीं । उहाँ के पूरा कुनबा साहित्य–कला प्रतिभा के सोनहुला खान ह । भोजपुरी के कवन अइसन विधा बा, जवना में पाण्डेय कपिल जी के गहिरा पैठ–पकड़–समझ ना रहे ? परिवारवाद–जातिवाद के त अछरंगे बाहियात–फिजूल । उहाँ के सब के बान्ह के चले में विश्वास करत रहीं, बाकिर अपनहीं बन्हा ना सकलीं जिनिगी से । साँच कहल जाय त इहाँ के कबो भूतपूर्व ना, हरमेसे अभूतपूर्व बनल रहलीं । एह अभूतपूर्व सिरजन–दूत के इयाद के हमार कोटिशः नमन !

–21–बी, रोड–1, जोन–4, बिरसानगर, जमशेदपुर–831019, मोः 9234872041

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



जिनिगी के जीयल हऽ बड़की लड़ाई

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी साहित्य के गौरव–स्तम्भ आचार्य पाण्डेय कपिल अ हमनीं का बीचे ना रहलीं । 02 नवम्बर, 2017 (बियफे) के साँझि खा 4 बजिके 10 मिनट पर बजे उहाँ के प्राणान्त हो गइल । हम चार बजे उहाँ के घर में दाखिल भइल रहलीं आ हमरा सोझे उहाँ के आखिरी साँस लेले रहनीं । हालाँकि ऊ छन मर्माहत करेवाला रहे, बाकिर उहाँ के मुखमण्डल पर आत्मीय सुकून आ चिरशान्ति झलकत रहे । ताजिनिगी भोजपुरिया समाज के जगावत रहेवाला शख्स खुदे हरदम–हरदम खातिर सूति गइल रहे ।

24 सितम्बर, 1930 के बिहार के सारन जिला के शीतलपुर गाँव में जनमल पाण्डेय कपिल के साहित्यिक संस्कार विरासत में मिलल रहे । उहाँ के बाबा दामोदर सहाय 'कवि किंकर' अपना जबाना के नामी कवि रहलन आ बाल साहित्य में उन्हुका अवदान के खास तौर से रेघरियावल जाला । बाबूजी पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह ग्राम्य चेतना के जियतार कथा शिल्पी रहलन आ उन्हुकर कहानी 'गुरुदक्षिणा', उपन्यास 'घर, टोला, गाँव' अपना समय में चर्चित भइल रहे । घर में एगो विशाल पुस्तकालय रहे, जवना में हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, भोजपुरी, अंगरेजी भाषा के

www.bhojpurisahityangan.com

दुर्लभ किताब आ पत्र–पत्रिका जोगाके राखल गइल रहली स । बालक कपिल के मन पुस्तकालय के बालपत्रिकन में खूब रमत रहे, नतीजतन लरिकाइएँ से बालरचनन के लेखन आ प्रकाशन शुरू हो गइल रहे । शुरुआती पढ़ाई–लिखाई गाँवें में भइल रहे । आगा चलिके काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक आ बिहार विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर के उपाधि हासिल कऽके बिहार सरकार के राजभाषा विभाग में बतौर सहायक अनुवादक सरकारी सेवा शुरू कइले रहनीं, जहवाँ से उपनिदेशक के पद से सेवानिवृत्त भइल रहनीं ।

पटना में आवते पाण्डेय कपिल के रचनाशीलता के पाँखि लागि गइल रहे आ ओह घरी के अत्यंत लोकप्रिय कवि ब्रजकिशोर नारायण के अगुवाई में स्थापित साहित्यिक संस्था 'निराला परिषद्' से उन्हुकर अतरंग जुड़ाव हो गइल रहे । गीतकार रामगोपाल 'रुद्र' संस्था के अग्रणी कवियन में रहलन आ आगा चलिके गोपीवल्लभ सहाय, सत्यनारायण, आलोक धन्वा वगैरह महत्वपूर्ण कवि 'निराला परिषद्' से जुड़त चलि गइलन । ओह घरी ब्रजकिशोर नारायण के अध्यक्षता में सूबा के कोना–कोना में आ सूबा के बाहर खूब कवि–सम्मेलन होत रहे आ नारायण जी के दुलरुआ पाण्डेय कपिल के ओह सभ में बढ़ि–चढ़ि के भागीदारी होत रहे । ओही घरी 1952 में उन्हुकर कविता–संग्रह 'आभास' प्रकाशित होके चर्चित भइल रहे ।

बाकिर आगा चलिके पाण्डेय कपिल एह जमीनी हकीकत के अखियान कइलन कि हिन्दी में त सिरिजनशीलन के लमहर फेहरिस्त बा । एकरा से उलट, महतारी भाषा में संगठनात्मक आ सर्जनात्मक स्तर पर मजबूती से काम करेवालन के नितान्त अभाव बा । एह से अइसना समय में, जब उन्हुकर पहिचान हिन्दी कवि का रूप में बनि चुकल रहे, ऊ भोजपुरी आ सिरिफ भोजपुरी में आजीवन सिरिजनशील रहे के संकलप लिहलन आ मरते दम तक ओकर निर्बाहो कइलन । फेरु त बिहार का सँगहीं सउँसे देश के तमाम भोजपुरी रचनाकारन आ भोजपुरी प्रेमियन के जोड़िके अखिल भारतीय स्तर के साहित्यिक संस्था 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के स्थापना भइल आ हर साल एकर राष्ट्रीय अधिवेशन पटना, इलाहाबाद, देवरिया, गाजीपुर, बिलासपुर, रायपुर, राँची, जमशेदपुर, बोकारो, छपरा, एकमा, मुबारकपुर, कोलकाता, दिल्ली, सासाराम, आरा वगैरह अनगिनत शहरन में मुकम्मल भव्यता आउर साहित्यिक गरिमा का सँगें आयोजित भइलन स । आचार्य हजारी प्रसाद

www.bhojpurisahityangan.com

द्विवेदी, केदारनाथ सिंह, भगवतशरण उपाध्याय, उदयनारायण तिवारी, शुकदेव सिंह, ईश्वरचंद्र सिन्हा, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. विवेकी राय, मोती बी.ए., भोलानाथ गहमरी नियर नामचीन हस्तियन का साथे आचार्य पाण्डेय कपिलो जी सम्मेलन के अध्यक्ष रहलन । भोजपुरी के सरकारी स्तर पर मान्यता खातिर मए रचनिहारन के सँगें लेके ऊ लमहर समय ले संघर्ष कइलन, जवना कारन से सरकार के 1975 में भोजपुरी अकादमी के स्थापना करे खातिर मजबूर होखेके परल रहे ।

शुरुआती दौर में भोजपुरी के उम्दा रचनाशीलता के प्रकाश में ले आवे का गरज से कपिल जी व्यक्तिगत स्तर पर एगो जियतार पत्रिका 'उरेह' के प्रकाशन शुरू कइले रहनीं आ रचना–आमत्रण के सिलसिला में जब उहाँ के पोस्टकार्ड एगो कहानी के माँग का साथे मिलल रहे, तब हम उहाँ के तत्कालीन सरकारी आवास 2, ईस्ट गार्डिनर रोड में जा पहुँचल रहलीं । उहवाँ पहिलकिए बेर में उहाँ के आत्मीय नेह–छोह पाके हम अभिभूत हो गइल रहलीं । उहँवें बाबूजी पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंहो जी के दर्शन भइल रहे । आगा चलिके उहाँ के स्मृति के कथा सम्मानो हमरा मिलल रहे । सम्मेलन के पहिले तिमाही आ बाद में मासिक मुखपत्र 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के लमहर समय ले पाण्डेय कपिलजी संपादन कऽके राष्ट्रीय पहिचान दियववले रहनीं आ अपना संपादन में पत्रिका के संदर्भ विशेषांको छपले रहनीं, जवना में शोधार्थियन खातिर हरेक अंक में छपल विधावार रचनन के ब्यौरा रहे । हमरो के उहाँ के संपादक मंडल में शामिल कऽके समय–समय पर विभिन्न साहित्यिक–सांस्कृतिक मसलन पर 'कथनी संपादक के' स्तम्भ में तीसेक संपादकीय अग्रलेख लिखववले रहनीं, जवन उहाँ के संपादकीय अग्रलेखन के संग्रह 'विविधा' में संकलित बाड़े स– किछु नाँव का सँगें आ किछु अनाम । कई गो नवही साहित्यकारन के निरमान में उहाँ के यादगार भूमिका रहे, बाकिर उन्हनिएँ में से किछु एहसान फरामोश भस्मासुर उहें के खिलाफ अभियान छेड़े में कवनो कोर–कसर ना छोड़ले रहलन । उहाँ के त चुपचाप 'नीलकंठ विषपायी' बनिके हलाहल पीयल उचित बुझले रहनीं । अपना भोजपुरी संस्थान आ ग्रंथरत्नम् प्रकाशन से भोजपुरी–हिन्दी के सैकड़न किताबन के छापिके आ ग्रंथमाला के संपादन कऽके उहाँ के इतिहास रचले रहनीं ।

कपिल जी साहित्य रचते भर ना रहनीं, बलुक उहाँ के सतासी बरिस के आखिरी साँस ले साहित्य के भरपूर जियतो रहनीं । उहाँ के

www.bhojpurisahityangan.com

उपन्यास 'फुलसुंघी' भोजपुरी के कालजयी कृति साबित हो चुकल बा । ओह क्लॉसिक उपन्यास में ऐतिहासिक चरित्र महेन्द्र मिसिर आ ढेलाबाई के अशरीरी प्रेमकथा के उहाँ के काव्यात्मक आ कलात्मक ऊँचाई देले रहनीं । उहाँ के गीत–संग्रह 'भोर हो गइल' जहवाँ चरचा का केन्द्र में रहल, उहँवें ग़ज़ल–संग्रह 'कह ना सकलीं' आ 'परिन्दा उड़ान पर' के अभूतपूर्व कामयाबी मिलल रहे । अपना बेशकीमती दोहन के संग्रह के पाण्डुलिपि तैयार कऽके उहाँ के हमरा लगे भेजि देले रहनीं, एगो चिट्ठी लगाके कि हम ओकर भूमिका लिखि दीं । हम संकोच करत रहलीं, बाकिर उहाँ के आदेश के अवहेलना कइल कतई सम्भव ना रहे । एह से दोहा–संग्रह 'जीभ बेचारी का कही' के प्राक्कथन हम 'कलम बेचारी का लिखी' शीर्षक से लिखले रहलीं । फेरु त बाद के तमाम संग्रह 'दुनिया के शतरंज बिछल बा' (चयनित कविता–संग्रह), 'कृष्णार्जुन संवाद' (श्रीमद्भगवद्गीता के भोजपुरी अनूदित कृति), 'दुर्गाशप्तसती' के भूमिको लिखे के परल रहे । अंतिम समय में उहाँ के एगो हाइकु–संग्रह के डायरियो भेजववले रहनीं । एगो देहा–संग्रह निधन के एके हफ्ता पहिले छपि के आइल रहे । सम्मेलन के बैनर से उहाँ के कहानी, गीत, हाइकु, लघुकथा, दोहा विधन पर केन्द्रित पत्रिका के विशेषांक आ फेरु अविस्मरणीय संकलन संपादित कइले रहनीं । गीत संकलन 'धार के खिलाफ' आ दोहा संकलन 'भोजपुरी सतसई' के संपादन के जिम्मा उहाँके हमरे के दे देले रहनीं । उहाँ के बेरि–बेरि हमरा पर भरोसा कइनीं आ हमहूँ उहाँ के बिसवास पर खरा उतरे के हरसम्भव कोशिश कइले रहलीं । उहाँ के ना रहला पर हम आपन सबसे विश्वसनीय आ सम्माननीय अभिभावक गँवा चुकल बानीं ।

अनुभव–अनुभूति के आँच में पगल पाण्डेय कपिल जी के कालजयी कृति समकालीन युगधर्म के ऐनक बाड़ी स। उहाँ के अनुभवजनित जिनिगी के सच्चाई रहे :

'सोच बहुते उठान पर बाटे
उम्र जब से ढलान पर बाटे ।'

आजु हुनरमंद बेबस मनई के डेगे–डेग कइसन–कइसन समझौता करे के परि रहल बा, ओकर एगो मरमभेदी नमूना देखीं :

'हाय, मन मार के रहे के परल
जिन्दगी में बहुत सहे के परल
जे ना रहे गोड़ के धोवन हमरा

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरो पापी चरन गहे के परल ।'

वार्धक्य जीवन में मरद–मेहरारू (पति–पत्नी) के संग–साथ जहवाँ सुख के एहसास करावेला, उहँवे एगो के ना रहला पर दोसरका के मर्मांतक पीर असह वेदना–कचोट से भरि देला :

'बूढ़ा–बूढ़ी हमनी दूनों परानी जी
अपना गिरही में हमनी खुश बानीं जी
नइखीं जानत जे दोसर के का होई
जब एगो मउवत के चद्दर तानी जी !'

बाकिर उहाँ के एकर जवाबो दे देले बानीं– जिनिगी के जीवंतता से जीए आ जूझे के बात कहिके :

'जिनिगी के जीयल हऽ बड़की लड़ाई
डेगे–डेग होखेला पहाड़ के चढ़ाई
मिले जब घात पर घात, केहू जूझत नइखे
का कहीं मन के बात, केहू बूझत नइखे ।'

आजु के तथाकथित व्यस्त मनई से उहाँ के उलाहना के सुर में व्यंग करत साफ–साफ कहले रहनीं :

'अइसन कतना बाझ बा, अइसन कतना काम
अइसन का नाराजगी, छूटल दुआ–सलाम !'

सहजता उहाँ के खासियत रहे, जवन लमहर कठोर साधना से हासिल भइल रहे । एही से उहाँ के कहनाम रहे :

'सहज बनल बहुते कठिन, कठिन बनल आसान
कठिन साधना से मिले, सहज बने के ज्ञान ।'

ओइसन तपल–तपावल साधक, सहज–सरल महान रचनाकार आ जियतार नेह–छोह बरिसावत इंसान खातिर हमार प्रणामांजलि !

–शकुंतला भवन, सीताशरण लेन,
मीठापुर, पोस्ट बॉक्स 115,
पटना–800 001 (बिहार)
मो0: 09430600958, 9304693031
ई–मेल : dubeybhagwati123@gmail.com

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी साहित्य में पाण्डेय कपिल के योगदान

—डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित'

सबसे पहिले भोजपुरी के खोज–खबर करेवालन में जॉर्ज ग्रियर्सन के नाम लिआई । हेनरी कॉल बुक, जॉर्ज बिम्स आदि अंगरेजे लोग एह भाषा के पहिल व्याकरण लिखनिहार रहन । भारतीय में महापंडित राहुल सांकृत्यायन दिसम्बर 1947 में गोपालगंज के दोसरका 'अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन' के अध्यक्षता करत भिखारी ठाकुर के 'अनगढ़ हीरा' आ सरकार से अलग भोजपुरी राज्य के मांग का रूप में एकर चिन्ता कइले रहस ।

बात छिड़ गइल बा त बतावल चली कि भोजपुरी के संगठनात्मक आन्दोलन के शुरुआत 'अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन' बनाके सबसे पहिले सीवान, 1947 में पहिल अधिवेशन श्री बलदेव उपाध्याय के अध्यक्षता में कइलक । बलदेव उपाध्याय लोकसाहित्य में काम करेवाला डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के बड़ भाई रहीं । करबदाज रहीं– संतकुमार वर्मा, अक्षयवर दीक्षित, कुलदीप नारायण 'झड़प' आ आचार्य महेन्द्र शास्त्री । ई हिन्दी सम्मेलन का साथे शुरू भइल रहे ।

आगे चल के एह भाषा के विकास में जे अगुआ भूमिका कवनो संस्था बनाके एह में शोध कके, कवनो पत्रिका भा किताब प्रकाशित कराके बड़ पैमाना पर निभवलक, ओह में रहीं– डॉ. उदय नारायण तिवारी, 'भोजपुरी संसद' बनाके, 'भोजपुरी कहानियाँ' निकालेवाला डॉ. स्वामीनाथ सिंह, 'भोजपुरी' नाम से पहिल पत्रिका के सम्पादक आचार्य

www.bhojpurisahityangan.com

महेन्द्र शास्त्री, एके लेके आगे–आगे भोजपुरी के झंडा फहरावेवाला रघुवंश नारायण सिंह, 'अँजोर' जइसन शोध परक पत्रिका निकालेवाला पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय आ भोजपुरी के लोक साहित्य पर लिखेवाला पं. गणेश चौबे ।

2 नवम्बर 2017 के स्वर्गीय भइल पाण्डेय कपिल जी के नाम एही कड़ी में आदर का साथे लेवे के होई, जे ना खाली अलग–अलग जगहा में भोजपुरी में काम करेवालन के तार आपुस में जोड़लीं, बल्कि भोजपुरी संगठनन में जे बिखराव रहे, ओके अनुशासनिबद्ध करत ऐतिहासिक आ गौरवपूर्ण दिशा देलीं ।

कपिल जी से क्षुब्ध उनका समानान्तर पटना में रासबिहारी पाण्डेय आ शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी के कोसिसो उल्लेखनीय कहाई । काहें कि एह में पहिल 'अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन' के महामंत्री–पद से कुछ आउर बिहार के लोकभाषाअन साथे भोजपुरी के जोड़ के आगे बढ़ावे के उतजोग कइले त दोसर, तब के कांग्रेसी केन्द्रीय रेलमंत्री केदारनाथ पांडेय के राजनीतिक सहयोग से 1975 ई. में 'बिहार भोजपुरी अकादमी' बनवावे में सफलता पवलें ।

हम इहाँ जान–बूझ के भिखारी ठाकुर, महेन्दर मिसिर आ दोसर–तीसर रचनाकारन के चर्चा नइखीं करत, जेकर अवदान भुलाइल ना जा सके, बाकी हमरा समुझ से भोजपुरी के साहित्यिक आन्दोलन आ संगठन लेके पाण्डेय कपिल जी एह विकास–सड़क के आखरी आ महत्वपूर्ण खम्भा रहीं, जेके 'माइल स्टोन' कहाला आ अब जइसे योग्य अभिभावक का अभाव में कवनो परिवार बिखर जाला, भोजपुरी के बॅचल संस्थन के कमोवेश ओइसने हालत जनाता ।

एतना भूमिका हमरा एह से बान्हे के पड़ल ह कि नइकी पीढ़ी जानकारी के अभाव में भोजपुरी–आन्दोलन के शुरुआत पाण्डेय कपिले जी से माने लागेला ।

आईं, अब तनीं स्व. कपिल जी के जीवन, परिवेश, व्यक्तित्व आ कृतित्व से परिचित होईंजा । पाण्डेय कपिल जी के जनम बिहार में सारण जिला के एकमा–माँझी लगे सीतलपुर बरेजा में 24 सितम्बर 1930 ई. के भइल रहे। परिवार में पहिले से साहित्यिक वातावरण रहे आ उहाँ के पितामह दामोदर सहाय 'कविकिंकर', महावीर प्रसाद द्विवेदी–काल में प्रसिद्ध कवि आ बाल–साहित्य के रचनाकार रहीं । कपिल जीके पिता स्व. जगन्नाथ प्रसाद सिंह भोजपुरी के आंचलिक उपन्यास 'घर, टोला

www.bhojpurisahityangan.com

गॉव' आ कुछ कहानी देके एह साहित्यिक परंपरा के आगे बढ़वनीं । तीन भाइयन में जेठ कपिल जी रहीं । शेष भाई पाण्डेय सुरेन्द्र प्रसिद्ध मूर्त्तिकार आ पटना शिल्प महाविद्यालय के प्राचार्य रहत 'ई हरनाकुस मन' जइसन भोजपुरी के किताब देके नई कविता के प्रवर्त्तक कहइलीं त सबसे छोट पी. चन्द्रविनोद के भोजपुरी के गीतकार आ कहानीकार का रूप में प्रसिद्धी बा । पाण्डेय कपिलजी के घरे हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी के एगो संपन्न पुस्तकालय रहे, फेर कविकिंकर जी से मिले–जुलेवाला साहित्यकारन के निकट सम्पर्क गुने उनको बचपने में कविता लिखेके अँखुआ फूटे लागल ।

शुरू के पढ़ाई त गॉव में भइल, बी.ए. स्वनामधन्य संस्था काशी विश्वविद्यालय, बनारस से आ एम.ए. (हिन्दी) बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से । वइसे गजल–संग्रह 'समय के राग' (सम्पादक–जगन्नाथ) के उनका परिचय में स्नातकोतरो डिग्री बी.एच.यू. से ही लिहल बतावल गइल बा ।

बात चाहे जे होय, बिहार सरकार के राजभाषा विभाग में सहायक अनुवादक से उपनिदेशक पद तक के नोकरी के दौरान सेवो–काल में उनका हिन्दी, उर्दू, मैथिली, भोजपुरी, संस्कृत आ अंग्रेजी साहित्यकारन से लगाव के सौभाग्य मिलल, जेकर फल रहे उनका खुद के साहित्यकार बनल आ हिन्दी–भोजपुरी के संगठनात्मक आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिहल ।

1952 में उहॉ के हिन्दी कविता–संग्रह 'आभास' के प्रकाशन भइल, बाकी एह व्यक्तिगत कृति के अलावे तबके दबंग कवि आ संगठनकर्त्ता ब्रजकिशोर नारायण के नेतृत्व में 'निराला परिषद्' से जुड़के उनका में मंचीय कवि व्यक्तित्व के विकास भइल । एह परिषद् में छायावादोत्तर काल के वयोवृद्ध कवि रामगोपाल शर्मा 'रूद्र' रहीं, आज के नवगीत आ बिहार–गीत के चर्चित कवि सत्यनारायण, सस्वर कविता पाठ करेवाला गोपीवल्लभ सहाय त पंकज परिमल आदि । कहल जाला कि पाण्डेय कपिल जी, नारायण जी के पटुशिष्य रहीं, जिनकर नेतृत्व–क्षमता, कपिल जी के 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' चलावे में कामे आइल । ऊहे हाबी होय के शैली, सुभाव, कुछ अमनख लगला पर कोहना गइल, सम्मेलन से अलग होय के धमकी देहल, बाकी सम्मेलन के कागत–पत्तर पर काम कइल, रेकर्ड आ हिसाब–किताब सरकारी संस्था लेखा विधिवत् राखल, समय पर प्रस्तुत कइला से लापरवाह भोजपुरियन

www.bhojpurisahityangan.com

के उनकर वर्चस्व सँकारल मजबूरी रहे ।

पहिला बेर एह अखिल भारतीय संगठन में 'साहित्य' शब्द जुडल, फेर सुभावतः एह पर जादे ध्यान दिआए लागल । एह पॉतियन के लेखको के जे थोड़–बहुत भोजपुरी में लिखत पटना आइल रहे, एह साहित्यिकन के निकट सम्पर्क में अइला से लेखन में तेजी से विकास भइल ।

हमरा इयाद बा, केदारनाथ पाण्डेय के छज्जूबाग सरकारी क्वाटर में पहिल बेर संगठन बनावे खातिर भोजपुरी साहित्यकारन के लमहर जुटान भइल रहे, जवना में ना खाली 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के नींव पड़ल, बलुक आचार्य महेन्द्र शास्त्री के प्रस्ताव आ बकिये लोग के समर्थन से पाण्डेय कपिल जी महामंत्री बनावल गइलीं । कांग्रेस के कार्यकर्त्ता रहल रघुवंश बाबू ई कहत सभा से बहिष्कार कइलीं कि –'चललन रघुवंश अब इहॉ से ।' असल में रघुवंश बाबू के मत रहे कि भोजपुरी के एगो जन–संगठन के रूप देहल जाव । एक–एक भोजपुरिया से सम्पर्क के कोसिस होय, एक–एक रुपया चंदा लेके उन्हन के एह आंदोलन से जोड़ल जाव । एह से आर्थिक आ सांगठनिक दूनों मजबूती भोजपुरी में आई ।

ओने जल्दीए कपिल जी अपना सरकारी आवास '2, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना' में सम्मेलन के कार्यालय खोल दिहलीं । साहित्यकारन के आना–जाना शुरू हो गइल । एगो सम्मेलन के मुख पत्र 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' उनके सम्पादन में निकले लागल । सम्मेलन के संविधान बनल, शुल्क लेके सदस्य बनावल जाए लगलन आ निर्धारित समय पर लोगन के नेवता पाके अलग–अलग जगहा पर नामी–गिरामी साहित्यकारन के अध्यक्षता में एकर अधिवेशन धूमधाम से होय लागल ।

पहिल अधिवेशन त 1975 में डॉ. उदयनारायण तिवारी के अध्यक्षता में प्रयाग में भइल, बाकी बाद में हजारी प्रसाद द्विवेदी, भागवत शरण उपाध्याय, शुकदेव सिंह, विद्यानिवास मिश्र, देवेन्द्रनाथ शर्मा होते ई आज के हिन्दी–कवि केदारनाथ सिंह तक आके विवाद के विषय बनत गइल । काहें कि एह में हिन्दी के ग्लेमराइज्ड कइल गइल आ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, आचार्य महेन्द्रशास्त्री, रघुवंश नारायण सिंह, रामेश्वर सिंह काश्यप जइसन महत्त्वपूर्ण भोजपुरिया व्यक्तित्वन के उपेक्षा भइल । ई एक तरह से साहित्यकारन के आभिजात्य संगठन बन के रह गइल । भोजपुरी के विकास साहित्य लेखन का दिसाईं त खूब भइल, बाकिर ई

www.bhojpurisahityangan.com

एकांगी विकास कहाई, काहें कि साधारण भोजपुरी भाषा–भाषी एह से दूर रहलन ।

कपिल जी के खुद के 'भोर हो गइल' गीत–संग्रह आ 'कह ना सकलीं', 'परिन्दा उड़ान पर' गजल–संग्रह भोजपुरी में आइल । आखिरी समय में 'साँस चलत जबले रहे' दोहो के संग्रह प्रकाशित होय के खबर बा । बीच में कहानी कहके 'बिसनाथ बो भउजी' रेखाचित्र आ सर्वाधिक भोजपुरी के लोकप्रिय उपन्यास 'फुलसुंघी' भी भोजपुरी में उनका कलम के अवदान बा। एकरा अलावे 'उरेह' नाम से आपन निजी पत्रिका का माध्यम से आ 'सम्मेलन पत्रिका' के हाइकू, दोहा आदि विशेषांक निकाल के, फेर अलग से संस्था के प्रकाशन का रूप में प्रतिनिधि कहानी आ निबंध–संग्रह से उहाँ के भोजपुरी के सेवा कइले बानीं । बाकिर एह से जादे महत्त्वपूर्ण काम भइल बाटे, लेखकन के विभिन्न् विधा पर लिखवावल, ओकर प्रकाशन, नया लेखकन के प्रोत्साहन, उनका किताब के भूमिका लिखल आ लम्बा अर्सा तक पत्रिका के सम्पादकीय लिखत रहल । एह सब रूप में उहाँ भरसक भोजपुरी के भरपूर देवे से बाज ना अइलीं ।

एह सब खातिर उनका राजभाषा विभाग से 'भिखारी ठाकुर पुरस्कार' आ 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' से 'सेतु पुरस्कार' देके सम्मानित कइल गइल, बाकिर ऊ अकेला होत गइलन । उनकर कौकस लोग आपन–आपन मतलब सधा के उनका से अलग हो गइलन । सम्मेलन के सूत्र उनका हाथ से छूट के गुट, जातिवाद के राह पर घूमत आज पइसा से जुड़ गइल बा । उनका कहे के पड़ल–

'बात मन से उतर गइल बाटे
जिंदगी अब ठहर गइल बाटे
कइसे पंछी भला उड़ान भरो
पाँख केहू कुतर गइल बाटे ।'

अइसन में जब कपिल जी सदेह नइखीं, उनकर भोजपुरी के बढ़ंती में कइल मेहनत, दृष्टि, त्याग आ साहित्य–सृजन कर–करा के भोजपुरी के भंडार भरे के उतजोग से इंकार ना कइल जा सके । आवेवाला दिनन में उनका कामन के बारंबार चर्चा होई आ ऊ अमर रहिहन..... ।

–न्यू अजीमाबाद कॉलोनी,
पोस्ट–महेन्द्रू, पटना–800 006

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



बेवहार–कुशल पांडेय कपिल जी से हमार लगाव

–डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

1977–78 में नौकरी में अइला के बाद भोजपुरी परिवार, पतरातू थरमल पावर के जरिये भोजपुरी खातिर सक्रिय भइला के पहिले स्कूली जीवन से लेके ओह घरी तक भोजपुरी कवि लोग के सुने के अवसर मिलल रहे । हम प्रभावितो रहीं आ कभी–कभार कलमो चलावे के कोशिश कइले रहीं । ओह घरी हिन्दिए पर धेआन रहे, भोजपुरी पर कम । भोजपुरी परिवार, पतरातू थर्मल पावर के संगे जुड़ला पर भोजपुरी के सस्थागत, संगठनात्मक आन्दोलन के सङही भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन आ मान्यता खातिर कइल जा रहल प्रयास से अवगत होखे के अवसर मिलल रहे । जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद; भोजपुरी संसद, वाराणसी; लोक साहित्य संगम, गया/बिहिया; अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना; भोजपुरी अकादमी, पटना आ बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी साहित्य परिषद्, मुजफ्फरपुर के कार्य–कलाप के बारे में पता चलला के सङे ओह संस्थन के जरिये भोजपुरी खातिर हरविधि सक्रिय बेकतिओ लोग के बारे में हमरा जानकारी मिलल । एही व्यक्तित्वन में एगो रहीं पांडेय कपिल जी, जे ओह घरी के सबसे लमहर संस्था अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मुख्य कर्ता–धर्ता

www.bhojpurisahityangan.com

रही आ रहीं भोजपुरी के केन्द्रीय बेकती ।

ओह घरी भोजपुरी के नाम पर चले वाली संस्था सब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से सम्बद्ध रहत रहे । पतरातू थर्मल पावर के भोजपुरी परिवारो सम्बद्ध रहे । एही से सस्थागत कार्य के क्रम में पत्राचार के जरिए पांडेय कपिल से संपर्क बढ़े लागल । हमरा सक्रियता से सालाना जलसा के अलावहूँ भोजपुरी परिवार, पतरातू के अउर तरह के गतिविधि बढ़ल । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पॉचवॉ अधिवेशन 1980 में मोतिहारी में भइल, हम ओह में संस्था के प्रतिनिधित्व करत भाग लेहनी । हमरा पांडेय कपिल जी के कार्यशैली आ सम्मेलन संचालन के भूमिका निबाहे के तौर तरीका देखे–जाने–सुने–समझे के अवसर मिलल । अक्टूबर, 1982 में अमनौर, सारन में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सातवॉ अधिवेशन में भोजपुरी परिवार के चार–पॉच सदस्यन के साथ हम भाग लेहनी । कपिल जी का लागल कि हमरा सक्रियता से पतरातू के भोजपुरी प्रेमियन में जागरूकता बढ़ल बा । ओकरा पहिले भोजपुरी परिवार के ओर से आयोजित सालाना जलसा के अवसर पर साहित्यकार सम्मान के जवन परम्परा चलावल गइल रहे, ओह में, 1982 में परिवार के तरफ से आयोजित होखेवाला सालाना जलसा में पांडेय कपिल जी के सम्मानित कइल गइल रहे । साहित्यकार लोग के अगुवानी से लेके विदाई तक हमरा के लागल कपिल जी देखले रहीं। एक–दोसरा के बहुत नियरा से जाने आ बातचीत के अवसर भेंटाइल रहे । जब अमनौर अधिवेशन के समाप्ति के बाद हम आयोजन स्थल से चले लगनी, त कपिल जी रोक के कहनी –"ब्रजभूषण जी ! संगठन के आगे बढ़ावे में रउरा अइसन समर्पित जवान लोग के जरूरत बा ।" उहाँ का कहनी कि हमरा सम्मेलन कार्यालय से बराबर संपर्क में रहे के चाहीं । हमरो अच्छा लागल आ उछाह से भरल हम आपन सक्रियता अउर बढ़वलीं ।

भोजपुरी परिवार से हमरा के जोड़ेवाला कवि : श्री विपिन बिहारी चौधरी जी के साथ मिल के पतरातू से सम्मेलन के आजीवन सदस्य के संख्या बढ़वनी । सम्मेलन का आय के स्रोत सदस्यते शुल्क रहे । ओही साल भोजपुरी परिवार, पतरातू के वार्षिकी अउर चौधरी चाचा आ हमार समवेत काव्य–संकलन छपल रहे, जवना के लोकार्पण पांडेय कपिल जी के सान्निध्य में सालाना जलसा के अवसर पर भइल रहे । कपिल जी एह सब बात से खूब प्रसन्न रहीं । उहाँ के अपना साथे हमरा के मजबूती से

www.bhojpurisahityangan.com

संपर्क में बन्हले रहनी । बिलासपुर (मध्यप्रदेश) में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तीन दिवसीय आठवाँ अधिवेशन 1984 के 30–31 दिसम्बर आ 1 जनवरी, 1985 के भइल । एह अवसर पर पतरातू से एक टेकर लोग शामिल भइल । प्रवर–समिति के चुनाव के अवसर पर हम पतरातू भोजपुरी परिवार के सक्रिय सदस्य अनिरुद्ध दूबे जी के नाम प्रस्तावित कइनी, उहाँ का चुनाइओ गइनी । कार्य–समिति में वकील चौधरी के सदस्य रूप में नाम मनोनीत भइल । हालाँकि ई दूनो लोग साहित्यिक ना रहे आ तीसरा आदमी के समिति में गुंजाइश ना रहे; तबहुँओ खुला अधिवेशन में प्रवर समिति आ कार्य समिति के घोषणा के समय हर मत्री के साथ एक–एक उप समिति के घोषणा भइल । ओह में हमार नाम प्रचार उप समिति में रहे ।

बिलासपुर अधिवेशन के अवसर पर पांडेय कपिल जी हमरा के कार्यालयीन काम में लगवले रहनी आ हमरा लगन अउर समर्पण के मान दिहनी । ई उहाँ के अनुभवी दृष्टि रहे, जे हमरा ऊर्जा के सही दिशा में उपयोग कइनी । अतना कम समय में हमरा के लोग जाने–पहचाने के शुरू कर देले रहे । जे ना जानत रहे, ऊ परिचय लेवे–देवे लागल । हमार उछाह बढ़े लागल आ एकर समूचा श्रेय पांडेय कपिल जी के रहे । हम पटना के बइठकन में भागो लिहनी ।

एह बीचे 1984 में हमार बदली कॉटी थर्मल पावर में, मुजफ्फरपुर हो गइल । हमरा खातिर पटना आवाजाही आसान हो गइल । सम्मेलन के कार्यालय आ पांडेय कपिल से सम्पर्क बढ गइल । सम्मेलन के नउवाँ अधिवेशन अक्टूबर, 1985 में राँची में करे के नेवता सम्मेलन का आइल रहे । एह नेवरतिक सम्मेलन के कार्यसमिति आ प्रवर–समिति के बइठक पटना में बोलावल गइल रहे । कार्यसमिति के बइठक खातिर हमरा के विशेष आमंत्रण रहे । हम भाग लिहनी । प्रवर–समिति पंडित गणेश चौबे के नउवाँ अध्यक्ष, मनोनित कइलस । कार्यसमिति के बइठक में कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर बइठक भइल । पांडेय कपिल जी मिटिंग के बाद हमरा के रोक लिहनी । बाद में चौबे जी के नाम से सम्मेलन के पत्र थमावत हमरा के जिम्मा दिहनी कि चौबे जी से अध्यक्ष पद के स्वीकृति पत्र आ अध्यक्षीय भाषण लिखवा के ले आवे के बा ।

कवनो संस्था में कवनो कारन से चाहे बिना कारनो कुछ–ना–कुछ राजनीति प्रवेश कर जाला । हम एह बात के अनुभव करत रहीं कि चौबे जी संस्था से नाराज चल रहल बानी । उहाँ का, संस्था संगठन खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

जवन तदर्थ समिति बनल रहे, ओह में सदस्य रहीं, फाउण्डर मेम्बर । चौबे जी के नाराजगी मतलबो राखत रहे आ दूर कइल जरूरियो रहे । हमरा समझ से चौबे जी का पॉचवे–छठे अध्यक्ष होखे के चाहत रहे, जवन संभव ना हो सकल रहे । चौबे जी से हम जतना नजदीक रहीं, ओतने कपिल जी से । एही से लागत बा कि ई जिम्मेवारी कपिल जी हमरा के सॅउपनी । हम भरल बरसात में बंगरी स्टेशन उतर के पानी हेलत चौबे जी के दुआर पर पहुँचनी । हमरा कुछ सुनहूँ के पड़ल, भोजनो मिलल आ अध्यक्षता के स्वीकृति पत्रो मिलल । फेर हम जाके अध्यक्षीय भाषणो लिखवा के ले अइलीं । कपिल जी एह बात के अनुभवी आ ज्ञानी रहीं कि कवन काम खातिर केकर आ कइसे उपयोग कइल जा सकत बा । राँची अधिवेशन से संबधित सम्मेलन कार्यालय के कामन में हम पटना कपिल जी के सरकारी आवास पर प्रवास कर के सहयोग कइनी । अध्यक्ष जी के ले के हम राँची गइनी आ अधिवेशन स्थल पर कार्यालय के काम में सहयोग कइलीं । एकरा एवज में हमरा के अगिला कार्यकारिणी खातिर संगठन मंत्री बना दिआइल । ओह कार्य–कारिणी के हमरा के छोड़ के बाकी पदधारी लोग हमरा से उमिरदराज रहे । हम सबसे नया रहीं । हमरा समझ से ई कपिल जी के हमरा ऊपर विश्वास रहे ।

हम जब पी–एच.डी. करत रहीं त विषय के चुनाव में पांडेय कपिल जी मदद करबे कइनी, विषय से संबंधित किताबो से सहयोग कइनी । सम्मेलन के गतिविधि में हमार सक्रियता बढ़त गइल । लगातार कई अधिवेशन में उहाँ का हमार जिम्मेवारी बदलत–बढ़ावत गइनी । कार्यकारिणी में हमार भूमिका बदलत रहे, कबहीं प्रचार, कबहीं प्रबंध, कबहीं साहित्य मंत्री के रूप में । लगातार कई अधिवेशन में उहाँ के विषय समिति के जिम्मा हमरा पर छोड़त अइनी । अधिवेशन के अवसर पर दिहल जाए वाला पुरस्कारन के निर्णायक मंडल में हमरा के नामित करावत रहलीं । ई उहाँ के हमरा पर ढेर विश्वास के कारण रहे । भरसक हमहूँ उहाँ के एह विश्वास के कबहीं तूड़लीं ना । हमार कोशिश रहे कि संस्था के साथ समर्पण बनल रह सके । कपिल जी के एह विश्वास के चरम हमरा सम्मेलन के एकमा अधिवेशन के समय बुझाइल । केहू अध्यक्ष रहो, केहू महामंत्री, कार्यालय उहें के चलावे के पड़त रहे । उहाँ का निवर्त्तमान अध्यक्ष के नाते प्रवर समिति के सदस्य रहीं, मगर कार्यालय उहें के आवास पर संचालित होत रहल । उहाँ का तत्कालीन कुछ पदाधिकारियन से क्षुब्ध रहीं आ सम्मेलन के गतिविधि से अपना के

www.bhojpurisahityangan.com

अलग करे के चाहत रहीं । जे जानत रहे कि पांडेय कपिल के सम्मेलन के गतिविधि से अलग भइला पर सम्मेलन के गति धीम पर जाई, ऊ उनका से निहोरा करत रहे कि उहाँ का सक्रिय रहीं । हमहूँ ओह में एक रहीं । सम्मेलन के कार्यकारिणी के एक बइठक से निकलला के बाद पटना के सड़क पर साथे–साथ चलत हम ई विनती कइनी कि जवना तरे सम्मेलन के काम अपने देखत आइल बानी, ओइसहीं देखत रहीं । कपिल जी कहनी कि एक शर्त पर कि ब्रजभूषण जी महामंत्री बनस । हम बड़ा असमंजस में कि का बोलीं । हम अपना के ओइसन ना बूझत रहीं कि महामंत्री बन सकीं । पांडेय कपिल जी एह बात के आपन इच्छा ओह सब लोग से व्यक्त कर चुकल रहीं, जे चाहत रहे कि कपिल जी के सक्रियता बनल रहे । एकमा अधिवेशन में कपिल जी के विरोध आ समर्थन में मामिला गरम रहे । कपिल जी के विरोधी लोग उहाँ पर दबंग लोग के जुटावे तक के आरोप लगावल । विरोध आ समर्थन के रूप स्थायी–समिति के बइठक में खुल के सोझा आइल । बाकिर प्रवर–समिति के चुनाव आ कार्य समिति के गठन में पांडेय कपिल जी के चलल । पांडेय कपिल जी के विशेषता रहे कि उहाँ का अपनो मन के निर्णय सम्मेलन के संवैधानिक प्रक्रिया के तहत ही करवावत रहीं, नियम विरुद्ध जा के ना । हम महामंत्री बननी । कपिल जी के प्रसन्नता देखते बनत रहे । हालाँकि शुरुआत में हमरा कठिनाई भइल । पिछला सत्र के खर्च अनुमोदन आ कार्य अनुमोदन में पिछले महामंत्री अड़ंगा डालत रहस, बाकिर सफल ना हो सकलन ।

भोजपुरी के आयोजन में हम कपिल जी के जहाँ कहीं–केशरिया, काँटी, साहेबगंज नेवतनी, उहाँ का सहर्ष हाजिर होत रहनी आ बढ़ावा देत रहनी । उहाँ का एह क्रम में केतना बेर हमरा काँटी आवास पर अइनी आ रुकबो कइनी । उहाँ के साथे निजी काम से मोतिहारी के जतरो भइल । भोजपुरी लेके जिला सम्मेलन भभुआ, बलिया, गहमर आदि के जतरो भइल । कपिल जी के साथ जतरा सहजे पूरा हो जाए, कबो भारी ना लागत रहे । हमार संबंध पारिवारिक जइसन हो गइल रहे । हम पटना जतरा में कोशिश करीं कि उहाँ से भेंट हो जाय । उहाँ के पत्नी गइला पर पूरा खेयाल राखत रहीं आ बाल–बच्चन से लेके नौकरी, चाकरी तक के हाल–चाल पूछत रहीं । कपिल जी के पारिवारिक पृष्ठभूमि जतना बड़हन रहे, ऊ चाहे जमींदारी होखे, शैक्षिक होखे, पदधारन होखे, मिलनसारी आ खातिरदारी में बड़ा सहजता–सरलता

www.bhojpurisahityangan.com

रहे । फल से लदरल गाछ जइसे भूँई सोहरेला, ठीक ओइसहीं सोभाव पवनी हम कपिल जी के पूरा परिवार के । हमरा के हमरा विभाग में पटना पदस्थापना खातिर उहाँ के पूरा जोर लगवनी आ ओह खातिर डॉ. अशोक कुमार पांडेय जी, आई.ए.एस. आ डॉ. अनिल कुमार पांडेय जी, आई.पी.एस. से केतना बेर मिलनी । सम्मेलन के काम में आसानी से सहयोग मिली, कारण बतवनी । ऊ दूनो लोग के सम्मेलन के साथ सहयोगी भाव रहे, काहे से कि ऊ लोग आचार्य महेन्द्र शास्त्री के भतीजा रहलें । हमार दूगो किताब 'अचके कहा गइल' (गजल–संग्रह) आ 'भोजपुरी काव्य में अलंकार, रस आ छंद' (काव्यशास्त्र) के लोकार्पण पटना में करवावे में कपिल जी के महती भूमिका रहे । गजल–संग्रह हमार बदली के फेरा में आ काव्यशास्त्र लिखवा के एम.ए. के पाठ्यक्रम खातिर उहें के जोर देला पर छपल ।

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' जब जनवरी 1980 से लगातार कपिल जी निकाले लगनी, त कुछुए अंक के बाद हमरा के संपादक मंडल में जोर लेहनी । हमरा मार्फत रचना मंगवावल, विषय देके लिखवावल उहें के वश के बात रहे । हमरा से प्रबंधकाव्य विषयक पुस्तकन के समीक्षा लिखववलीं आ व्यक्तिपरक निबंधों लिखवइली । हमरे से ना, जेकरा से चहलीं, पोस्टकार्ड लिख के रचना माँगत रहीं आ छापत रहीं ।

पत्रिका के जरिये भोजपुरी लेखन के आन्दोलन चलावे के श्रेय कपिल जी के बा । भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के विशेषांक सब अपना में महत्व राखत बा, ऊ दोहा विशेषांक होखे, हाइकू विशेषांक होखे, गीत विशेषांक होखे कि नेपाली विशेषांक । जबरदस्त आयोजन होत रहल ।

1980 के पाँचवाँ अधिवेशन से लेके मोटामोटी 2000 ई. के जलालपुर, सारण के सतरहवाँ अधिवेशन तक हमार सक्रियता बनल रहल । हमरा महामंत्री रहते हमार बदली चांडिल, जमशेदपुर हो गइल आ कुछ विभागीय कार्यवाही भुगते के पड़ल । एह से सम्मेलन के काम के ओर से ध्यान हट गइल । जलालपुर अधिवेशन में हम महामंत्री के जिम्मेवारी से मुक्त भइलीं ।

कपिल जी हमार परेशानी जानत रहीं आ अपना भर हमार परेशानी दूर करेला कोशिशो में जूटल रहीं । जलालपुर अधिवेशन का पहिले आके जतना बाकी काम रहे हमरा हिस्सा के आ जवना के कपिल जी निबटवले रहीं, हम समझ–बूझ लिहनी आ प्रतिवेदनो कपिल जी

www.bhojpurisahityangan.com

तइआर कर देले रहीं । उहाँ के भीतर भरपूर सहयोगी भाव रहे ।

कपिल जी पत्रिका के लेके 2001 तक सक्रिय रहलीं, आ उहाँ का अपना सम्पादन–काल में छपल सामग्रियन के लेखकन के नामानुसार संदर्भ–सूची तइआर कइलीं । उहाँ का सम्पादन के आ सम्मेलन कार्यालय के सब भार प्रोफेसर ब्रजकिशोर जी के जिम्मे लगा दिहनीं । उहाँ का कुछ अस्वस्थ रहे लागल रहीं, बेटी के इहाँ मुम्बई आवाजाही बढ गइल रहे । हमहूँ बेटी के बिआह आ बेटा लोग के पढ़ाई–लिखाई के चलते कुछ कट गइल रहीं । हम माँझी आ मूँजा अधिवेशन में ना जा सकनी, हालाँकि ओकरा तइआरी के गतिविधि में हम भागीदार रहीं । बीसवाँ अधिवेशन पटना में 2006 में रहे । पांडेय कपिल जी अध्यक्ष के चुनाव के तरीका से नाराज रहीं, हमहूँ कपिल जी के एह बिन्दु पर साथ रहीं । मनोनित अध्यक्ष से कपिल जी आ हमरा बहुत घनिष्ठता रहे, बाकिर मनोनयन के प्रक्रिया पर आपत्ति रहे । प्रतिक्रिया में हम ना गइनी । एकइसवाँ अधिवेशन सासाराम में हम भाग लिहनी, ओकर विधिवत सूचना रहे । बाद के अधिवेशनन के कबो हमरा सही से सूचना ना मिलल, जबकि पूर्व पदधारी के नाते आ सदस्य के नाते मिले के चाहत रहे, हम भाग लेहल उचित ना समझनी । बिलासपुर अधिवेशन के रास्ता से लवटे के पड़ल, काहे से कि हमरा पिताजी के देहांत हो गइल रहे । कपिलो जी शिथिल पड़ गइल रहीं । बीच–बीच में उहाँ के अस्वस्थता बाधक रहे । बाकिर उहाँ का फोन करके समय–समय पर हालचाल लेत–देत रहनी । आपन किताबन के प्रकाशन भइला पर हमरा के प्रति भेजत आ देत रहनी । हमरा जब अवसर मिले, उहाँ से पटना जा के भेट करत रहीं । उहाँ का दुनों बेकत खाली साहित्यिके हालचाल ना, पारिवारिको हालचाल पूछत रहीं। पचीसवाँ अधिवेशन पटना में जब कपिल जी के बोला के ले गइल लोग त उहाँ का हमार उपस्थिति ना देख के घर लवटला पर फोन कइनी कि ब्रजभूषण जी, रउआ के ना देखनी ह । ओह घरी कुछ स्मृति भ्रंश के दौर से गुजरला के कारण उहाँ का एके एह बात खातिर केतना बेर फोन कइनी । हमरा जब भी मौका मिले, उहाँ से भेंट कर लेत रहीं आ ढेर दिन भइला पर फोन आ जात रहे । मिलला पर उहाँ का बहुत खुशी मिलत रहे ।

हमरा 2007–08 के बात मन पड़त बा, उहाँ का बहुत दिन से बेटी के इहाँ मुंबई में रहीं आ ओतहीं हमरो बेटी रहे । विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अधिवेशन थाणे (मुम्बई) में रहे । हम जाए के मन बनवले

www.bhojpurisahityangan.com

रहीं, एक पंथ, दू काज । कपिल जी से फोन पर बात भइल, उहाँ का खुशी के ठेकाना ना रहे । भेंट भइला पर कहहीं के का रहे ।

देह छोड़ला से बमुश्किल एक सप्ताह पहिले उहाँ के रिंग आइल आ कट गइल । हम एने से लगवनी त उहाँ का हँसे लगनी । हम हालचाल पूछनी त कहनी कि ठीके बा, अब काथी । हम कहनी कि एक दिन आवत बानी त उहाँ का हँसे लगनी । एह बीचे पता चलल कि उहाँ का हॉस्पिटलाइज बानी । भगवती प्रसाद द्विवेदी जी कहनी कि फोन करके बतिया लेब, तब आइब । एक दिन सूचना मिलल कि उहाँ का घर आ गइल बानी । हम बिहान भइला जाये के सोचनी, तले साँझ में द्विवेदी जी कपिल जी के ना रहला के सूचना देनी, करेजा में धक से लागल आ उहाँ के हँसी स्मृति में कौंध गइल आ आपन अर्थ बता गइल । हम अंतिम संस्कार में हिस्सा लेके फरज पूरा करे के धरम निबहनी । पांडेय कपिल के कर्मठता, कठोरता, सहजता, मिलनसारिता आ इगोलेस हो के संबंध निबाहे के गुण के बराबरी ना हो सके । उहाँ के ओढ़ना–बिछौना भोजपुरी रहे । उहाँ का भोजपुरी के पर्याय रहीं । भोजपुरी साहित्य के इहाँ तक खींच के ले आवे में सबसे बड़हन प्रयास उहें के बा । एगो युग के अंत, एगो अध्याय के समाप्ति बा ।

मुजफ्फरपुर ।

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



पांडेय कपिल : एगो संस्मरण

—रामनिहाल गुंजन

हिन्दी भा भोजपुरी के लेखक पांडेय कपिल अब हमनी के बीच ना रह गइलीं, बाकिर उनकर साहित्य–साधना आउर भोजपुरी पत्रकारिता के क्षेत्र में कइल गइल काम उनका संस्मृति के बनाये रखे खातिर काफी बा । कपिल जी के हम तबसे जानत रहली, जब ऊ पटना के साहित्यिक संस्था 'निराला परिषद्' से जुड़ के आपन साहित्यिक गतिविधि जारी रखले रहस । निराला परिषद् से जुड़ल कइगो नामचीन साहित्यकार रहले, जेकरा में ब्रजकिशोर नारायण, रामगोपाल शर्मा 'रुद्र', वेदनन्दन सहाय, पांडेय कपिल, राम नरेश पाठक आदि मुख्य रहले । ब्रजकिशोर नारायण परिषद् के अध्यक्ष रहलीं आ रुद्र जी, वेदनन्दन सहाय आ पांडेय कपिल ओकर उपाध्यक्ष रहले । परिषद् के गोष्ठियन में रामधारी सिंह दिनकर, नागार्जुन, केसरी कुमार आ दोसर–दोसर साहित्यकार भी उपस्थित रहत रहले । ओह घड़ी परिषद् बिहार में साहित्यिक गतिविधियन के केन्द्र में रहे । एह से जुड़ल साहित्यकार देश के विभिन्न पत्र–पत्रिकन में छपत रहले । हमरा इयाद बा कि 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के निराला विशेषांक निकलल रहे, जवना में परिषद् से जुड़ल बिहार के कइएक कवियन के निराला के स्मृति में कविता छपल रहे । पांडेय कपिल ओह

www.bhojpurisahityangan.com

घडी हिन्दी में कविता रचत रहले । उनकर हिन्दी कवितन के एगो संग्रह बाद में छपलो रहे । ऊ किताब 'आभास' नाम से प्रकाशित भइल रहे, जवना के प्रति कपिल जी हमरो के देले रहीं ।

बाद में चलके कपिल जी भोजपुरी में लिखे लागल रहीं आ भोजपुरी पत्रिकन से जुड गइल रहलीं । उहाँ का एकर चर्चा करत लिखले रहीं –"हिन्दी में लेखन आ संपादन के काम आउर हिन्दी के सांस्थिक सक्रियता में अपना नौजवानी के एगो लमहर अवधि लगवला का बाद जब हम भोजपुरी के साहित्यिक, सांस्कृतिक आ संगठनात्मक सक्रियता से जुड़े लगलीं त अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी संस्थान जइसन संस्था के नींव पड़ल आ हम ओकरे गतिविधि आ सक्रियता में लाग गइलीं, आ हमरा लेखन के प्रमुख भाषा हिन्दी से हटके भोजपुरी हो गइल ।" (विविधा के भूमिका– पृ.–7) । 1976 में कपिल जी भोजपुरी पत्रिका 'उरेह' के संपादन–प्रकाशन करे लगलीं आ एह पत्रिका के 1980 तक निकालत रहलीं । 'उरेह' के पहिला अंक जनवरी, 1976 में प्रकाशित भइल रहे आ ओकर आखरी अंक 2 अप्रैल, 1980 के निकलल रहे । 'उरेह' में कविता, कहानी, व्यंग्य, समीक्षा आ लेख नियमित छपत रहे । कपिल जी हरेक अंक के संपादकीय लिखत रहलीं । उहाँ का पत्रिका में स्तरीय रचना प्रकाशित करत रहलीं, जेकरा खातिर उनकर संपादकीय विवेक के तारीफो कइल जात रहे । बाद में भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के अंक 1980 से 2001 तक निकालत रहले । एकर संपादकीय टिप्पणियन के देखला से पता चल सकेला कि कपिल जी ओह घड़ी के साहित्यिक आ राजनीतिक माहौल के जायजा भी लेत रहलीं । कपिल जी ओह घड़ी राजभाषा विभाग में उपनिदेशक के पद पर कार्यरत रहलीं, हमहूँ कपिल जी से मिले खातिर उनका ऑफिस में कबो–कबो जात रहलीं । हमहूँ ओह घड़ी सचिवालय के खनन एवं भूतत्व विभाग में कार्यरत रहलीं । संयोग से उनका से मिलेवालन साहित्यकारन से हमरो भेंट हो जात रहे । डॉ. विवेकी राय से मुलाकात कपिल जी के दफ्तरे में भइल रहे । बाद में कपिल जी विवेकी राय के कइगो किताब हमरा के देले रहीं । कपिल जी 'उरेह' आ भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के कई अंकन में हमार रचनो छपले रहीं । भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के भिखारी ठाकुर पर केन्द्रित अंक में हमरा से लेख मांग के छपले रहीं । उनकर एगो योजना रहे । ऊ चाहत रहले दिवंगत भोजपुरी साहित्यकारन पर एगो किताब निकाले के आ ओकरा

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर हमरो से लेख मंगले त हम कथाकार वृन्दावन बिहारी आ कविवर वेदनन्दन सहाय पर लेख लिख के दे देले रहलीं, बाकिर दुर्योग अइसन कि ऊ किताब के योजना कार्यान्वित ना हो सकल । ओकरा बादे कपिल जी आ विवेकी राय के प्रयत्न से निबंधन के एगो बड़ संग्रह 'भोजपुरी निबंध निकुंज' के प्रकाशन अक्टूबर 1977 में भइल, जेकर संपादन विवेकी राय आ सिपाही सिंह श्रीमंत कइले रहलीं । पुस्तक अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से छपल रहे, जेकर भूमिका पांडेय कपिल जी लिखले रहीं आ कहले रहीं कि "अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से 'भोजपुरी निबंध निकुंज' के प्रकाशन पर हमरा आन्तरिक हुलास के अनुभव हो रहल बा। अतहत पुष्ट निबंध–संग्रह भोजपुरी में दोसर नइखे भइल । तैतालीस लेखन के एह विशाल संग्रह से भोजपुरी गद्य–साहित्य के विकसित स्वरूप साफे–साफ सामने आ जाता ।" एह संग्रह में कपिल जी के आचार्य महेन्द्र शास्त्री पर लिखल लेख भी संकलित बा, जवना में उहाँ का शास्त्री जी के बारे में लिखत कहले रहीं– "उहाँ के हर साँस से आम जनता के जिनिगी के बास आवत रहे । इहे वजह बा कि उहाँ का कथनी आ करनी में कतहीं भेद पावल मुश्किल बा । नगरी सुख–सुविधा का बीचे बइठ के साहित्यिक अखाड़ाबाजी करे के बजाय, दूर देहात में जाके जनता के जिनिगी में साहित्य, संस्कृति, शिक्षा आ समाज–सुधार के अलख जगावे में उहाँ के मन जादे रमत रहे ।" (भोजपुरी निबंध निकुंज पृ.–258) ।

गौर करे के बात ई बा कि कपिल जी आपन लेखक मित्रन के बराबर पत्र लिखत रहीं । वरिष्ठ लेखक लोगन के समय–समय पर पत्र लिख के उनका से रचना के मांग करत रहीं । उनकर कइगो पत्र हमरो पास आइल रहे । जब वेदनन्दन सहाय के स्मृति में हमार लिखल लेख 'दैनिक हिन्दुस्तान' में छपल रहे त कपिल जी ओह लेख के पढ़ि के हमरा पास पत्र लिखले रहलीं । ओही तरे एक बार जब हमरा कहानीकार वृन्दावन बिहारी पर लेख लिखे के रहे, तब हम कपिल जी से 'भोजपुरी' के अंकन में छपल उनकर कहानियन के बारे में जानकारी मंगलीं त उहाँ का 'भोजपुरी' के ओह अंकन के उपलब्ध करैले रहनीं । बीच–बीच में कवनो साहित्यकार के किताबो हमरा के भेंट करत रहीं । पांडेय सुरेन्द्र के 'ई हरनाकुस मन', पी. चन्द्रविनोद के 'हम कुन्ती ना हईं' आ पांडेय जगन्नाथ जी के भोजपुरी उपन्यास– 'गाँव घर टोला' उहाँ का सौजन्य से प्राप्त भइल रहे । बाद में ओह किताबन पर हम लिखले भी रहीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

कपिल जी आ उनकर भाई लोगन पर लिखल हमार लेख शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक, भोजपुरी कविता के विकास–यात्रा में संकलित बा ।

ओइसे त कपिल जी एगो नीमन अनुवादक भी रहलीं । उहाँ का अंग्रेजी के एगो प्रसिद्ध किताब 'टू मंथ्स इन आरा' के हिन्दी अनुवाद कइले रहीं, जेकर लेखक रहे जॉन जेम्स हॉल्स । पुस्तक के पहिलका संस्करण 1961 में प्रगति प्रकाशन, पटना–4 से प्रकाशित भइल रहे, जेकर दोसर संस्करण 2006 में कपिल जी खुद 'ग्रंथरत्नम प्रकाशन' का ओर से कइले रहीं । पहिलका संस्करण के भूमिका पूर्व प्राचार्य, पटना कॉलेज आ तत्कालीन संचालक काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, डॉ. काली किंकर दत्त लिखले रहलीं । उहाँ का लिखले रहीं– ''हॉल्स की पुस्तक' टू मंथ्स इन आरा' एक महत्वपूर्ण कृति है । जुलाई 1857 के अंत में जब आरा में भारतीय सैनिकों ने घेरा डाला था, इस पुस्तक के लेखक वहाँ स्वयं उपस्थित थे । इन भारतीय सैनिकों के नायक थे बिहार के महान वीर, जगदीशपुर के बाबू कुँवर सिंह, जिनके नेतृत्व में अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कम्पनी की हुकूमत का चुनौती दी गई थी । इस पुस्तक में प्रचुर प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध है । यह एक अत्यंत दुर्लभ कृति है और श्री पांडेय कपिल ने इसे हमारी राष्ट्रभाषा में अनूदित करके एक ओर जहाँ इतिहास के विद्वानों की बहुमूल्य सेवा की है, वहीं दूसरी ओर सामान्य पाठकों का भी उपकार किया है ।'' ('आरा में दो मास', संस्करण, 2006, पृ. 5) । ध्यान देवे के बात ई बा कि कपिल जी ओह पुस्तक के प्रामाणिक अनुवाद कइले रहीं । पुस्तक के प्रति हमरा के भेंट करत उहाँ का लिखले रहीं– 'बंधुवर रामनिहाल गुंजन के प्रीत्यर्थ ।' बाद में आपन पत्रिकन के लिखल संपादकीय टिप्पणियन के संग्रह, 'विविधा' (2011) के प्रति भी उहाँ का हमरा के भेंट कइले रहीं । दरअसल हम 1857 के प्रसंग में एगो लेख लिखे के चाहत रहीं, जेकरा खातिर कपिल जी के ओह अनूदित किताब के दरकार रहे । किताब मिलला के बाद ऊ काम आसान हो गइल । एह तरे कपिल जी के सदाशयता बराबर इयाद आवत रहेला । अइसन कइगो प्रसंग बा, जेकर इयाद कइल एहिजा जरूरी नइखे, बाकिर एतना जरूर कहल जा सकेला कि कपिल जी अजातशत्रु त ना रहलीं, बाकिर उनकर मित्र जादे आ दुश्मन कम रहन ।

इहवाँ हम उनकर रचनाकार व्यक्तित्व आ संपादकीय विवेक का बारे में चर्चा कइल जरूरी समझतानी आ ऊ एह से कि उहाँ का आपन पत्रिका के माध्यम से अइसन कइगो विधन पर काम कइलीं आ दोसर

www.bhojpurisahityangan.com

लेखकन से भी करइलीं । हिन्दी में हाइकू लिखा रहल बा । भोजपुरी में एह विधा के अभाव रहे । कपिल जी एह दिसाईं खुद प्रयत्न कइलीं आ भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के नवम्बर–दिसम्बर 1995 अंक ओही विधा पर केन्द्रित कर दिहलीं । ओकरा पहिले यानी 29 जुलाई 1995 के उहाँ का भोजपुरी में लिखल आपन लेख 'हाइकू आ भोजपुरी हाइकू' के पाठ भोजपुरी अकादमी के एगो गोष्ठी में कइले रहलीं, जेकरा के लोग पसन्द भी कइले रहे । फलतः भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के ऊ अंक सामने आइल । कपिल जी लिखले रहलीं –"हमरो महसूस भइल कि एहू काव्य रूप के अपनवला आ आजमवला से भोजपुरी में नया संभावना के दरवाजा खुल सकत बा, आ 'हाइकु' के विश्वव्यापी काव्यरूप के मौजूदगी भोजपुरी में भी दर्ज होखहीं के चाहीं । एह हाइकु विशेषांक के इहे पृष्ठभूमि बा ।" (विविध–पृ.–302) ।

कपिल जी पत्रिका के एगो अंक दोहा विशेषांक के रूप में भी निकलले रहीं । ऊ अंक सितम्बर–नवम्बर 2001 में प्रकाशित भइल रहे । कपिल जी निदा फाजली के एह शेर –'बच्चा बोला देखकर मस्जिद आलीशान/अल्ला तेरे एक का इतना बड़ा मकान ।' से काफी प्रभावित रहले आ सोचले कि हिन्दीए में ना उर्दूओ में एह घड़ी दोहा के लहर चल रहल बा, आ दोहा खूब लिखा–पढ़ा रहल बा। भोजपुरियो में एह छंद–रचना के लहर उठे लागल बा आ अनेक कवि जम के दोहा लिख रहल बाड़े । नतीजतन एह अंक में दोहा प्रकाशित कइल गइल आ दोहा संबंधी एगो लेख कविवर जगन्नाथ जी के छापल गइल । दोहा–अंक में अठासी कवियन के सात सौ से ऊपर चुनल दोहा छापल गइल रहे । एह अंक के लेखक–पाठक सरहले भी रहले ।

कहल जरूरी नइखे कि कपिल जी आपन पत्रिका में दोसर–दोसर कइगो नया विधन के भी समावेश कइले रहलीं । ई विविधता पत्रिका के हित में रहे आ लेखक–पाठक के आशा–आकांक्षा के अनुकूलो रहे । इहे वजह बा कि कपिल जी सम्मेलन पत्रिका के समय–समय पर सामयिक विषयन आ नया विधन पर केन्द्रित करत रहलीं । एकरा पाछे उनकर जनवादी सोच आ संपादकीय विवेक काम करत रहे । उहाँ का हिन्दी में दलित चेतना आ दलित साहित्य के देखत ओकरा के भोजपुरी में भी चर्चा के विषय बनावल जरूरी समझलीं । उहाँ का पत्रिका के सितम्बर 1998 अंक में 'दलित साहित्य भोजपुरी' शीर्षक से संपादकीय लिखलीं आ एह बात के चर्चा कइलीं कि "आज जब कि भारत के अधिकांश भाषा

www.bhojpurisahityangan.com

सभन का साहित्य में दलित साहित्य आन्दोलन के रूप ले चुकल बा आ ओकरा पर गंभीरता से चर्चा होखे लागल बा, तब ऐतिहासिक दृष्टि से जॉच कइला पर लागत बा कि हिन्दीए काहे, आउर भारतीय भाषा सभन के साहित्य में भी हीरा डोम के एह भोजपुरी कविता से पहिले के कवनो दलित बंधु के दलित समस्या पर लिखल रचना शायद कवनो नइखे ।'' (उप. पृ. 382) । एही सिलसिला में पत्रिका के दिसम्बर 1996 अंक लघुकथा पर केन्द्रित रहे । चूंकि लघुकथा भोजपुरी खातिर एक तरह से नया विधा रहे, एह से एकरा के पत्रिका में समाविष्ट कइल गइल । कपिल जी संपादकीय में एकरा पर प्रकाश डालत लिखले रहीं –''भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'' स्तरीय लघुकथा प्रकाशित करत रहल बा, जवना से भोजपुरी में लघुकथा–लेखन के बल मिलत रहल बा । लघुकथा के ई विकास–कथा हिन्दी के ह । बाकिर हिन्दी के एह क्रियाशीलता से भोजपुरी अछूता नइखे रह सकल, आ समान रूप से भोजपुरियो में एगो विशिष्ट कथा विधा का रूप में 'लघुकथा' स्थापित हो चुकल बा, भलहीं भोजपुरी में अबहीं एकरा परिमाणात्मक विकास के ऊ स्वरूप ना खड़ा हो सकल होखे जे हिन्दी में भइल बा ।'' (उप. प. 340) ।

गौर करे के बात ई बा कि कपिल जी राज्य आ देश स्तर पर होखेवाला साहित्यिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक गतिविधियन से भी पत्रिका के जोड़े के कोशिश कइलीं आ एह रूप में पत्रिका सिर्फ बिहार के ना होके पूरा देश के भोजपुरी साहित्यकारन के मंच बन गइल रहे । ई बात पत्रिका के नाम (अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका) से भी स्पष्ट हो जाई । पत्रिका के विभिन्न अंकन में प्रकाशित संपादकीय टिप्पणियन पर अगर गौर कइल जाय त एह बात के साफ पता चल जाई । उदाहरण के तौर पर कुछेक संपादकीय टिप्पणियन के शीर्षक देखल जाव –'नेपाल–भारत भोजपुरी सम्मेलन', 'पहिलका विश्वविद्यालय सम्मेलन', 'भोजपुरी आन्दोलन', 'मातृभाषा : धर्म के आधार पर बांटे के षड्यंत्र', 'नेपाल आ भोजपुरी', 'भोजपुरी खातिर राजनीतिक चेतना के जरूरत', 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास–लेखन', 'कविता के जरूरत', 'भोजपुरी कहानी विशेषांक', 'दलित साहित्य', 'लघुकथा अंक', 'गीत : भोजपुरिया जिनिगी के धड़कन' आ 'कबीर : वाचिक परंपरा के अद्भुत कवि' ।

एह तरे देखल जाय त कपिल जी हिन्दी आ भोजपुरी के एगो सेसर रचनाकार के साथे–साथ एगो प्रगतिशील दृष्टि–संपन्न संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

भी रहलीं । उनकर पत्रिका निकाले के जे उद्देश्य रहे, ओह में एक प्रकार से प्रतिबद्धता भी रहे । उहाँ का जवन जनवादी तरीका से पत्रिका में रचनन में संयोजन–संपादन करत रहलीं, ऊ उनका के एगो विशिष्ट संपादक बनावे में सहायक होखत रहे । उहाँका एगो रचनाकार के रूप में बड़ा रहीं कि संपादक में रूप में, ई कहल थोड़ा कठिन भी बा । एकरा बावजूद ई कहल जादे उचित होई कि उहाँ के रचनाकार के विकास में उनकर संपादकीय दृष्टि के विशेष भूमिका रहे । उनका के एह अर्थ में अगर भोजपुरी के महावीर प्रसाद द्विवेदी कहल जाय त कवनो अत्युक्ति ना होई । कपिल जी के भोजपुरी भाषा आ ओकर साहित्य के विकास में जवन भूमिका रहल बा, ऊ उनका के चिरस्मरणीय बनावे से सहायक सिद्ध होई, एह में कवनो शक नइखे ।

–नया शीतल टोला, आरा–802301 (बिहार)

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी साहित्य के मील के पत्थर : पांडेय कपिल

—डॉ. महामाया प्रसाद विनोद

व्यक्ति के व्यक्तित्व में मुखरित होला परिवेश के सुगंध आ संस्कार के काव्य । 'पांडेय कपिल जी के परिवेश आ संस्कार दूनो के पोर–पोर में भरल रहे साहित्य सुधा' । सारण जिला के शीतलपुर गाँव में इनकर दादा जी दामोदर सहाय कविकिंकर भोजपुरी साहित्य के एगो लब्ध–प्रतिष्ठित कवि आ साहित्यकार रहनीं । उहाँ का सारण के सुदूर गाँव के आंचलिक परिवेश में हरेक साल साहित्यिक–सांस्कृतिक आयोजन करावत रहनीं । बिहार के बहरी कलकत्ता, बनारस आदि जगहा से जानल–मानल साहित्यकार आ कलाकारन के जुटान ओइजा होत रहे । जवन घर साहित्यिक गतिविधियन के केन्द्र रहे, जवना घर पर एक से बढ़ के एक लमहर साहित्यकारन के जमावड़ा होत रहे, ओह घर में जेकर बचपन बीतल होखे, ओकरा में साहित्यिक संस्कार के समावेश स्वाभाविक रहे । इनका गाँवे एगो 'हिन्दी–मंदिर' पुस्तकालय रहे । पुस्तकालय में पुस्तकन के लमहर भंडार का अलावे पत्र–पत्रिको आवत रहे । बीच–बीच में साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधि त चलते रहे, बाकिर हरेक साल पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव धूम–धाम से मनावल जात रहे । वोह अवसर पर रंगा–रंग सांस्कृतिक आयोजन होत रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

एही साहित्यिक–सांस्कृतिक परिवेश में पांडेय कपिल जी के जिनगी के डेग आगे बढ़ल रहे । इनका गॉवे अक्सर भिखारी ठाकुर के मंडली के कार्यक्रम होत रहे । दादा जी के भोजपुरी से जुड़ल रहला बदे भोजपुरी के अनगढ़ हीरा भिखारी ठाकुर इनका घरे जरूर आवस । पारिवारिक विरासत सँवारत इनकर पिताजी पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के हिन्दी आ भोजपुरी दूनो के एगो जानल–मानल साहित्यकार का रूप में हिन्दी–भोजपुरी साहित्य के समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान रहे । सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 23वॉ अधिवेशन के अध्यक्ष आ बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सम्मानित सदस्य रहलें । अइसने साहित्यिक वातावरण में पलत–बढ़त गाँव का नियरे बरेजा मिडिल स्कूल में पढ़ाई–लिखाई शुरू कइले । बाद में हाईस्कूल के पढ़ाई जैतपुर हाईस्कूल में भइल । विश्वविद्यालय के स्तर के शिक्षा देश के नामी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भइल । जवना समय ई उहवॉ छात्र रहीं, ओह समय स्वनामधन्य पंडित मदन मोहन मालवीय आ सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन कुलपति पद के सुशोभित करत रहनीं । आगे चलके विख्यात दर्शनशास्त्री डॉ. राधाकृष्णन भारत के उपराष्ट्रपति आ राष्ट्रपति पदो पर आसीन भइनी । कपिल जी के विद्यार्थिए जीवन में बनारस के पत्र–पत्रिकन में रचना प्रकाशित होत रहे । बनारस के साहित्यिक कार्यक्रमों में इनकर सक्रिय सहभागिता देखल जात रहे ।

1950 में जब बनारस से पढ़ाई खतम क के पटना अइलें त इहवॉ इनका पिताजी के कारण घरो में नीमन साहित्यिक वातावरण मिलल । साहित्यिक परिवेश में साहित्यिक गतिविधियन में अभिरुचि आ सक्रिय सहभागिता के क्रम में सुप्रसिद्ध पत्रकार–साहित्यकार ब्रजकिशोर नारायण जी से इनका काफी घनिष्ठता भ गइल । नौकरियो मिलल त हिन्दी–उर्दू ट्रान्सलेशन विभाग में जहवॉ हमेशे साहित्यकार लोगन से भेंट मुलाकात होत रहे । कालक्रम में 1973 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल । पांडेय कपिल जी संस्थापक सदस्य संगे–संगे सम्मेलन के एगो आधार स्तंभ साबित भइलें ।

संयोग अइसन जुटल कि अमनौर हाईस्कूल में सारण जिला–भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तेरहवॉ अधिवेशन आयोजित भइल । एह अधिवेशन के शानदार सफलता से प्रभावित होके अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के लोग कहल कि एइजे अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आयोजन कइल जाव ।-अमनौर से विधिवत्

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मेलन कार्यालय के सातवाँ अधिवेशन के आयोजन खातिर निमंत्रण भेजल गइल । सम्मेलन के कार्यसमिति द्वारा निमंत्रण स्वीकारल गइल । 29–30–31 अक्टूबर 1982 में सुप्रसिद्ध पत्रकार आ भोजपुरी साहित्यकार ईश्वरचन्द्र जी के अध्यक्षता में खूबे ताम–झाम का संगे सम्मेलन के सातवाँ अधिवेशन सम्पन्न भइल जवना के भोजपुरी के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विवेकी राय 'न भूतो : न भविष्यति' के सज्ञा से सुशोभित कइलें ।

संयोग अइसन रहे कि भोजपुरी के एगो लमहर स्तंभ विख्यात अर्थशास्त्री डॉ. प्रभुनाथ सिंह ओह समय बिहार सरकार में मंत्री रहलें आ अमनौर विधान सभा से विधायक रहलें । आयोजन समिति के गठन होखे लागल त डॉ. प्रभुनाथ सिंह स्वागताध्यक्ष, डॉ. चन्द्रशेखर सिंह संयोजक आ राजेन्द्र सिंह जी स्वागत समिति के सचिव भइले । रहीं त हम विज्ञान के विद्यार्थी, बाकिर साहित्य में गहिर अभिरुचि रखला आ साहित्यिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता के कारण हमरा पर आयोजन समिति के कोषाध्यक्ष के दायित्व सउँपल गइल । एही आयोजन के तइयारी का क्रम में हमरा पांडेय कपिल जी के 2 ईस्ट गार्डिनर रोड स्थित सरकारी आवास पर जाए के मौका मिलल । बहुते सहृदयता से उहाँ का मिललीं । चाय का बाद आपन डलिया में पान लगावत हमरो के पान खाए के पुछलीं । हम ओह घड़ी खूब पान खात रहीं, एह से हुँकारी भर देनी । बाद में जब अमनौर अधिवेशन में अइलें त आउरी नजदीकी बढ़ल । अबतक हमहूँ कुछ–कुछ भोजपुरी में लिखे–पढ़े के शुरू कइले रहीं । पांडेय कपिल जी के मिलनसार सुभाव आ मार्गदर्शन हमरा के भोजपुरी साहित्य से जोड़लस, एकरा के नकारल ना जा सकेला । धीरे–धीरे हम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ सम्मेलन पत्रिका के आजीवन सदस्य बननीं । एकरा बाद बराबर पटना में भा अधिवेशनन में पांडेय कपिल जी से भेंट–मुलाकात होत रहे । भेंट भइला पर एकाध गो किताब जरूर देत रहनीं । आजुओ 'परिन्दा उड़ान पर' आ विविधा किताब उनका दस्तखत का संगे हमरा किताबन का संगे संजो के राखल बा । जब पटना रहे लगनीं त सम्मेलन से आउरी नजदीकी बढ़ल, हमरा सम्मेलन के कोषाध्यक्ष के जिम्मा सउँपल गइल । एतने ना, जब प्रो. ब्रजकिशोर जी आपन घर खाली कके फ्लैट में आवे लगलें त कार्यालयो हमरे आरा गार्डेन, जगदेव पथ, पटना निवास पर चल आइल । एही बीच अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पच्चीसवाँ रजत जयन्ती अधिवेशन के आयोजन पटना में भइल । आयोजन में भाग लेवे

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर न्योता लेके पांडेय कपिल जी के पास हमनी के गइनी । अबतक उनकर उमिर काफी बढ़ गइल रहे । कुछ–कुछ विस्मृति के शिकार होत रहलें । बाकिर न्योता स्वीकार करत ई कहलें कि हमरा ले चले के होई । हम कहनी, एकर चिन्ता मत करीं, गाड़ी से ले जाइब आ फेर डेरा पहुँचावे के जिम्मा हमार रहल । ठीक उहे भइल । दिलीप गाड़ी लेके उनका सम्मेलन में लावस आ फेर पहुँचावस । बाकिर अधिवेशन में दूनो दिन खूब मनोयोग से भाग लिहलें आ दूसरका दिन कविसम्मेलन के अध्यक्षतो कइलें ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संगठन में महामंत्री आ 6–7 अप्रील 1996 में गाजीपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद के उहाँ का सुशोभित कइलें रहीं । एकरा अलावे पांडेय कपिल जी के भोजपुरी में साहित्यिक अवदानो कम नइखे । शुरू में उहाँ का हिन्दी में लिखत रहीं । एगो अंग्रेजी किताब 'टू मन्थस इन आरा' के हिन्दी में अनुवादो कइले बानीं । बाद में भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करे में उहाँ का जीउ–जान से लाग गइनी ।

पत्रिकन आ पुस्तकन के संपादन से लेके मौलिक रचनन के एगो लमहर सूची बा । पत्रिकन के संपादन के क्रम में 1976–1980 तक उरेह (भोजपुरी तिमाही) के, 1980 में 'लोग' (भोजपुरी तिमाही), 1980–1988 तक भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के तिमाही प्रकाशन का बाद 1990 से 2001 तक भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के मासिक प्रकाशन के गुरुतर–दायित्व के पाडेय कपिल जी बखूबी निर्वहन कइलें । सांच पूछल जाव त भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका खातिर 'पीर बावर्ची भिश्ती खर' अकेले पांडेय कपिल जी रहनीं । रचनाकारन से संपर्क कइल, पत्रिका प्रकाशन खातिर आर्थिक साधन के उतजोग कइल, खूब ढंग से हिसाब–किताब राखल, पत्रिका छपवावल, बंडल बना के नाम पता साट के डिस्पैच करावल कुल्हि काज अकेले करस । इनका संपादन काल में कए गो महत्वपूर्ण विशेषांको के प्रकाशन भइल । 'दसरतन' में सम्मेलन के दसवाँ अधिवेशन तक के अध्यक्ष लोगन के जीवन प्रकाशित भइल ।

भोजपुरी कविता, गजल, निबंध का अलावे उनकर एगो सबसे महत्वपूर्ण आ चर्चित रचना बा भोजपुरी उपन्यास 'फुलसुंघी' । पूर्वी के महान गायक रचनाकार महेन्द्रर मिसिर, रईस हलिवन्त सहाय आ गुलजारी बाई उर्फ ढेला बाई के त्रिकोणात्मक प्रेम के अमर दास्तान कहल जाव त कवनो अतिशयोक्ति ना होई । 1971 में उनकर पहिल भोजपुरी रचना

www.bhojpurisahityangan.com

'भोर हो गइल' आ 1977 में बहुचर्चित भोजपुरी उपन्यास 'फुलसुंघी' प्रकाशित भइल । बाद में 'कह ना सकलीं' (गजल संग्रह 1995), 'जीभ बेचारी का कही' (दोहा संग्रह 2004), 'परिन्दा उड़ान पर' (गजल संग्रह 2007), 'लेखाजलि' (संस्मरणात्मक निबंध संग्रह 2012), 'दुनिया में सतरंज बिछल बा' (कविता संग्रह 2014), 'कृष्णार्जुन वार्ता' (गीता के अनुवाद 2015), 'विविधा' (संपादकीय आलेख संग्रह) आदि रचना पाठकन का सोझा आइल । सम्मेलन पत्रिका से आखिरी समय तक संबंध बनवले रहलें आ कुछ ना कुछ लिखत रहलें । कुछे दिन पहले पटना के दैनिक हिन्दुस्तान में उनकर संस्मरण धारावाहिक रूप से प्रकाशित भइल । 24–9–1930 से 2–11–2017 तक के उनकर साहित्य के समर्पित जिनगी के आखिरी अवदान बा दोहा संग्रह 'सांस चलत जबले रहे' । एह किताब के छपला का दू–चारेदिन बाद उनकर महाप्रयाण भइल । पता ना, कइसे दुनिया से चले के पहिले जाए वाला के आभास हो जाला । राष्ट्रकवि 'दिनकर' जी आपन जिनगी के आखिरी समय में लिखले 'हारे को हरिनाम' आ पांडेय कपिल जी आपन रचना संसार के समापन कइलें–

'सांस चलत जबले रहे, जबले जिनगी शेष ।
हे प्रभु ! रउआ याद में बनल रही हरमेस ।।'

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी के मलहोरी

—रामनारायण उपाध्याय

मलहोरी जवार के देवीस्थान के अइसन समर्पित सेवक होला जेकरा डलिया में लोरहल फूलन के माला हमेशा तइयार रहेला । देवी–पूजा खातिर ओकर भाव, सुभाव आ सोच एके रहेला –'मइया, सबके भला, तापर मोर भला ।' जवार के भलाई खातिर पुजाई मलहोरी के साध कहाला । अपना होती से ना त देवी के पुजाई में कवनो कसर राखेला मलहोरी आ ना लोगन खातिर ओकर दुआर कबो बन रहेला । 'परहित सरिस धर्म नहि भाई' के छछात साकार आकार ह मलहोरी । माला बना–बना के घर–घर देवी के अलख जगावे वाला एह समाज सेवी के इहे कामना रहेला –'सदा आनन्द रहो एही द्वारे, मोहन खेलस होली हो ।' एह सेवा भाव के चलते जवार में बड़ा मान–पान होला मलहोरी के । कबो ना ओकरा मन में आपन वाली बात होला आ ना बात में खर–खरोंच । भक्ति, प्रेम आ सद्भाव के संगे सबकर भला कइला में सदा रचल–बसल मन हँसत–खेलत रहेला, बाकी काम–धाम में कवनो कमी ना होखे । सेवा इनकर स्वभाव कहाला आ सबकर भलाई संकल्प । कुछ अइसने स्वभाव रहे भोजपुरी के सशक्त आराधक पाण्डेय कपिल के । पाण्डेय कपिल आज व्यक्तिवाचक से भाववाचक के रूप में स्थापित

www.bhojpurisahityangan.com

हो गइल बानी । जीवन भर भोजपुरी के विकास खाातिर देवी मंदिर के पुजारी नियर समर्पित आ देवी के उपासक मलहोरी नियर साधक बन के पाण्डेय कपिल अपना प्रयास में आज केहू से एक डेग पाछा नइखीं ।

जेतना बनल ओतना अपना लेखनी से भोजपुरी भाषा आ साहित्य के समृद्ध कइनी आ जेतना हो सकल ओतना अपना विचार, प्रस्ताव आ प्रयास से भोजपुरियन के सदा राह देखवनी । अपना जिनगी में आठो पहर भोजपुरी खातिर अतना उतजोग कइनी कि आज उहाँ के कई रूप में प्रतिष्ठित बानी । एह रूपन में सफल सम्पादक, समीक्षक, लेखक, लघुकथाकार, विचारक आ भोजपुरी के उद्धारक महत्वपूर्ण बा ।

अपना होती से पाण्डेय कपिल के सम्पादक रूप भोजपुरी साहित्य खातिर मील के पत्थर कहल जाई । सम्पादक के रूप में जब पाण्डेय कपिल पर सोच–विचार होई त एकर स्वर से ई माने के पड़ी कि उहाँ का सर्वगुण सम्पन्न सम्पादक रहनी । सम्पादक पत्रिका के साहित्यिक कलेवर के सिरजनहार होला । पत्रिका में छपल रचनन के सेवक आ शोधक होला । हर विचार के सँवारे आ बनावे में अपना ओर से हित भाव के जगावेला । भाषा के बहाव के मनगर आ मजगर बना के रचना के युगधर्मी बनावे में अपना कलम से कमाल देखावे में उतजोगी होला । सम्पादक के एह मनभावन रूप में पाण्डेय कपिल भोजपुरी साहित्य में सबसे सफल बानी, एमे कवनो सोचे के बात नइखे । जबले समाज एह दायित्व खातिर उहाँ से निहोरा कइल, तब तक पाण्डेय कपिल भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के सम्पादन कइके पत्रिका के रूप–रंग, हाव–भाव आ विषय–संकल्प के सदा मनजोगावन बनवलीं । पत्रिका के हर अंक में उहाँ के लिखल–कथनी सम्पादक के– अपना आप में एगो साहित्यिक धरोहर कहाई । हर अंक में अपना निमन आ सामयिक विचार से भोजपुरिया समाज के राह देखावे के सार्थक प्रयास कइल गइल । आज जब पाण्डेय कपिल देवलोकवासी बन के संसार से अलोता चल गइल बानी, तब पत्रिका में 'कथनी सम्पादक के' संकलन कइल जा सकेला । ई संकलन जतना भोजपुरी साहित्य के थाती कहाई, ओतने एकर साहित्यिक स्वरूप भी उजागर होई ।[1]

कथनी सम्पादक के फेर से एक बार पढ़े के परी । हर अंक में प्रकाशित विचार भोजपुरी के विकास आ प्रयास खातिर सबल आधार बनि के साहित्य के शृंगार करी । भोजपुरी के समृद्ध बनावे खातिर पाण्डेय कपिल हर पल हर तरह से तत्पर रहीं । सम्पादक के रूप में पत्रिका के

www.bhojpurisahityangan.com

मार्ग दर्शन कइनी, अपना लेखनी से साहित्य रचि के समाज के जागरूक कइनी, कविता के माध्यम से अपनापन के आल्हर विचारन से पाठक के प्रेरित कइनी । लघुकथा के संग्रह कई के एह लुप्त प्राय विधा के साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करे के अथक प्रयास भइल, जइसे मलहोरी देवी के आराधना में तत्पर रहि के जवार के हितकामी बनल रहेला, ओसही भोजपुरी के समर्पित आराधक आ विचारक के मन में एके भाव जागत रहे– भोजपुरी भाषा आ साहित्य के समग्र विकास । भोजपुरी ना त उपेक्षित भाषा ह, ना भोजपुरी साहित्य कवनो दोसरा भाषा से कवनो माने में इचिको नरम न ह । अथाह साहित्य से सँवरल–बनल भोजपुरी साहित्य एतना सजल बा कि लोगन के मन में ललक जाग रहल बा । ई ललक एक दिन के उपजल भाव ना ह । पाण्डेय कपिल अइसन सधल आ समर्पित साहित्यिक संतन के सोच, संकल्प आ प्रयास के सार्थक पूंजी ह । ई बात त ठीके कहल गइल बा कि आन्ही के आगा बेना के बतास आ सागर के अंगना बूंद के कवनो महत्व ना होला, बाकी समय आ जगहा पर बेना आ बूंद के महत्व के नकारल ना जा सकेला । ई हम मानतानी कि एगो पाण्डेय कपिल के कइला–धइला से भोजपुरी के समग्र विकास ना आँकल जा सकेला, लेकिन जब–जब भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर सोच–विचार होई, त बिना कहले–गुनले पाण्डेय कपिल के इयाद त आइये जाई । इहे पुण्य स्मरण कहाला । एकरा पीछे मन के संकल्प, त्याग, प्रयास आ सोच के बड़हन हाथ होला । एह हाथ–से–हाथ ना छोड़ावे के चाहीं ।

एह आलेख में हम पाण्डेय कपिल के कवनो रचना के नाम लेके ओकर उल्लेख नइखीं करत, लेकिन जवन लिखल–पढ़ल गइल बा, ओकरा आधार पर ई सोच बन रहल बा कि पाण्डेय कपिल आजीवन अपना भोजपुरी खातिर दसो नोह जोर के तत्पर रहलन । कवनो विशेष विधा खातिर उहाँ के अपना के ना समर्पित कइनी । ओरिचन बनि के भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पटिहाट के अइसन ओरिचनी कि भोजपुरी आज चारो कोना से सम्पन्न आ सशक्त बनल कवनो भाषा आ साहित्य से हाथ मिलावे में सक्षम बिआ । अपना भाषा के प्रति लगाव अतना मनजुड़ावन रहे कि भोजपुरिया के जगावे खातिर पल–पल सजग होके आपन बात कहे में कबो पीछे ना रहनी । एगो संकल्प भाव उहाँ के मन में रहे कि अपना भाषा के प्रति उदासीनता आ साहित्य के प्रति हीन भावना कबो ना राखे के चाहीं । उदासीनता से भाषा मृतप्राय होले आ

www.bhojpurisahityangan.com

हीन भावना के चलते साहित्य समाज के उजागर ना कर सके । ई दूगो अइसन सोच ह, जवना से समाज के विकास रुक जाला । एह विकास यात्रा के बनावे, बचावे, जगावे आ हथिआवे खातिर पाण्डेय कपिल कबहूँ केहू से पीछे ना रहनी । जब मोका मिलल, तब ललकार के शब्दन में कमी ना भइल । एगो ललकार के बानगी देखीं– 'केतने छोट–छोट भाषा सभन के सरकार आ साहित्य अकादमी राजनीतिक कारणन से मान्यता दे दिहलस आ भोजपुरी ताकते रह गइल । सामाजिक न्याय के मसीहा लोग ऑख मूंद के एह सबसे बड़ सामाजिक अन्याय के सहत रह गइल, आजादी के पचासवीं साल गिरह के मौका पर संसद के चार दिन चले वाला विशेष अधिवेशन में दुनिया भर के बात उठल । बस, एगो बात ना उठल– भोजपुरी के मान्यता के । बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश के सएकड़न सांसद लोगन में से केहू के मुँह से 'भोजपुरी' शब्द के उच्चारण तकले ना भइल, हाय रे भोजपुरी के सुलाखन सपूत लोग ! ई त हद हो गइल ।"

एह सोच के हजार बेर नमन । एही स्वभावधर्मिता के कारण हम पाण्डेय कपिल के भोजपुरी के मलहोरी कहत बानी । जवन मलहोरी के भाव, तवने पाण्डेय कपिल के स्वभाव ।

–बोकारो इस्पात नगर, बोकारो

---

1. 'कथनी सम्पादक के' के अंतर्गत छपल तमाम सम्पादकीय आलेख 'विविधा' ग्रंथ में संकलित बाड़न स। **–संपादक**

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



पाण्डेय कपिल :
एगो स्फटकीय व्यक्तित्व

—डॉ. शारदा पाण्डेय

समय निरंतर प्रवहमान हऽ । ओकरा गति के केहू ना रोक सकेला । चाँद—सूरज—ग्रह—नक्षत्र में विस्फोट परिवर्तन हो सकेला । उनकर परिपथ बदल सकेला, बाकिर काल त अनवद्ध ह । अइसहीं ईहो सत्य ह कि जे संसार में आइल बा, ओकरा जाहीं के बा । 'जातस्य मृत्योर्ध्रुवम्' इहे साँच ह । तबो केहू के गइला पर मन में एगो शून्य भरि जाला; अइसन जेकर पूर्ति केहू ना करि सके । पाण्डेय कपिल के व्यक्तित्व—कृतित्व कुछ अइसने रहल । जे उनुका सम्पर्क में आइल, ऊ कुछ—न—कुछ समृद्ध भइल भाषिक आ मानसिक रूप से । एसे उनका के विस्मृत कइल बड़ा कठिन बा । उनुकर स्मृति मानस में अडिग बन जाला । एकर अनुभव हम बड़ा गम्भीरता से करीले । सन् 1994 में हम अस्वस्थ रहनी । पूरा परिवार सूति जाए, हम जागत रहीं। मन शांत ना रहे । त लेटल—लेटल एगो निबंध भोजपुरी में लिखनी 'लिखला ना लिखला के बीच में ।' ओही घरी श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी अइनीं । हम उहाँ के ऊ निबंध देखा दिहनी । उहाँ के ओके पढ़नी आ कहनी कि 'एके कवनो पत्रिका में भेज दऽ ।' हम असमर्थता देखवनी । त उहाँ के अपनहीं 'अखिल भारतीय भोजपुरी पत्रिका, पटना' भेज दिहनी । कुछ

www.bhojpurisahityangan.com

दिन बाद 'भोजपुरी पत्रिका' आइल । हम देखनी कि ऊ पूरा निबंध बिना कवनो संशोधन के प्रकाशित हो गइल रहे । ओकरा संगे एगो पर्चो रहे कि 'आदरणीया ! राउर निबंध अपना ढंग के अकेला निबंध बा । रउआ लिखत रहीं । आशा बा, स्वस्थ सानन्द होखब ।' हमार मन भीतर तक ओह प्रोत्साहन से सिंचा गइल । अस्वस्थता सह्य लागे लागल । फेरु त भाषा के संस्कार, आलोचना संहिता अइसन अनेक निबंध लिखाइल । जेकर प्रशंसा पाठक लोग पत्रिका के माध्यम से आ व्यक्तिगत रूपो से कइल ।

हम अनुभव करत गइनी कपिल जी के भाविक उदारता आ प्रोत्साहन के, जे नया लेखन खातिर आचार्य–धर्म निभावत रहल । आजु त केहू दोसरा के बढ़ावे के के कहो, ओकरा योग्यता के सुखावे खातिर नून–माठा हो जाता लोग । सन् 1996 में गाजीपुर के भोजपुरी अधिवेशन में 'सुपर्णा कथा' के पाण्डुलिपिये पर पुरस्कार के घोषणा भइल । हम गइनी त देखनी कि एगो 5 फीट 6–7" के व्यक्ति धवल धोती–कुर्त्ता में सोझा आइल, जे दोहरा बदन के रहल, रंग श्यामल आ ऑखि बड़–बड़ आ हमरा से प्रश्न कइलन, अपने के 'शारदा जी' हईं ?' हम कहनी, 'जी हॉ ।' ऊहॉ के तुरंते प्रणाम के मुद्रा में आ गइनी । हमरा संकोच लागल । शब्द आइल, हम पाण्डेय कपिल ।' हम देखते रहि गइनी । अतना सरल, सज्जन आ सौम्य ! मन आश्वस्त हो गइल । फेरू त पूरा कार्यक्रम हमरा खातिर महोत्सव बनि गइल । अनेक लोगन से परिचय करावल गइल, जेमे विशेष रहल लोग श्री विवेकी राय, आंजनेय जी, विजय बलियाटिक, श्री शम्भुशरण जी । ई समारोह हमरा खातिर एगो उपलब्धि रहल । ओही में हमरा के प्रवर समिति के सदस्य घोषित कइल गइल ।

कपिल जी के विशेषता रहल अपना ले छोट लोगन के आगा बढ़ावल । एही से शायद हम जवन कुछ भइल, कऽ सकनी । कविता, हाइकु, दोहा, निबंध कुल्ही के देखल, सँवारल, प्रकाशित कइल ई ऊहें में समाई रहल । कम से कम भोजपुरी के पन्द्रह–बीस पुस्तकन के समीक्षा लिखववनी । महाश्वेता, जितेन्द्र प्रसाद, पी. चन्द्रविनोद, पी. सुरेन्द्र, मनोज, अपना जीभ बेचारी का कही, कहि ना सकनी, फुलसुंघी, परिन्दा उड़ान पर' अवरू ना जाने सम्मेलन से प्रकाशित कई पुस्तकन पर बल देके समीक्षा लिखे के प्रोत्साहित कइनी । छोट–से–छोट बिन्दु पर उहॉ के दृष्टि पड़े । ओके रेखांकित करीं आ प्रशंसा करीं । 'ओह दिन' संग्रह

www.bhojpurisahityangan.com

के चार गो कहानी प्रकाशित कइनी आ आपन विचार दिहनी । 'आचमन किरिन के' पढ़ि के लिखनी, एकर 'ट्रीटमैट' बड़ा अच्छा बा। 'ओह दिन' के कहनी, 'ई रउअे लिखि सकीले मौलिक बा ।' कहे के तात्पर्य ई बा कि हमरा अइसन का जाने कतना लेखकन के मनोबल बढ़वले बानी । ई कार्य ऊहे करि सकेला, जेकर हृदय विशाल होई, उदार होई आ निर्मल होई । कतना कहीं !

जहाँ तक कपिल जी के सृजनधर्मिता के प्रश्न बा, ऊहाँ के लेखन बहुआयामी बा। 'फुलसुंघी' उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित प्रेम के सतरंगी सात्विक भाव के जइसन अद्‌भुत कृतियन के अबहीं भोजपुरी में कवनो उपन्यास ओकरा ऊँचाई के नइखे स्पर्श करि पवले । दोहा त ऊहाँ के 'गागर में सागर' कथन के स्पष्ट प्रतिमान बा, जवना में प्रेम के तरलता, भाव के गहराई आ अभिव्यक्ति प्रौढ़ता दर्शनीय बा । गजल पर ऊहाँ के जइसन अधिकार बा, ओकर सादगी आ कथ्य के सटीकता सीधा पाठक के हृदय पर प्रभाव डालता–

"आँख में बाँचल अबहियों लोर बा ।
सोच में अबहियों जिए के जोर बा ।।"

ईहे भाव कपिल जी के अंत तक मसिधर्मी बनवले रहल । 'परिन्दा उड़ान पर' आवत–आवत दुनिया के स्वार्थपरता, कुछ लोगन के घात, अकारण तनाव के स्थिति उनुका मन के घवाहिल कइलस । बीस साल तक जवना पत्रिका के सँवारे–बढ़ावे में ई रचनाकार समर्पित रहल, अब अपना मन के ऊहाँ से खींच लिहलस । अपनन के दीहल घाव बड़ा त्रासद होला । कवनो गीत में कहल बा कि "मनमीत जो घाव लगाये उसे कौन बचाये ।" रोकत–रोकत, सहत–सहत कहाइये गइल "देखियो के हम त चुपे रहीं, बाकी कबले चली ई सिलसिला ।

इहे सोच मन के सता रहल, ई जिन्दगी के सवाल बा ।"

सच्चाई त ईहे बा कि कहीं कुछ पीके जीए के बा–

'आँसू के रोकल मुश्किल बा ।
जेकरा बाटे बहे के आदत ।'

अस्सी पार करत–करत एह मनीषी के अस्वस्थता के संगे–संगे विस्मरण के स्थिति भी सहे के परल । अपना लइकी किहाँ से लिखले –राउर लुतुकी पढ़नी । रचना गम्भीर बा । हम पटना आवते एकर समीक्षा लिखब ।' बाकिर कुल्ह भुला जाईं । एगो यात्रावृत्त लिखत रहनी, एगो अपना के समेटत कविता संग्रह तइयार करत रहनी । कहनी कि

www.bhojpurisahityangan.com

'एकर समीक्षा रउआ लिखे के बा ।' बाकिर ऊ पुस्तक हमरा लगे ना आइल, ना समीक्षा लिखाइल ।

हमरा स्मृति–पट पर उनुकर कतना चित्र, कथन जोन्ही नीयर झिलमिलाता । कहे लागब त एगो पुस्तके तेयार हो जाई । एगो घटना बतवला बिना मन नइखे मानत । लिखनी कि इलाहाबाद में 'हमार भगिना हिमांशु बाड़न । हमरा आवे के बा । आइब त राउर दर्शन करब ।' हम मन में प्रसन्न भइनी । जब ऊहाँ के अइनी त झोरा में कुछ किताबो ले अइनी । कहनी कि जइ गो किताब ले आइल बानी ओतना रउओ लिखे के बा ।' हम आश्चर्य चकित रहनी कि सलेटी रंग के पैंट–शर्ट में आइल ई आदमी मन से कतना स्फटिक नियर बा । देखनी त पवनी कि बड़ा मीठ मुस्कान से उहाँ के मुँह चमकत रहे । हम देखते रहि गइनी ।

आजु कपिल जी के कई पत्र हाथ में लेले बानी, जवना में पहिले के मानसिक उल्लास, कर्त्तव्य कइ पवला के संतोष रहल, सितम्बर 2017 तक आवत–आवत काँपत हाथ के साक्षी भरत उदासीनता में नहाइल लउकल । तबे उनुकर एगो पत्र मिलल, जवना में लिखल रहे–

'जासु नाम भव भेषजऽ
हरन ताप त्रय सूल ।
सो कृपाल मोहि तोपरऽ
सदा रहहु अनुकूल ।'

आजु हम प्रणाम के अतिरिक्त उनुका के अवरू का दे सकेनी । पाण्डेय कपिल हमरा स्मृति में सदैव जागृत बानी । 'तेजस्वि नावधीतमस्तु' के पर्याय रूप में ।

–142, बाघम्बरी गृहयोजना
भरद्वाजपुरम्, प्रयागराज–211006

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी के शिखर व्यक्तित्व : पाण्डेय कपिल

—प्रो. (डॉ.) नीरज सिंह

सन् 2006 के पहिले के बात ह । तब वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के स्वरूप काफी बिखरल–बिखल रहे । आज लेखा दुगो परिसर ना रहन स । अधिकाधिक स्नातकोत्तर विभाग जैन कॉलेज, आरा में आ गणित आउर वनस्पति शास्त्र जइसन कुछ विभाग महाराजा कॉलेज में चलत रहन स । गृह विज्ञान महिला कॉलेज, आरा में आ दुनिया के पहिला स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग जगजीवन कॉलेज, आरा में चलत रहे । बाद में एक बेर भयंकर बाढ़ आइल, जवना के चलते आरा शहर के अधिकांश बाहरी हिस्सा पानी में डूब गइलन स । जगजीवन कॉलेज में भी बाढ़ के पानी समा गइल, जवना से भोजपुरी विभाग के बहुते क्षति पहुँचल । विभाग के संस्थापक शिक्षकत्रयी प्रो. रामेश्वर नाथ तिवारी, प्रो. गदाधर सिंह आ प्रो. रामाज्ञा सिंह के सामूहिक संगठित प्रयास से भोजपुरी के बहुमूल्य पुस्तकन के जवन संग्रह भइल रहे, ऊ ढेर दिन तक पानी में डूबल रहल आ ओकरा बाद जब सूखल भी त कवनो काम के ना रहल । अधिकांश किताबन के दीमक चाट घललन सँ । ओह में से कुछ अबहियों भोजपुरी विभाग के पुस्तकालय में बाड़ी सँ, बाकिर नामें के । लाख प्रयास कइला के बादो ओहनी के दीमक से छुटकारा ना मिल सकल, जवना के चलते, अब ऊ कवनो काम के नइखी स । खैर, हमार उद्देश्य एहिजा अपना भोजपुरी विभाग के कथा कहल नइखे । हम बस अतने बतावल

www.bhojpurisahityangan.com

चाहत बानी कि जवना विभाग के स्थापना सन् 1993 में बहुते उत्साह के साथे भइल रहे, ऊ धीरे–धीरे उपेक्षा आ अनदेखी के शिकार होके आपन महत्त्व खोवे लागल । ओइसे त ई विभाग सुरूए से हिन्दी के तीन गो अवकाश प्राप्त शिक्षक लोग के सहारे चलत रहे, बाकिर 1998 के बाद ऊ स्थिति भी ना रह गइल । स्व. प्रो. रामेश्वर नाथ तिवारी जी अपना के व्यक्तिगत कारण से अलग कर लेनी आ रामाज्ञा बाबू अस्वस्थ भइला के वजह से सहयोग करे में असमर्थ हो गइनीं । कुल मिला के नतीजा ई भइल कि सँऊसे बोझा अकेले आदरणीय प्रो. गदाधर सिंह जी के कपारे आ गिरल । बाकिर वाह रे ऊहाँ के हिम्मत, ऊहाँ के हार ना मननी आ अकेले दम भोजपुरी विभाग के गाड़ी सन् 2008 में ओह समय तक खीचत रहनी, जब तक के विश्वविद्यालय उहाँ के विभागाध्यक्ष पद के दायित्व से मुक्त कर के हिन्दी विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष के जिम्मे विभाग के जिम्मेदारी ना सौंप दिहलस । एह तरह से 1998 से 2008 तक स्नातकोत्तर भोजपुरी अध्यापन के सामने उपस्थित होखे वाला सभ चुनौतियन के सामना अकेले प्रो. गदाधर सिंह जी बहुते दृढ़तापूर्वक कइनी, जवना के चलते ऊहाँ के वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा में भोजपुरी भासा आ साहित्य शिक्षा के पर्याय के रूप में स्थापित हो गइनीं । हमार आपन अनुभव ई बा कि सुबह, दुपहर, शाम– जब भी हम विश्वविद्यालय परिसर स्थित ऊहाँ के आवास पर गइनीं, हमेसा एगो–दुगो आदमी के बइठल पवनीं । ओह लोगिन से जब सर (गदाधर बाबू) हमार परिचय करावे लागब त पता चली कि फलनवाँ बलिया से आइल अशोक द्विवेदी जी हवन त चिलनवा धनडीहाँ के बरमेश्वर सिंह जी । कहे के माने ई कि भोजपुरी भासा आ साहित्य से कवनो गहिर लगाव ना रहला के बादो जदि हम वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग के अध्यक्ष बने के पहिले भोजपुरी के चर्चित साहित्यकार लोगिन के सम्पर्क में आ पवनी त ओकर श्रेय कुल मिला के प्रो. गदाधर सिंह आ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जइसन गिनल–चुनल लोगन के ही बा ।

जवना साल स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग अस्तित्व में आइल, संयोग से ओहि साल हमार स्थानांतरण जैन कॉलेज, आरा के हिन्दी विभाग से वीर कुँदर सिंह विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में भइल रहे । तब तक सभ स्नातकोत्तर विभागन में पठन–पाठन आ कार्यालय के काम सुबह साढ़े सात बजे से साढ़े ग्यारह बजे तक होत रहे । स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग तब जैन कॉलेज में ही चलत रहे । ऊ विश्वविद्यालय

www.bhojpurisahityangan.com

परिसर में 2006 के आस–पास स्थानांतरित भइल । जैन कॉलेज से अक्सर कवनो काम से विश्वविद्यालय मुख्यालय में आवे के होखे, त बीचे में गदाधर बाबू के पुरनका आ नयका दुनो आवास पुरनका आवास में गुरुदेव प्रो. दीनानाथ सिंह जी भी साथे रहत रहीं । उहाँ से मिले गइलो प गदाधर बाबू से भेंट होखहीं के रहे । बाकिर जवन वाकया के जिक्र हम आगे करे जा रहल बानी, ऊ गदाधर बाबू के नयका आवास के रहे, जहवाँ हम एकदिन जैन कॉलेज से लवटत दुपहर में गइल रहनी ।

ओह दिन सर (गदाधर बाबू) के घर के बाहरी बरामदा में अउर दिन के अपेक्षा ज्यादा भीड़ उमड़ल रहे। ओहिजा लोगिन के बातचीत के शोर से सामने गुजरे वाला लोगिन के धेयान बरबस ओह तरफ चल जात रहे । हमहूँ ओह दिन सर हियों ना, विश्वविद्यालय में केहू से मिले खातिर जात रहीं । जब सर के बरामदा में लोगिन के जमघट देखनी, तब बरबस गोड़ ठमकि गइल । हम ठहर के ओने देखे के शुरुवे कइनीं तले गदाधर बाबू के नजर हमरा प पड़ गइल । उहाँ के ओहिजे से आदेश दे दिहनी– आई । हमरा खातिर अब ओहिजा जाये के अतिरिक्त कवनो चारा ना रहे । गइनी आ जाके एगो खाली कुरसी प बइठ गइनी । ओहिजा दूगो चेहरा अइसन रहन स, जेकरा से हम पहिले से परिचित ना रहनी । तबहुओं हम सभ लोगिन से परनाम–पाती कइनी । गदाधर बाबू ओह लोगिन से हमार एकतरफा परिचय करा दिहनी– इहाँ के नीरज जी.... पी.जी. हिन्दी में शिक्षक बानीं । आ ओकरा बाद सभ लोगिन के चेहरा प –'अच्छा त इहें के नीरज जी हईं' जइसन भाव आइल आ फेर उहाँ के बतकही आपन पहिलका राह पकड़ लेलस ।

बातचीत के विषय कवनो खास ना रहे । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के स्थिति पर सभ कोई अपना विचारन आ जानकारियन के लेन–देन करत रहे। जतना बुझात रहे, हमहूँ जथा अवसर संक्षेप में आपन बात रख देत रहीं । जवन प्रत्यक्ष ज्ञान कम आ सुनल–सुनावल ज्यादा रहे। गदाधर बाबू के बारे में त हमरा पुरहर जानकारी रहे कि उहाँ के भोजपुरी के बारे में सभका से अधिका जानीलें, जवना के चलते आउर लोगिन जइसन हमरो मन में उहाँ के प्रति पर्याप्त आदर भाव रहे आ जब ओह बतकही के दौरान उहाँ के आपन बात रखे लागीं त हम ओकरा के अन्तिम निष्कर्ष मान के समर्थन में मुड़ी हिलावे लागत रहीं। बाकिर हमरा ई देख के बड़ा अचरज होत रहे कि खुद गदाधर बाबू अपना सामने बइठल आदमी के बातन के बहुते महत्त्व देत रहीं आ उहाँ के बातन के

www.bhojpurisahityangan.com

जस के तस स्वीकार कर लेत रहीं । अब हम तनिका गौर से ओह आदमी के तरफ देखनी । चेहरा मोहरा से उहाँ के बहुत दर्शनीय त रहले रहीं, बातचीत के अंदाजो बहुत संयमित आ गरिमापूर्ण रहे। पहनावा कवनो खास ना रहे । कुरता–धोती प बंडी पेन्हले रहीं। बहुत सहजता से आपन बात राखत रहीं, जवना में आग्रह त रहत रहे, बाकिर दुराग्रह के नामो–निसान ना रहे । चेहरा परिचिताह लागत रहे, बाकिर इयाद ना पड़त रहे कि उहाँ के पहिले कहवाँ देखले बानी । मन में इ भाव आइल कि उहें से पूछल जाव, बाकिर हमरा अपने ई बात सामान्य शिष्टाचार के खिलाफ लागल । बड़ा असमंजस के स्थिति रहे । पता ना कइसे, गदाधर बाबू के हमरा मनःस्थिति के भान हो गइल । बतकही के बीचे अपने उहाँ के हमरा ओर देखनी आ पूछनी–नीरज जी ! रउआ पहिले कबो कपिल जी से भेंट ना ह का ?..... बस अतने से हमरा आगे सउँसे स्थिति एकदम साफ हो गइल । 'जी ना सर'–कह के हम उठलीं आ कपिल जी के पैर छू लिहनी । उहाँ के भी खाड़ गइनी आ अपना अँकवार में भर लेनी हमरा के । हमरा ई एगो रोमांचित हो जायेवाला छन रहे । भोजपुरी भाषा साहित्य के एह शिखर व्यक्तित्व से एह तरह से अचानक भेंट हो जाई, ई हम सोचलहूँ ना रहीं ।

अब एगो नया स्थिति रहे । गदाधर बाबू कपिल जी से हमरा बारे में विस्तार से बतावे लगनी त उहाँ के मुसकइनी, हम नीरज जी से परिचित बानी भाई जी । इहाँ के एक–दू गो कहानियो पढ़ले बानी । बिहार आ बिहार के बाहर इहाँ के के नइखे जानत ? फेर उहाँ के सीधे–सीधे हमरा से कहनी, नीरज बाबू ! हम ई नइखी कहत कि रउआ हिन्दी में लिखल बन्द क दीं, बाकिर ई जरूर कहब कि हिन्दी के संगे–संगे भोजपुरियो में लिखीं । ई हमनी के माई के भासा ह । एकरा खातिर बहुत लोग लागल बा, रउओ लागीं । रउआ सभे जइसन सक्रिय आ दृष्टि–सम्पन्न लोग ना करी भोजपुरी खातिर, त के करी ?

हम आदरणीय कपिल जी के हाथ पकड़ लेनी आ कहलीं कि हम जरूर लिखब सर । राउर सलाह हम आदेश मान के शिरोधार्य करत बानी । आ ओकरा बाद हम उहाँ के बतवनी कि कइसे हम सुरुवे से हिन्दी के साथे–साथे भोजपुरियो में लिखे के प्रयास करत रहल बानी । रेडियो प एगो–दुगो भोजपुरी कहानियो पढ़ले बानीं आ आचार्य विश्वनाथ सिंह जी के प्रेरणा आ प्रोत्साहन से कुछ समीक्षात्मक लेखो लिखले बानी । ओह में एगो भोजपुरी कथा–कहानी के प्रवेशांक में छपलो रहे,

www.bhojpurisahityangan.com

जवन पी. चन्द्रविनोद जी के कहानी संग्रह 'हम कुन्ती ना हईं' के समीक्षा के रूप में रहे ।'

हमार बात सुन के कपिल जी तनिका चिंहइनी –'हम त लेख पढ़ले रहीं, बाकिर ओकर लेखक त केहू अउर रहे ?..... ऊ नीरज सिंह के नाम से त ना छपल रहे ?'

–'जी ना ! रउआ ठीक इयाद बा ।' हम तनिका मुस्कात कहनीं– ऊ लेख हमरा मूल नाम से छपल रहे । बाद में हम अपना एही नाम से लिखे लगनी ।

एकरा बाद वातावरण बहुते सहज आ आत्मीय हो गइल । हमरा लागल, हम दुगो घन–सायादार वृक्षन के शीतल छाँह में बइठल बानीं ।

xx xx xx

जे हमरा के जानत बा, ऊ एह तथ्य से परिचित बा कि हम कबहीं केहू के अनावश्यक प्रशंसा ना करीं, भलहीं ऊ हमार बहुते नजदीकिए काहे ना होखस । हँ, युवा पीढ़ी के रचनाकारन के हम भरपूर प्रशंसा जरूर करेलीं, काहे कि यथार्थ कथन के नाम पर के कटु आलोचना कइला से ओह लोग के विकास बाधित होखे के संभावना रहेला । बाकिर अपना समकालीन मित्र रचनाकार लोगिन के झूठ–मूठ अति रंजित प्रशंसा कइल हमरा स्वभाव में नइखे । एही तरे अपना पूर्व आ वरिष्ठ पीढ़ी के रचनाकार लोगिन के कमजोर कृतियन के आँख मूँद के प्रशंसा हम ना कर सकीले । भलहीं एकरा खातिर ऊ हमरा से हमेशा खातिर अनराजे काहे ना हो जास । असहीं अगर कवनो रचनाकार के रचना हमरा बढ़िया लाग जाला, त हम ओकर प्रशंसा करे में तनिको संकोच ना करीं, भलहीं ऊ हमार परिचित होखस भा अपरिचित, दूर के होखस भा नजदीक के; मित्र होखस भा दुश्मन, उमिर में हमरा से छोट होखस चाहे बड़ । हम मुक्तकंठ से उनकर प्रशंसा करीलें । आ एहिजे हम इहो कहब कि अइसन क के हम केहू प कवनो एहसान ना करीं। एगो श्रेष्ठ रचना के सृजन करेवाला रचनाकार के ई स्वाभाविक हक होखेला । एकरा से खाली ओह रचना आ रचनाकार के प्रशंसा ना होखे, बलुक अपना भासा आ साहित्य के प्रशंसा होखेला । एह से हमनी में से हरेक आदमी के ई काम जरूर करे के चाहीं । जेकर जवन प्राप्य होखे, ऊ ओकरा मिलहीं के चाहीं । आउर लोग एकरा बारे में जेकर जवन राय राखत होखे, हम एह मामला में एकदम स्पष्ट बानीं । अपना व्यक्तित्व आ कृतित्व से, कथनी आ करनी से हमरा के प्रभावित कर लिहलस, ओकरा

www.bhojpurisahityangan.com

आगे माथ नवावे में हमरा तनिको दिक्कत ना होखे । हँ, ई जरूर बा कि हमरा अब तक के जिनगी में अइसनका बहुत लोगिन से भेंट नइखे भइल । बाकिर जतना लोग से भेंट भइल बा, ओह में एगो महत्वपूर्ण स्थान आचार्य पाण्डेय कपिल जी के भी बा ।

पाण्डेय कपिल जी से बहुते कम मिलला–जुलला के बादो उहाँ से हमरा अतना प्रभावित होखे के का कारण बा– उहाँ के भोजपुरी भासा आ साहित्य के विकास खातिर जीवन–पर्यन्त अथक प्रयास कइल; भोजपुरी खातिर अहर्निश जीयल–मरल, अपमानित–सम्मानित भइल आ अन्ततः अपना जिनिगीये में भोजपुरी माई के एगो देखनउग मन्दिर बनवा देबे में सफल भइल । हमरा बात से केहू के एह बात के भरम ना होखे के चाहीं कि कपिल जी सचहूँ कतहीं कवनो मन्दिरो बनववले रहीं का ? ना, अइसन कवनो मन्दिर उहाँ के ना बनववले रहीं । बाकिर हँ, बनववले रहीं जरूर अइसन मन्दिर भोजपुरी माई के जवन कवनो एगो गाँव भा नगर में त नइखे, बाकिर उहाँ के अनथक प्रयास के चलते आज सउँसे भोजपुरी भासी जन–गन के मन–मस्तिष्क में प्रतिष्ठित हो चुकल बा; एगो भव्य मानस–मन्दिर के ग्रहण कर चुकल बा ।

कपिल जी के साहित्य–प्रेम विरासत के रूप में हासिल भइल रहे । दादाजी स्व. पाण्डेय दामोदर प्रसाद सिंह 'कविकिंकर' आ बाबूजी स्व. पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह जी अपना–अपना समय के चर्चित प्रतिष्ठित साहित्यकार रहे लोग । एह साहित्यिक पारिवारिक परिवेश के चलते ना खाली पाण्डेय कपिल जी बलुक उहाँ के दुनो छोट भाई –पाण्डेय सुरेन्द्र जी आ पी. चन्द्रविनोद जी भी भला साहित्य आ संस्कृति के क्षेत्र में प्रवेश कइल लोग आ तीनो भाई आपन स्वतंत्र पहचान बनावे में सफल भइल लोग । जानेवाला जानत बा कि पाण्डेय कपिल जी के परिवार के चउथा पीढ़ी के भी कई लोग आजुओ साहित्य के दुनिया में आपन पहचान स्थापित करे के दिसाईं अग्रसर बा । एह लिहाज से पाण्डेय परिवार के तुलना अगर कवनो दोसर परिवार से कइल जा सकेला, त ऊ बा– सूर्यपुरा के राज–परिवार स्व. राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह जी के परिवार । ओह परिवार के भी चार गो पीढ़ी साहित्य के दुनिया में सक्रिय रहल आ अपना साधना से हिन्दी साहित्य के भंडार के समृद्ध कइलस ।

पाण्डेय कपिल जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व के कम–से–कम तीन गो बहुत चमकदार पक्ष बा । सब से पहिले उहाँ के हिन्दी आ

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के एगो बहुते सफल साहित्यकार रहनी । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी. ए. करे के दौरान उहाँ के बनारस के प्रतिष्ठित साहित्यकार लोगिन के संपर्क में अइनी आ ओह लोगिन से प्रभावित होके साहित्य सृजन के क्षेत्र में कदम रखनी । उहाँ के कई गो साथी–संघतिया लोग आगे चल के हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार भइल । कपिल जी भी पहिले हिन्दिये में लिखल सुरू कइनी । 'हीरे के टुकड़े, फूल और कलियाँ, आभास– ई कुल्हि हिन्दी में लिखल गइल उहाँ के कृति हई स । एकरा अतिरिक्त उहाँ के 1857 में आरा में रहेवाला एगो अंग्रेज से संस्मरण पुस्तक के 'आरा में दो मास' नाम से अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवादो कइनीं । असल में उहाँ के बिहार सरकार के राजभासा विभाग में पहिले अनुवादक के नौकरी कइनीं आ बाद में ओहिजे से उपनिदेशक के रूप में अवकाश ग्रहण कइनीं । अंग्रेजी से हिन्दी आ हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करे के उहाँ के दक्षता के परिचय 'आरा में दो मास' पुस्तक के देखला से सहजे मिल जाला । घर–परिवार आ दोस्त–संघतियन लोगिन के प्रभाव में आके जल्दिये उहाँ के हिन्दी के दामन छोड़ के अपना मतारी के भासा भोजपुरी के ऑचल थाम्ह लिहनी । भोजपुरी में पहिले गीत आ ग़ज़ल लिखे के शुरू कइनीं आ पत्र–पत्रिकन के साथे–साथे रचना गोष्ठियन आ कवि सम्मेलन में जाये लगनी । ओहिजा चर्चित आ सम्मानित भइला के बादो उहाँ के लगातार गजल आ गीत लिखनी । 'भोर हो गइल' उहाँ के शुरुआती दौर के गीत आ गजलन के संग्रह ह । बाद में उहाँ के 'कह ना सकलीं' आ 'परिंदा उड़ान पर' जइसन गजल–संग्रहन के प्रकाशन भइल । 'विविधा', लेखांजलि' आदि उहाँ के गद्य–रचनन के संग्रह हवन सँ । एह सभ कृतियन के साथे–साथे उहाँ के 'फुलसुंघी' नाम के एगो अइसन उपन्यास लिखनी, जवन अपना श्रेष्ठता आ लोकप्रियता के चलते भोजपुरी उपन्यास के विकास–यात्रा में एगो मील के पत्थर के रूप में समादृत भइल ।

एगो बहुआयामी प्रतिभा–सम्पन्न रचनाकार के रूप में कपिल जी के व्यक्तित्व के एगो आउर दमदार आयाम उहाँ के भोजपुरी आंदोलन के अत्यंत सफल आ समर्पित संगठनकर्त्ता रूप बा । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक महामंत्री के रूप में उहाँ के जइसन सांगठनिक ढांचा खड़ा कइनी, ऊ आज भी कवनो ना कवनो रूप में भोजपुरी भाषी प्रदेश में जगह–जगह विद्यमान बा । कपिल जी बाद में एह संगठन के अध्यक्ष भी बनावल गइनी । एह दुनो सर्वाधिक महत्वपूर्ण

www.bhojpurisahityangan.com

सांगठनिक दायित्वन के निर्वाह करे के साथे–साथे सम्मेलन पत्रिका उहाँ के सम्मेलन के मुखपत्र 'भोजपुरी' के सम्पादन–कार्य भी काफी लम्बा समय तक कइनी। हमरा ई कहे में कवनो संकोच नइखे कि आज भोजपुरी साहित्यकाश प चमके वाला अधिकांश महत्त्वपूर्ण सितारा लेखक लोग कपिल जी के चलते ही एह ऊँचाई तक पहुँचल बा । बहुते दिन तक उहों के भोजपुरी आन्दोलन के 'वन मैन आर्मी' के रूप में काम कइनी, जवना के प्रतिफल आंदोलन आज एगो मजबूत राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी के रूप में दिखलाई पड़ रहल बा ।

हमरा समझ से आदरणीय कपिल जी के व्यक्तित्व के तीसरका चमकदार पहलू भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन के क्षेत्र में कइल गइल उनकर काम बाड़न स । अपना प्रकाशन संस्था के माध्यम से उहाँ के जतना प्रतिभावान लेखक लोगिन के प्रकाश में ले अइनी, ओकर कतहीं कवनो जोड़ नइखे । अपना जीवन काल में सइ गो से ज्यादा पुस्तकन के प्रकाशित कइल साधारण बात नइखे, तवना प शायदे कवनो पुस्तक होई जवना के मूल्यांकनपरक दू शब्द उहाँ के ना लिखले होखब । उहाँ के एह प्रकाशकीय प्रयास से भोजपुरी साहित्य के अलग–अलग विधन के ना जाने कतना पुस्तक आ रचनाकार व्यक्तित्व प्रकाश में अइलन । भोजपुरी प्रकाशन जगत के इतिहास में उहाँ के के हमेशा एगो अद्वितीय प्रेरणापुरुष के रूप में इयाद कइल जाइब ।

पाण्डेय कपिल जी के निधन के बाद वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग में एगो स्मृति–सभा के आयोजन भइल रहे । हम ओह सभा में आपन बात राखत उहाँ के भोजपुरी साहित्याकाश के सूर्य कहले रहीं । एकाध जगह अवरू हम इहे बात दोहरवले रहीं। हो सकत बा कि कुछ लोगिन के ई कथन अतिशयोक्तिपूर्ण लागत होखे, बाकिर हम विनम्रतापूर्वक ई बात कहल चाहब कि पाण्डेय कपिल जी भोजपुरी साहित्य आ भोजपुरी आन्दोलन के एगो अद्वितीय शिखर व्यक्तित्व रहनी । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास के दिसाईं उहाँ के द्वारा कइल गइल कामन के अनदेखी कबहीं केहू ना कर सके । जे करी, ऊ बेईमान कहाई ।

वीर कुँवर सिंह नगर, कतिरा, आरा
(बिहार)–802301

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



हम त राही हईं, रुकीं कब ले

—डॉ. सुनील कुमार पाठक

भोजपुरी में लिखे–पढ़े के हमार शुरुआत सन् 1981–82 वं लगभग भइल रहे । राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा में स्नातक प्रतिष्ठा वग। के विद्यार्थी रहनीं आ दू–तीन साल पहिलहीं अभी छपास के बेमारी पकड़ले रहे । 'सारण संदेश' के स्वतंत्रता–दिवस विशेषांक में सन् 1979 में एगो कविता छपला के बाद हमरा जवन चसका लागल, 'प्रतियोगिता–दर्पण' में निबन्ध–प्रतियोगिता के पहिलका पुरस्कार मिलला के चलते ऊ आउरो जोर मारे लागल । सीवान से इंटर कके छपरा अइला के बाद, डॉ. विश्वरंजन, प्रो. हरिकिशोर पांडेय, प्रो. राजेन्द्र किशोर, डॉ. केदार नाथ लाभ, डॉ. वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय जइसन सुयोग्य प्राध्यापकन के मार्ग–दर्शन मिलल तऽ ठीक से साहित्य पढ़े–लिखे के समझदारी जागल । एही बीचे राँची में 'अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन' के 9वाँ अधिवेशन सन् 1985 में नधाइल । एही अधिवेशन के समय 'योगेन्द्र नारायण छात्र निबन्ध प्रतियोगिता' के शुरुआत भइल रहे । हम 'भोजपुरी कविता के सामाजिक पृष्ठभूमि' विषयक आपन लेख भेज दिहनीं । निबन्ध पुरस्कृत भइल आ हम एह प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार

www.bhojpurisahityangan.com

विजेता बन गइनीं ।

पहिल बेर डॉ. वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, श्री रामनाथ पांडेय, प्रो. विश्वरंजन जी आ प्रो. हरिकिशोर जी के साथे तबतक के अपना जिनिगी के सबसे लमहर रेलयात्रा पर राँची खातिर हम निकल गइनीं । ई सम्मेलन हमरा खातिर भोजपुरी साहित्यकारन से मिले आ ऊहाँ सबके दर्शन–सुख पावे के बढ़िया सुअवसर साबित भइल । एह अधिवेशन के अध्यक्षता पं. गणेश चौबे जी कइले रहनीं, ऊहें के हाथे 'योगेन्द्र नारायण निबंध प्रतियोगिता पुरस्कारों' हमरा मिलल रहे ।

'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के राँची अधिवेशने में आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा आ आचार्य पांडेय कपिल जी के पहिल बेर दर्शन के मौका हमरा मिलल । डॉ. वीरेन्द्र नारायण पांडेय जी हमरा के ओह कमरा में ले गइल रहनीं, जहँवा पांडेय कपिल जी ठहरल रहनीं । तब एगो नया डायरी हम खरीदले रहनीं आ उत्साह से ओही में सब नामी–गिरामी साहित्यकार सबसे पुरस्कार मिलला के बाद अपना खातिर राँची में 'शुभकामना' लिखववले रहनीं । हमरा इयाद बा, पांडेय कपिल जी आपन एगो 'मुक्तक' आशीष का रूप में हमरा डायरी में लिख देले रहनीं । मुक्तक रहे–

"आग से जरऽ मत आग से बरऽ
पकला पर सड़ऽ मत पकला पर झड़ऽ
बाँन्ह के मोटरी एह जिनिगी के जीयऽ मत
रो–रो के जीयऽ मत हँसि–हँसि के मरऽ।"

हमरा बुझात बा, पाण्डेय कपिल जी जब भोजपुरी के पुरहर सेवा करिके हँसत–मुसकियात एह धरा–धाम से हमनी से विदा ले लिहनीं, तऽ अभियो ऊहाँ के ई संदेश बेरि–बेरि हमनी के झकझोरते बा कि–

"बाँन्ह के मोटरी एह जिनिगी के जीयऽ मत ।"

मोटरी लेखा बन्हल जिनिगी कवनो जिनिगी ना हऽ, ई कपिल जी के साफ तौर पर बुझा गइल रहे– इहे कारन रहे कि उहाँ के एकदम खुला होके जीयत रहनी, कुछऊ अइसन ना रहे उहाँ में, जवन पढ़ा ना सके, जानल ना जा सके । एकदम साफ–सुथरा रहेवाला इंसान, साफ–सुथरा बतियावहूँ में माहिर ! बाकिर ई खेयाल उहाँ के बराबर राखत रहनीं कि उहाँ के कवनो बानी से केहू का कवनो तरे के नाराजगी भा मनमोटाव ना हो जाव । अपना पीढ़ी के लोग के पूरा आदर आ सम्मान देत रहनीं उहाँके, केहू के कवनो हकमारी ना करत रहनीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी विकास के एगो साफ नक्शा आ 'रोड–मैप' उहाँ के दिमाग में बराबरे तइयार रहत रहे । बहुत लोग ओहू बेरा बहुत कुछ कहत रहे उहाँ के बारे में, बाकिर एहसे कवनो प्रतिकूल असर उहाँ पर ना पड़ल । पांडेय जी भोजपुरी आंदोलन आ रचनाधर्मिता दूनू के एक साथ सधनीं, बड़ा गंभीरता, तटस्थता आ उत्साह भाव से । एह उदारता के उहें के पीढ़ी में आउर दोसर कई लोग में तबो अभाव देखे के मिलत रहे, आजो मिलत बा । पांडेय जी जेतना भोजपुरी खातिर कइनीं, कमे लोग ओतना कर सकल होई, भा कर पाई, बाकिर तबो उहाँ के नकारे के घिनौना काम आजो हो रहल बा, बड़ा बेहयायी से । भोजपुरी आंदोलन आ रचनात्मक अवदान दूनू दिसाईं पांडेय कपिल के सोझा अइचिको ना टिकेवाला कइगो महारथी, कपिल जी के नकारे के फिराक में आजो लागल बाड़ें । इतिहास लिखे के बहाने खिलवाड़ करे में बहुत मजा आ सकत बा, बाकिर पांडेय कपिल के खाली नाम गिनाके नकारल ओछपने मानल जाई । भोजपुरी के महारथी बने खातिर पांडेय कपिल बने के होई, मोटरी खोल के जीये के सलीका सीखे के होई ।

पांडेय कपिल जी से पटना आ पटना के बाहर कई बेर हमरा मुलाकात भइल होई, बाकिर एगो मुलाकात आउरो विशेष हो गइल, चूँकि ओकरा जरिये एगो भोजपुरी आंदोलन के इतिहास रचाइल ।

बिहार सूचना आ जन–संपर्क विभाग में नौकरी मिलला के बाद, हमार प्रथम तैनाती भभुआ (कैमूर) में भइल सन् 1989 में । पांडेय कपिल जी के फरमान मिलल –"ओजवा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के शाखा खोलवा दऽ ।" हम देर ना कइनी । भभुआ हाले जिला बनल रहे। श्री आर.के. श्रीवास्तव जी पहिलका जिलाधिकारी रहलें । 'भभुआ जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के पहिलका अधिवेशन ओजवा 6 जून, 1992 के भइल । 'हिन्दुस्तान' अखबार के ओजवा के तत्कालीन संवाददाता बड़ भाई श्री हरिशंकर तिवारी जी जिला महामंत्री चुनइलें । रात में जिलाधिकारी श्रीवास्तव जी 'कवि–सम्मेलन' के उद्घाटन कइले रहनीं । ओह कवि–सम्मेलन के अध्यक्षता पांडेय कपिल जी कइले रहनीं । युवा कवि रासबिहारी पांडेय के 'सरस्वती वंदना' से शुरू भइल कवि–सम्मेलन देर रात तक चलल । पांडेय कपिल जी का अलावे, रियाज भारती, सिपाही पांडेय 'मनमौजी', रामदीन 'रसिक', चंद्रकांत, डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, सुरेन्द्र सुमन, कुमार विरल (मुजफ्फरपुर), रिपुंजय निशान्त (छपरा), नीरज पाठक आदि कइगो मशहूर कवियन के बिटोर भइल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

पांडेय जी सरकारी नौकरी में रहला के बादो भोजपुरी आंदोलन आ साहित्य–सिरिजना के प्रति बड़ा गंभीर आ समर्पित व्यक्तित्व रहनीं । उहेंके के देखिके सरकारी सेवा में रहला के बावजूदो लिखत–पढ़त रहे के तौर–तरीका आ संचेतना जोगवले रहे के प्रेरणा हमरा में जिन्दा रहल ।

उहाँ के एह धरा–धाम छोड़े के कुछे दिन पहिले इन्द्रपुरी, पटना स्थित उहाँ के निवास पर जाके हम आपन किताब ''छवि और छाप–राष्ट्रीयता के आलोक में भोजपुरी कविता का पाठ'' जाके दे अइनी । किताब देखिके ऊहाँ के बड़ा गदगद भइनीं । कहनीं –''अइसने गंभीर काम करत रहे के जरूरत बा। हम एकरा के पढ़ि के लिखब ।'' महीना दिन बाद दूबेर फोन करके बतवनीं– 'किताब हम लाईन–ब–लाईन पढ़ि गइल बानीं ।' ई बात जोर देके कहनीं । पहिले के लोग ऊपर–झाँपर कुछ ना देखत रहल हऽ । अच्छा लागी तऽ पूरा पढ़ी, ना तऽ किताब कोना में धर दी । ई हमार सौभाग्य रहल कि एह पुरनिया उमिरो में खराब स्वास्थ्य के बावजूदो ऊहाँ के हमार किताब पढ़ि लेहनीं। किताब देत उहाँ के फोटो खिंचववले रहनीं, उहे फोटो उहाँ के हमार आखिरी फोटो बा । किताब पर लिखे के फोन पर कहले रहनीं, लिख ना सकनीं, बाकिर जवन मौखिक प्रतिक्रिया दिहनीं, ओह से मन का संतोष आ प्रेरना जरूर मिलल ।

पांडेय कपिल जी अपना पीढ़ी के रचनाकारन खातिर जेतना सहृदय रहनीं, ओह से कहीं ज्यादा नवकी पीढ़ी के उत्साह बढ़ावे पर ऊहाँ के जोर रहत रहे । 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में पहिल बेर नवंबर 1990 में हमार 'हाइकु' छापत बेरा उहाँ के आदेश मिलल कि भोजपुरी पर पहिलका हाइकु–संग्रह तहरे कलम से जल्दी आवे के चाहीं । उहाँ के इहो फरमाइस हम पूरा कइनी । भोजपुरी संस्थान से ऊहाँ के 43वाँ फूल के रूप में हमार भोजपुरी के पहिलका हाइकु संग्रह 'नेवान' सन् 1993 में छपनीं, जवना के भूमिका सुप्रसिद्ध हाइकुकारे आ दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज के वरीय प्राध्यापक डॉ. सत्यपाल चुघ जी लिखले रहनीं। बाद में 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के एगो विशेषांको पांडेय जी छपनीं, जवना में 150 भोजपुरी हाइकुकारन के हाइकु छपल । एह बात के चर्चा हम खास करके एह मकसद से करत बानी कि साहित्य में कवनो विधा के कइसे स्थापित करे के बा, जमावे के बा– ई पांडेय कपिले जी जइसन दूरदर्शी साहित्यकार के बस के बात रहे। 'भोजपुरी सम्मेलन

www.bhojpurisahityangan.com

पत्रिका' के स्तर जेतना उहाँ के दौर में बनल रहे, ऊ आजो एगो मिसाल बा। कवनो विषय पर कहके, ओह विषय के विशेषज्ञ से लिखवा लिहल –ई उहाँ के चुटुकी के खेल रहे। उहाँ के विरोधियो उहाँ के सृजनशीलता आ जीवंतता के कभियो नकार ना सकल लोग। ई दिगर बात बा कि एह बात के मलाल उहाँ के बराबर बनल रहल कि–

"नइखे जे गोड़ के धोअन हमरा
ओकरो पापी चरण गहे के पड़ल ।"

पांडेय कपिल जी निराला जी अस भोजपुरी के केतना जहर पी के नीलकंठ कमल ई कहत चल गईनीं कि–

"बात आपन खतम करत बानी
बहुत कहलीं जी, अब टरत बानी ।
अइसे त बहुते–बहुत कहे के रहल
जवना खातिर जियत–मरत बानी ।
जाने का का इहाँ अरथ लागे
बस, एही बात से डरत बानी ।
उहो हमरा के गलत बूझेले
बह जिनकर अबो भरत बानी ।
कम–से–कम गलत रउआ मत समझीं
पाँव राउर अबे परत बानी ।
हम त राही हईं, रुकीं कब ले
अब त आपन डगर धरत बानी ।"

पांडेय कपिल जी आपन डगर धर के चल गइनीं, जेतना ले हो सकल, बह भर गइनीं । भोजपुरिहा खातिर "रो–रो के जीयऽ मत, हँसि–हँसि के मरऽ' उहाँ के सीख रहे । नवकी पीढ़ी इहे जीवन–मंत्र ले आजो लड़े–जूझे खातिर तइयार बिया । आज ना काल्ह, पांडेय कपिल जी आ उहाँ के पीढ़ी के भोजपुरी के आउरो भगीरथ सबके सपना एक–न–एक दिन जरूर साकार होई ।

–आवास संख्या जी–3, ऑफिसर्स फ्लैट, भारतीय स्टेट बैंक के समीप, न्यू पुनाईचक, पटना–23, मोबाइल–9431283596

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी के शिखर पुरुष आचार्य पाण्डेय कपिल

—व्यास मिश्र

बेर–बेर हम कपिल जी पर लिखे के सोचत बानी, बाकिर लिखा नइखे पावत । समझ में नइखे आवत कि का लिखीं, कइसे लिखीं, कवन छोर पकड़ के लिखीं । कपिल जी के सहज सनेह प्रेम, लगाव आ अपनापन जवन मिलत रहल, सोचके मन भावुकता से भर जाता आ असहज हो जाता । चित्त स्थिर नइखे हो पावत । अइसन स्थिति से रू–ब–रू भइल बेवजह भी नइखे । बात साफ करे खातिर पीछे पलट के देखे के पड़ी ।

सारन जिला के एगो जुड़वा गाँव बा शीतलपुर बरेजा । कपिल जी के जनममुँई आ हमरो जनम भुंई शीतलपुर ह । गाँव त बड़के बा, बाकिर संजोग बा कि गाँव के पछिमारी टोला में हमनी के घर बा । नागेन्द्र प्रसाद सिंह के भी घर एही टोला में बा । कपिलजी के पुरखा पाण्डेय शीतल सिंह के शाहजहां के समय में मुगल दरबार से कइगो गाँवन के जागीर मिलल त चिरैयाकोट से आके शीतलपुर गाँव बसाके ओहिजे बस गइले । एही बंश परम्परा में कपिल जी के दादा पाण्डेय दामोदर सहाय सिंह कविकिंकर आ उहाँ के पिता पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह रहलीं । कपिल जी के छोट भाई पाण्डेय सुरेन्द्र आ सबसे

www.bhojpurisahityangan.com

छोट भाई चन्द्रविनोद बाड़े । कपिल जी के घर के नॉव बच्चा जी, पाण्डेय सुरेन्द्र के बच्चन जी आ चन्द्रविनोद के ललन जी ह । गॉव में सभे एही नाम से जानेला ।

कपिल जी का परिवार से हमरा परिवार के तीन पीढ़ी से सम्बन्ध चल आ रहल बा। हमरा बाबा का बेर से कपिल जी के पिताजी का साथे सहज अपनापन वाला जवना सम्बन्ध के शुरुआत भइल ओकर निर्वाह आज ले बखूबी होत आ रहल बा । हमार बाबा भा बाबूजी कवनो काम से कपिल जी के पिताजी से मिले जब जाव लोग, तब हमहूँ पाछा–पाछा चल जात रहीं । एह तरे मिले–जुले के सिलसिला चलत रहल । एही बीच में ललन जी (चन्द्रविनोद) से नजदीकी के शुरुआत भइल आ दोस्ती का रूप में बदल गइल, जवन आगे चलके पारिवारिक आ साहित्यिक सम्बन्ध में बदलल । पुस्तकालय से भी हम जुड़ गइल रहीं । हमनी के जैतपुर हाईस्कूल तक साथ ही पढ़ाई–लिखाई भइल । एह बीच में कपिल जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय काशी चल गइलीं आ सुरेन्द्र जी मूर्तिकला के पढ़ाई करे शांतिनिकेतन । बाद में चन्द्रविनोद शांतिनिकेतन से मूर्तिकला के पढ़ाई कइले । बनारस से हिन्दी विषय में एम.ए. करके पचास–पचपन के दशक में पटना आके बिहार सरकार के राजभाषा विभाग में कपिल जी जोगदान कइलीं । पटना आ गइला का बादो कपिल जी के आपन गॉव शीतलपुर से बराबर सम्पर्क बनल रहल । छुट्टी–छपाटी में गॉवें उहॉका चल जात रहीं । गॉव का ओर कपिल जी के खिंचाव के वजह रहे हिन्दी मंदिर शीतलपुर जइसन समृद्ध पुस्तकालय आ घर, टोला–गॉव में साहित्यिक–सांस्कृतिक माहौल, परिवार के साहित्यिक संस्कार आ जड़ से जुड़ाव ।

साहित्यिक–सांस्कृतिक दृष्टि से ना खाली सारन जिला में, बलुक पूरा बिहार में शीतलपुर के विशिष्ट स्थान रहे। एक बेर कौनो प्रसंग में डॉ. प्रभुनाथ सिंह जी कहले रहीं कि जदि शीतलपुर गॉव पर ढेला फेंकी त जरूर कौनो कविए के कपार पर जाके गिरी । हिन्दी मंदिर शीतलपुर के वार्षिकोत्सव में स्तरीय कवि सम्मेलन आ साहित्यिक आयोजन बराबर होत रहे । रामलीला आ नाट्योत्सव भी होखे । कायथांव गॉव सुशिक्षित आ समृद्ध रहे । नाटक के मंचन खुद गॉवें के लोग मिलके करे। बाकिर ओह समय नाटके में लड़की के भूमिका लड़िके करत रहे, लड़की ना करे, कौनो भी नाटक में नारी पात्र के भूमिका कपिलेजी करत रहीं । ओह घरी सारन जिला के मुख्यालय छपरा साहित्यिक सांस्कृतिक

www.bhojpurisahityangan.com

गतिविधि के केन्द्रबिन्दु रहे । उहाँ एगो बहुत स्तरीय नाट्य संस्था रहे, एमेच्योर्ड ड्रामेटिक एसोशियेसन, जवना के संस्थापक आ प्रमुख कर्त्ता–धर्त्ता रहीं भारत के पहिला राष्ट्रपति डॉ. राजेन्दर बाबू के बड़ भाई महेन्दर बाबू । कपिल जी के पिताजी एह संस्था से जुड़ल रहीं । कपिल जी भी ओह संस्था के कार्यक्रम में भाग लेत रहीं ।

शीतलपुर में साहित्यिक आयोजन अकसरहां होत रहे । एक बेर एगो साहित्यिक आयोजन कपिल जी के दादा कविकिंकर जी करवले रहीं । ओह में बड़–बड़ साहित्यकारन के जुटान भइल रहे, जवना में महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आचार्य शिवपूजन सहाय, प्रो. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', रामलोचन शर्मा कंटक जी के अलावे जिला स्तरीय कवि–साहित्यकार आ स्थानीय कवि लोग भाग लेले रहे । एह आयोजन में राहुल जी से जुड़ल एगो छोट संस्मरण बा । बाहर से आइल विशिष्ट साहित्यकार लोग का साथे राहुलो जी कपिल जी किहां ठहरल रहीं । शीतलपुर के बालेश्वर उपाध्याय आजादी के आंदोलन में राहुल जी का साथे छपरा जेल में रहले । सम्मेलन का देसरका दिन सुबह में कपिलजी राहुल बाबा के लेके बालेश्वर उपाध्याय से भेंट करावे खातिर चलले । कपिल जी का आ हमरा घर का बीच में धनेसर बारी के घर रहे । छोट माटी के घर के भुइयां बइठल रहस । धनेसरो राहुल जी का साथे छपरा जेल में रहस, बाकिर राहुल बाबा उनकर नॉव–गॉव भुला गइल रहले । जब कपिल जी धनेसर बारी के पूछले कि 'का हो धनेसर काका, ठीक बाड़S नू ?' धनेसर बारी कहले– 'हँ बबुआ ठीके बानी ।' धनेसरबारी के नॉव सुनते राहुल जी गौर से धनेसरबारी का ओर देख के चिहाके पूछले धनेसरबारी तूंही इउव ?' तबतक धनेसर बारी कपिल जी का ओर से नजर हटा के राहुल जी के चेहरा निहारत कहले "बाबा ! राहुल बाबा हई ?' धनेसर बारी धधा के राहुल बाबा के गोड़ पर गिर गइले । उठके अपना मेहरारू के आवाज देले, "रे, कहां बाड़े रे, जल्दी भीतर से खटिया लेके आव आ देख ई के आइल बा । बंसैखट खटिया उनकर मेहरारू लेके अइली । धनेसर बारी कहले 'इहां का राहुल बाबा नू हई, गोड़ लाग !' धनेसर बारी के खुशी के ठेकान ना रहे । उनका बुझाय जइसे भक्त के भगवान से साक्षात भेंट हो गइल होखे । बाद में राहुल जी कपिल जी के बतवलीं कि धनेसरो जेल में रहल आ हमार बड़ा सेवा करस । राहुल जी जइसन असाधारण व्यक्तित्व वाला आदमी समाज के सबसे साधारण आ उपेक्षित आदमी से मिल के ओकरा के पात्रता देस ।

www.bhojpurisahityangan.com

हिन्दी मंदिर शीतलपुर के परिसर में आयोजित एगो ऐतिहासिक कवि सम्मेलन के चर्चा ना कइल अपराधबोध जइसन लागी । कौनो साहित्य के समझ ना रहे आ ना लिखे के लूर रहे, बाकिर कविता पाठ करत कवि लोग के सुने के चस्का हमरा लाग गइल रहे । एह कवि सम्मेलन में छपरा, सिवान आ स्थानीय कवियन के अलावे पटना से भी कपिल जी कवि लोग के बोलवले रहीं । ओह में हमरा इयाद पड़ता ऊ नाम बा ब्रजकिशोर नारायाण, रामगोपाल शर्मा रुद्र, वासुदेव नारायन आलोक आ प्रो. जगदीश नारायण चौबे । एह कवि सम्मेलन के अध्यक्ष रहीं ब्रजकिशोर नारायन जी । हमरा पूरा–पूरा इयाद बा कि कवि सम्मेलन शुरू होखे का पहिले नारायन जी अपना संक्षिप्त भासन में एगो महत्त्वपूर्ण बात कहले रहीं कि "हिन्दुस्तान में बहुत कम ऐसे गाँव होंगे जिनका नाम वहाँ के कवि के नामपर पड़ा हो और ऐसे गाँवों में शीतलपुर को श्रेय जाता है ।" शीतलपुर गाँव के बसावेवाला पाण्डेय शीतल सिंह खुद कवि रहस । ओही तरफ नारायन जी के इशारा रहे । एह कवि सम्मेलन के एगो खास उपलब्धि रहल, जवन अपना आप में काफी महत्त्व रखता । खास कके भोजपुरी साहित्य खातिर भोजपुरी लोक चेतना के जियतार व्यंग्यकार आ भोजपुरी माटी के सोध गंध में सउनाइल 'सनेहिया' जइसन अमर गीत के रचनाकार पं. रघुनाथ चौबे के एह मंच पर उपस्थिति इतिहास रचेवाला एगो घटना साबित भइल । चौबेजी के कवि का रूप में अपना के सिद्ध करेके ई पहिला मंच रहे । चौबे जी के मंच देबे के श्रेय कपिल जी के रहे । इहे मंच चौबे जी के स्थापित कइलस । चौबे जी के बरेजा से बुलवा के हिदायत कइले कि कवि–सम्मेलन में तहरा रहे के बा । आ सनेहिया सुनावे के बा । कवि सम्मेलन साम के शुरु भइल । कवि सम्मेलन के अध्यक्षता आ संचालन ब्रजकिशोर नारायण जी करत रहीं । स्थानीय कवि लोग के पहिलहीं निपटावे का ख्याल से सरस्वती वंदना का बाद नारायन जी चौबे जी के आवाज देलीं कविता सुनावे खातिर । मंच के अगल–बगल सामने के कपिल जी के मकान के पूरा हाता दर्शक लोग से पूरा भरल रहे । चौबे जी मंचपर माइक के सामने अपना सनेहिया रचना के पृष्ठभूमि बतावत कहलीं कि गाँव के एगो औरत के चिट्ठी बा..... तलेक बीचे में नारायन जी हंसिए में कहलीं कि चौबे जी, यदि कोई प्रेमपत्र हो तो मत सुनाइएगा । खैर, चौबे जी बात पूरा करत कहलीं कि ओह औरत के पाति परदेश गइल बा कमाए आ ऊ ना चिट्ठी–चपाटी भेजता आ ना खर्चा भेजता । एकरा बाद चौबे जी

www.bhojpurisahityangan.com

कविता सुनावे के शुरू कइलीं –"जाइ परदेस पिया घरे बइठाइ गइल
बिरहिन के सुधियो भुलइल सनेहिया ।
बबुनी सेयान भइली, गउवा के भार भइली ।
सिरवा पर ठोन्ना छोड़ि गइल सनेहिया ।।"

जइसे–जइसे कविता आगे बढ़त जात रहे, ओसहीं नारायन जी के तिलमिलाहट बढ़त जात रहे । करुण गीत के दरद उनका के बेधे लागल । उनकर बेचैनी देखत बनत रहे । जब चौबे जी के कविता खतम भइल, तब नारायन जी सनेहिया पर बोलत कहले कि "मुझे नहीं मालूम था कि यहाँ की मिट्टी में चौबे जी जैसे रत्न छिपे हुए हैं ।" एकरा बाद त जहाँ कहीं नारायन जी के अध्यक्षता में कवि सम्मेलन होखे, चौबे जी के जरूर बुलालेस आ मंच पर धीरे से कह देस कि "चौबे जी, मूड बनाए रहिए सनेहिया सुनाने के लिए ।" ओह घरी हमरा कविता लिखे–पढ़े आ सुनावे के तनिको सउर ना रहे, बाकिर एह कवि सम्मेलन से बहुत प्रेरना मिलल ।

शीतलपुर में कपिल जी के जवन पारिवारिक माहौल रहे, ऊ गाँव के आउर कायस्थ परिवार से अलग हटके रहे । कपिल जी के परिवार में साहित्य, कला, संस्कृति, संस्कार आ शिक्षा के एगो प्रभा मण्डल रहे, एगो आकर्षण रहे । जे भी सम्पर्क में जाय, ऊ बिना प्रभावित भइले ना रहे । इनका घर के नौकर तक शिष्ट, सभ्य भा विचारवान रहे । एह परिवार के जीन में कला आ साहित्य रहे । एह परिवार के प्रत्यक्ष भा परोक्ष प्रभाव से गाँव में एगो साहित्यिक जमात खड़ा हो गइल । कुछ लोग अपना प्रतिभा से आ प्रवृत्ति से साहित्य में पैठ बनावल लोग । कपिलजी के परिवार के साहित्यिक परम्परा में पाण्डेय शीतल सिंह, पाण्डेय दामोदर प्रसाद सिंह 'कविकिंकर', पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, पाण्डेय कपिल, पाण्डेय सुरेन्द्र, पाण्डेय चन्द्रविनोद, पाण्डेय नीरज नयन, आ पाण्डेय राजीव नयन (कलाकार) । पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के समकालीन हिन्दी–संस्कृत के विद्वान साहित्यकार–कवि पं. उपेन्द्रनाथ मिश्र 'मन्जुल' जेकर प्रसिद्ध रचना बा 'सीता परिणयम्' (संस्कृत महाकाव्य) 'पराशक्ति श्री सीता और अवतरणभूमि सीतामही' (हिन्दी शोधग्रन्थ आ हिन्दी संस्कृत में दर्जनभर किताब । कपिल जी के समकालीन कवि–साहित्यकारन में राजेन्द्र मिश्र (सारंगशास्त्री), डॉ. महेन्द्र मधुकर, करुणानिधान केशव, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, दूधनाथ राम 'कविजी', यास मिश्र, रामअशीष राम, महिला साहित्यकारन

www.bhojpurisahityangan.com

में सुशीला पाण्डेय, संध्या सिन्हा रामदुलारी, गरिमा बन्धु।

शीतलपुर के साहित्यिक परम्परा के सर्वाधिक आगे बढ़ावे के श्रेय कपिलजी के बा । हिन्दी में इहाँ के चर्चित पुस्तक रहे 'आभास' । बाद में अपना मातृभाषा के सेवा भावना के बदे भोजपुरी में लिखे के शुरू कइलीं त खूब लिखलीं । लगभग हर विधा मे कलम चलवलीं । मौलिक, लेखन, अनुवाद, पुस्तक प्रकाशन सम्पादन, अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, उरेह आ 'लोग' पत्रिकन के सम्पादन, भोजपुरी संस्थान के प्रकाशक का रूप में लगभग सवा सौ पुस्तकन के प्रकाशन, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन जइसन संगठन के स्थापना में प्रमुख योगदान, भोजपुरी आंदोलन के दिशा–निर्देशन, आ भोजपुरी क्षेत्र के राष्ट्रीय स्तर के विद्वान–साहित्यकारन के भोजपुरी आ भोजपुरी सम्मेलन से जोड़े में सभ अद्वितीय आ उल्लेखनीय योगदान बा कपिल जी के ।

कपिल जी भोजपुरी के पीर, बावर्ची, भिस्ती खर रहलीं । जब उहाँ का पत्रिका के सम्पादक रहीं, तब प्रकाशन के सारा काम देहे–जाँगर लाग के अपने करत रहीं । पत्रिका में छपेवाली सामग्री प्रेस में जाके दिहल, प्रूफ देखल, पत्रिका छप गइला के बाद रिक्सा पर लाद के अपना डेरा पर ले आइल डाक से जाए वाली पत्रिकन के रैपर मर ग्राहक संख्या आ नाम–पता हाथ से लिख के पत्रिका के फोल्ड करके रैपर साटके जी. पी.ओ. ले जाके टिकट खरीद के पत्रिकन पर साट के डाक में दिहल–ई सारा काम नियमित कपिल जी के खुदे करेके पड़त रहे । पत्रिका के छपाई में खरचा ना जुट पावे आ दिक्कत होखे त कपिल जी एगो तरकीब निकलनीं कि पत्रिका के हर अंक खातिर दूगो प्रायोजक जुटावल जाय जेकरा से 750–750 रु0 लिहल जाय आ दूनो प्रायोजक के नाम पत्रिका में छपो । ई सिलसिला चलल । बाद में प्रायोजक मिले में दिक्कत होखे लागे, तब अपना सगा–संबंधी के प्रायोजक बनावे के पड़त रहे । एह तरे कठिनाई झेलत कपिल जी पत्रिका के सम्पादन करत रहीं । सेवा आ समर्पन के अद्भुत संगम कपिल जी रहलीं ।

दूगो बड़ा मार्मिक आ अंतरंग प्रसंग बा । कपिल जी के श्राद्ध के दिन अंत में हम भाभी से मिले गइलीं । माहौल बड़ा गमगीन रहे । हम बहुत ढ़ाढ़स बंधवनी आ कहलं कि हम जातानी, बाद में हम फेर आएब । भाभी कहली कि अब केकरा से मिले खातिर आएब । कपिल जी के लड़की अम्बुजा कहली कि तूं नइखू ? तहरा से मिले खातिर आएब । फेर कुछ दिन बाद हम गइनी भाभी से मिले । अम्बुजा भी रहली । हमनी के

www.bhojpurisahityangan.com

बातचीत में कपिल जी के चर्चा होत रहे। भाभी बतवलीं कि एक बेर हम आ उहाँका बइठ के कमरा में दूनो आदमी में बतकही होत रहे। भाभी बतवलीं कि हम उहाँ से पूछ देलीं कि रउआ बहुत लिखलीं आ बहुत लोग पर लिखनी, बाकिर हमरा पर आज ले कुछुओ ना लिखलीं । कपिल जी भाभी से कहलीं कि 'तहरा पर हमरा लिखे के बा आ हम लिखेब, बाकिर लिखे का पहिले आ तहरा के खोले का पहिले हमरा अपना के खोले के पड़ी । जबले हम अपना के ना खोलब, तबले तहरा के ना खोल सकीं ।"

निधन का पहिले एगो लम्बा अर्सा से कपिल जी के स्वास्थ्य ठीक–ठाक ना चलत रहे । उहाँ का मूत्र–दोष आ विस्मृति से ग्रसित रहीं । रात में बेर–बेर पेशाब लागे त बाथरूम जाये के पड़त रहे । इहाँ के नाती अभिषेक बतावत रहले कि नाना रात में उठके नल के पानी पी लेत रही । भुलाएवाली बीमारी अइसन रहे कि थोड़हीं देर के अंतराल में कौनो बात के दोबारा–तेबारा पूछ देत रहीं । 17.10.17 के अभिषेक से कपिल भैया के हालचाल पूछलीं त बतवले कि काल्ह रात में पेशाब करे खातिर उठे का बेरा बिछावन से नीचे गिर पड़लीं आ चोटो लागल आ हड्डी भी टूटल। पाटलीपुत्र रूबन हॉस्पीटल में उनका के भर्ती करावल रहे ।

अभिषेक आ कपिल जी के दुसरकी बेटी तूली बतावल लोग कि आई.सी.यू. में देखे गइला पर उहाँका खिसिया तानी । चश्मा, सेफ्टीरेजर आ कागज–कलम मांगतानी । खैर, हम गइलीं । कम्पाउण्डर आवाज देलस कि बाबा आँख खोलिए, आपसे मिलने कोई आया है । हम तबीयत का बारे में पूछलीं । उहाँका बतवलीं, तबीयत त पहिले से कुछ ठीक बा । देखऽ ना व्यास जी । ओकनी के कागज, कलम, चश्मा, आ दाढ़ी बनाने के सेफ्टीरेजर मांगतानी त नइखनसन ले आवत । कुछ–कुछ लिखे के मन करता आ दू–ढाई सौ गजल छपवावे के बा । हम कहनी कि ठीक हो जाएब त राजीव जी के छापे के दिया जाई । हम कहके लवट अइलीं कि फेरु हम आएब । डॉक्टर के अनुमति का बाद 1 नवम्बर, 2017 के कपिल जी इन्द्रपुरी के अपना आवास पर हॉस्पिटल से लौट के आ गइलीं । ठीके ठाक रहीं । कपिल जी का घर पर आवे का एक दिन पहिले राजीव जी कपिल जी के भोजपुरी दोहा संग्रह 'साँस चलत जबले रहे' छपल किताब के बण्डल दे गइल रहले । 2 नवम्बर के सुबह में कपिल जी के पत्नी किताब के बण्डल कपिले जी का हाथ से

www.bhojpurisahityangan.com

खोलववलीं । अपना पत्नी के अलावे जे–जे उहाँ रहे, समे के एक–एक प्रति कुछ–कुछ लिख के आपन हस्ताक्षर का साथे बाँट देले । सब कुछ सामान्य रहे । दिन में हल्का भोजन भी उहाँका कइलीं । शाम के लगभग चार बजे तबीयत बिगड़ल आ शाम के हिन्दी तिथि के अनुसार बैकुण्ठ चर्तुदशी के परिंदा अपना अंतिम उड़ान पर उहाँ पहुँच गइल, जहाँ से फेरु ऊ लौट के ना आई । उहाँ के निधन के बज्राघात लागत रहे, सब कुछ लुटा गइल । आदमी सोचेला का आ हो जाला का ?

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः ।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हऽत हन्त नलिनीं गज उज्जहार ।।

कपिल जी चलत–फिरत भोजपुरी के इतिहास रहले, जे तीन पीढ़ी के साथ लेके चलत रहले । कपिल जी भोजपुरी लिखत ना रहले भोजपुरी जीअत रहले ऊ भोजपुरी के पर्याय रहले । कपिल जी भोजपुरी के अइसन सिद्ध साधक रहले जे हॉस्पिटल में जिन्दगी आ मौत से जूझत रहले । तबहूँ कागज–कलम आ लिखे खातिर छपिटात रहले । भोजपुरी माई का मंदिर में अपना साधना के समिधा से कपिल जी जे जोत जरवले ऊ अनबरत अखंड जरत रही, कबो बुताई ना । कपिल जी के दिवंगत आत्मा के श्रद्धावनत शत–शत नमन !

–शीतलपुर, भाया–बरेजा, सारन

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी के अमर साधक : पाण्डेय कपिल

—डॉ. बलराम दूबे

भाषा लोगन के पहिचान ह आ साहित्य समाज के विकास आ सम्पन्नता के मानक आधार । अपना भाषा खातिर आठो पहर तत्पर जवन समाज रहेला, ओकरे सामाजिक उत्थान आ साहित्यिक सोच केहू के अपना ओर खींचेला । सही मायने में भाषा जन–मन के आस ह । जीवन के विश्वास ह आ साहित्य समाज के संरचना ह । भाषा जेतने रसगर, मजगर आ चोखगर होई, ओह भाषा साहित्य ओतने रुचिगर, मनगर आ भवगर होला । एही से साहित्य में समाज के देखल सम्भव होला । साहित्य से समाज के संस्कार, विचार आ लोक व्यवहार के थाह लागेला । इहे कारण रहल कि भोजपुरी के समर्थ लघुकथाकार, रसगर कहानीकार, सफल सम्पादक आ मनगर समालोचक पाण्डेय कपिल के साहित्यिक यात्रा हरमेसा भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सबल आ सक्षम बनावे खातिर अझुराइल मिलल । पाण्डेय कपिल के एह बात के आभास रहे कि जब ले भोजपुरी भाषा के अपनन के बीच मान–सम्मान ना मिली, तबले भोजपुरी साहित्य के मनभावन पसराव ना हो सकेला । ई त सही ह कि भाषा बहता नीर ह, लेकिन एह बहता नीर में प्रवाह, गति भा यति

www.bhojpurisahityangan.com

ना होई, तबले समय के मार के आगा बहाव शिथिल पड़ जाई । सूख जाई । लयहीन हो जाई । एही से पाण्डेय कपिल के एह आह्वान के कबो ना भुलाये के चाहीं –"कवनो भाषा आ साहित्य खातिर दू चीज के बड़ा महत्त्व होला । पहिला ई कि ओह भाषा के राजाश्रय प्राप्त बा कि ना ? आ दोसर ई कि जन–मन में ओकर लोकप्रियता कतना बा ।" जहाँ ले भोजपुरी भाषा के सम्बन्ध बा, त ऊ ताल ठोक के कहला में कवनो परहेज नइखे कि एह दूनो आधार पर आजुले भोजपुरी कोसो दूर बिआ । आज तक भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ना त कवनो राजाश्रय मिलल आ नाहीं भोजपुरी भाषा–भासियन के मन में तनिको अपना भाषा खातिर हुलास जागल ।

एगो सच्चाई इहो बा कि जवना बात के जीकिर पाण्डेय कपिल करत रहनी, "आजादी के बाद एगो किरिन लउकल कि अब भोजपुरी भाषा पर भोजपुरियन के मन अगराई आ भोजपुरी इलाका के रचनाकार अपना भाषा में साहित्य के बढ़न्ती करी लोग । बाकी एहिजो हाथ खालिए रहल । कपिल जी बड़ा चतुराई से एकर विश्लेषण करत भोजपुरिया समाज के सावधान करत एह अभाव के कारण के सबके सोझा रखे के प्रयास कइनीं । उहाँ के कहनाम रहे कि भोजपुरियन के जीवन सदा से अभाव में रहल । मर–मजदूरी खातिर पूरबी बनिजिया जाये के परल । कमाये धमाये खातिर हिन्दी के उपयोग कइल गइल । आ परदेशी कहावे में तनी छाती उतान होखे लागल । लोगन के बुझा गइल कि भोजपुरी अपनन में बोलचाल के भाषा ह । एक समय त अइसन आइल, चाहे आजुओ देखे के मिल रहल बा कि भोजपुरिया परिवार जे आन शहर आ नगर में रहिके अपना बाल–बच्चन के शिक्षित बनवले बा ऊ लोग भी अपनन में भोजपुरी के प्रयोग करे में मन ही मन झेंप जाला लोग । ध्यान से देखल जाव त कमाई के चलते भोजपुरी परिवार के तीन हिस्सा हो गइल बा । एगो गाँव के रहनिहार, दोसर शहर के कमासुत आ तिसरका शहर में रहि–पढ़ि के शिक्षित बनल परिवार । तीनों के सोच में अतना मनभेद भइल कि आपन भाषा अपने घर में लोराये लागल । आ ओने भोजपुरी लेखन में एगो तनाव बढ़ल कि लिखब त छापी के, छपी त किनी के आ किनी त पढ़ी के । लिखनिहारन के आगा अन्हरिया छाये लागल । एहिसे भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर सामाजिक उपेक्षा के दबाव हमेशा से बनल रहल । एह दबाव से आजुओ भोजपुरी सोरहो आना उबरल नइखे ।

www.bhojpurisahityangan.com

एकरा के उबारे आ सँवारे खातिर सामाजिक आ राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता चाहीं, तबे ई भाषा भारत के दोसरन भाषा से हाथ मिला के कदम ताल कर सकेले । भोजपुरी के अपना बल–बूता पर सजावे आ सँवारे खातिर पाण्डेय कपिल के सफल प्रयास आज उहाँ के ना रहला पर संजीवनी के काम कर रहल बा। भोजपुरी के समग्र विकास खातिर सबसे बड़ अभाव भा पेंच कहल जा सकेला । अपना राजनेतन के । भोजपुरी क्षेत्रन के राजनेतन के मन में शुरू से भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर तनिको लाग–लगाव नइखे । एह लोग के उपेक्षा आ उदासीनता जग जाहिर बा । चुनाव के बेरा दाँत–चिआर के आ भोजपुरी में हथजोड़ भा पवलगी कइके आपनवाली त क लेता लोग आ ओकरा बाद 'ए छूँछा तोके के पूछा' वाली बात लउके लागता, जब कि स्वाधीन भारत में आज तक जवनन भाषा के संविधान के अष्टम् अनुसूची में स्थान मिलल बा ओमे हिन्दी के छोड़ दिआव त कवनो दोसरा भाषा के बोलनिहारन के संख्या भोजपुरियन से कम बा । आज भोजपुरी भाषा–भाषियन के संख्या लगभग तीस करोड़ के आस–पास त होइबे करी । एकरा साथे–साथ विदेशन मॉरिशस, फिजी, गुआना, त्रिनीदाड, सूरीनाम में भी बोलल जाला । बाकी अभी ले तकाई लागल बा । एह ताक–झाँक से काम ना चली । एकरा खातिर भोजपुरिया समाज के अपना मान–सम्मान के साथ अपना भाषा के बढ़न्ती खातिर एकजुट होके आगे आवे आ बढ़े के पड़ी । कहल गइल बा– 'मंगला से भीख ना मिले' । ईहो बात सही बा कि एह माटी के लाल भिखारी ठाकुर अपना बल पर भोजपुरी के अनगढ़ हीरा कहइलन । इनका साहित्यिक अवदान पर पाण्डेय कपिल के मन हमेशा हुलसित रहल । पाण्डेय कपिल भिखारी ठाकुर के माटी के लाल आ भोजपुरी के भाल कहिके वन्दन, अर्चन आ नमन कइले बानी ।

पाण्डेय कपिल सजग प्रहरी भाव से भोजपुरिया परिवार के अपना भाषा के हक–हिस्सा खातिर जन–मन में जागरण के भाव जगावे के आह्वान कइनी । जब तक अपना भाषा खातिर जन–जन में जन जागृति ना आई, तबले सब कइल–धइल बेकार कहाई, सबसे पहिल मतदान आ जनगणना के समय भोजपुरियन के तत्पर रहे के परी । जइसे हवेली बनावे के बेरा नेव पर ध्यान दिहल जाला, ओसहीं भाषा के सबल आ सशक्त स्थापना खातिर मतदान आ जनगणना नेव के ईंट कहल गइल बा । मतदान के समय मतदाता ओकरे के वोट देस जे उनका भाषा के हितैषी आ प्रेमी होखो आ जनगणना के समय मातृभाषा

www.bhojpurisahityangan.com

के स्थान पर निछोही धावे भोजपुरी के लिखावस । देश चल रहल बा आज वोट से आ समाज बन रहल बा जनगणना से । तबे नू कुछ लेाग कह रहल बा– जेकर जेतना गिनती भारी, ओतना ओकर हिस्सेदारी ।' ई संख्या आ हिस्सेदारी जनगणना से ही पूरा होला ।

एकरा के सफल आ सबल बनावे खातिर भोजपुरी के सपूत पाण्डेय कपिल हमेशा कहीं –''भोजपुरी के सवाल राजनीति से ऊपर बा । जब तक नेतन के ई मालूम ना होई कि भोजपुरी के नाम पर भी वोट के बाजार बन बिगड़ सकेला तब तक ऊ लेाग हमनी के आगा–पाछा हुंकारी ना भरी लोग ।'' उहाँ के विचार रहे कि भोजपुरी के सवाल के निर्वाचन के मुद्दा बनावल जाव । एगो राह देखावत–देखावत पाण्डेय कपिल अपना जीवन काल में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के मान–पहचान दिआवे खातिर देश के सोझा एगो माँग पत्र लिखलन । ई माँग जतने निमन बा ओतने जरूरी बा– 1. सविधान के अष्ट्म सूची में भोजपुरी के स्थान, 2. साहित्य अकादमी में भोजपुरी के मान्यता, 3. भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास खातिर योजनाबद्ध प्रयास, 4. विद्यालय से विश्वविद्यालय स्तर तक भोजपुरी क्षेत्र में भोजपुरी के अध्ययन अध्यापन, 5. लोक सेव आयोग में भोजपुरी भाषा आ विषय के रूप में स्वीकृति, 6. दूरदर्शन अ आकाशवाणी में भोजपुरी के यथोचित समावेश आ कार्यक्रम, 7. विदेशन के विश्वविद्यालय जहाँ भोजपुरी बोलल जाला, में अध्ययन, अध्यापन आ शोध कार्य, 8. भोजपुरी के विकास में लागल संगठन आ संस्थान के सरकारी अनुदान आ सहयोग, 9. भोजपुरी भाषी क्षेत्रन में शिक्षा के बहुविध विकास के प्रयास । साँच कहीं त ई कवनो माँग ना ह । कवनो भाषा आ साहित्य के समग्र विकास के मानक आधार ह । जब तक अइसे ना सराहल जाई, तब तक कवनो भाषा के ना त विकास होई आ ना ओकर साहित्य अजर–अमर हो सकेला । भाषा आ साहित्य के अजर अमर बनावे खातिर सबसे पहिले जन के मन में अपना भाषा के प्रति लगाव चाहीं । ई लगाव तब अउरी मनगर कहाई, जब विद्यालयन में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू होखो आ पढ़निहारन के मन में भोजपुरी खातिर मनजोगावन लगाव होखो । ई लगाव जइसे–जइसे बढ़त जाई, ओइसे–ओइसे भोजपुरी भाषा के फइलाव बढ़त–चढ़त महाविद्यालय से विश्वविद्यालय तक पहुँची । ई होई त ई लगाव धीरे–धीरे पसरत, फुलात, फरत छतनार होत जाई । आज बिहार के कई विश्वविद्यालयन– डॉ. भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर, वीर कुँवर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

विश्वविद्यालय, आरा, जय प्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा, के संगे–संगे नालन्दा विश्वविद्यालय में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के अध्ययन–अध्यापन के काम मनगर भाव से हो रहल बा। शोध के काम भी मजे में हो रहल बा । शिक्षा के रूप में होखत एह फइलाव के असली महत्व आ मान तब होई, जब एह लोगन के सरकारी सेवा में जगहा मिली । काहे कि शिक्षा के महत्व पहिले जीविका से ऑकल जाला, ओकरा बाद ज्ञानवर्द्धन खातिर जानल जाला । पढ़ाई के फल कमाई ह । जहिया भोजपुरी आजीविका के सबल आधार बनी ओही दिने एकरा धार–प्रवाह के केहू ना रोक सकेला, एकरा खातिर भोजपुरी क्षेत्रन के सरकार के ई दायित्व बनता कि सरकार अपना लोक सेवा आयोग में भोजपुरी के स्थान देके अपना सोच के साकार करो । ई सबके दायित्व ह ।

सही में दायित्व त केन्द्र सरकार के संगे–संगे बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्यप्रदेश में फइलल विशाल भोजपुरी क्षेत्र में आकाशवाणी आ दूरदर्शन केन्द्रन में भी बन रहल बा कि लोक जीवन के अनुपम रंग–ढंग, जीवन–शैली, गीत–संगीत, लोक संगीत आ लोक साहित्य के स्थायी कार्यक्रम के माध्यम से अपनावल जाव । भोजपुरी कार्यक्रम में भोजपुरियन के भागीदारी होखे के चाहीं । भोजपुरी के नाम पर अकट–बकट परोसला से काम ना चली । ना एमें कवनो हिताई कहाई ना कवनो सच्चाई बा । सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक कार्यक्रम के मानक रूप प्रस्तुत कइल उपयोगी आ निमन कहाई । आज तक जोरुआ बटोरुआ के लेके खानापूरी से काम ना पूरा होई । एकरा के मन से करे के काम बा । भोजपुरी के एह साधक के इहे सोच रहे –"जब ले भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के सही पहिचान ना बनी, तबले एह क्षेत्रन के जन–मानस के विकास ना हो सकेला ।" अतना कहला–गुनला के बाद पाण्डेय कपिल सच्चाई से उपाय बतावे में कबो केहू से पीछे ना रहनीं । ताल ठोक के ललकरनी –"भोजपुरियन के जागे के परी । उठे के परी । आगा बढ़े के परी । ओकरा अपना आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आ भाषिक हक के लड़ाई लड़े के परी । सरकार चाहे ऊ पटना–लखनऊ के होखे भा दिल्ली के, ओकरा आँख में अंगुरी कके ई बतावे के परी कि एह देश के सबसे बड़ संख्या में बोले वालन के सम्मान देबे के परी ।

ई ह भोजपुरी के सनगर मरद, सबल साधक आ अमर आराधक

www.bhojpurisahityangan.com

के संकल्प, जेकरा चलते भोजपुरी के फइलाव आ रसगर साहित्य के विकास भविष्य में हो सकेला । काहे कि आजुओ कुछ नककटुअन आ दुधकटुअन के इहे कहनाम बा कि भोजपुरी में ना त कवनो साहित्य बा, ना भोजपुरी में कवनो अगहर लउकत बा । कहे में का लागता । घर–घर में बाड़न बिकरम राजा, सब केहू बा अपना मन के राजा । आज भोजपुरी साहित्य के लहलहात फुलवारी देखते जिअरा जुडात बा । कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, व्यंग्य, यात्रा–वृतांत, आलोचना–समालोचना, लघुकथा के रूप–सरूप में भोजपुरी साहित्य देश के कवनो भाषा आ साहित्य से कवनो हिसाबे उनइस नइखे । लोक जीवन से जनजीवन तक आ खेत–खरिहान से लेके लोक संस्कृति तक सबके दर्शन करावे में भोजपुरी साहित्य अपना गोड़े–हाथे सक्षम बा । एकरा साहित्य के इतिहास अपना अँचरा में एगो अमनन्त–यात्रा के लेखा–जोखा देबे में भुवनमोहिनी बनल पुरहर आ दमगर भाव से फइल रहल बा । आज भोजपुरी के साहित्य–साधना में लागल साहित्य सेवकन के चलते एकर रूप अतना चमकदार, असरदार आ चटकदार लउकत बा कि भविष्य झलक रहल बा ।

पाण्डेय कपिल के एक बात के अउरी दुख रहे कि कुछ लोगन के ई विचार रहे कि क्षेत्रीय भा लोकभाषा के विकास से हिन्दी के विकास में बाधा आई । ई सोच सोरह आना गलत बा । सही बात ई कहल जा सकेला कि आज हिन्दी के राह में रोड़ा अंग्रेजी बिआ, हिन्दी के असली सवत त अंग्रेजी ह । अंग्रेजी आ अंग्रेजिअत के बढ़त प्रभाव असली चिन्ता के कारण बन रहल बा । हिन्दी के हिमायती लोगन के ओह सब क्षेत्रीय भाषा के विकास से कबो घबड़ाये के जरूरत नइखे । याद रहे, क्षेत्रीय भाषा के शब्दन से हिन्दी के शब्द–सागर भर रहल बा । भाषा जेतने फइले ले, ओतने ओकर छाप असरदार होला । आज भोजपुरी भोजपुर के ना, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड के इलाकन के जन–मन में सरस भाव से रचल–बसल ऊ भाषा ह, जवना के रूप में निखार आ रहल बा। भोजपुरी माटी के शृंगार आ जीवन के आधार ह, एकरा के मानक रूप में सहजता से अपनवला के काम बा, भाषा जेतने सरस, सरल आ सहज होले, ओकर फइलाव ओतने मजगर, दमगर आ रसगर होला । अब फेंका–फेकी से काम ना चली । एकरा के अपनवला के काम बा । भोजपुरियन के विश्वास, भोजपुरी बोलनिहारन के आस आ भोजपुरी साहित्यकारन के प्रयास जब तक बनल रही, तब तक पाण्डेय कपिल के

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी प्रेम कबो अकारथ ना जाई ।

आज पाण्डेय कपिल सदेह हमनी के बीच नइखीं, बाकी अपना रचना–लोक में हमेशा उहाँ से भेंट त होखी । अपना लेखन के बल पर पाण्डेय कपिल अपना साहित्य में चाँद–सुरुज निअर चमकत रहब । भोजपुरी के एह संत के शत–शत नमन ।

फूलन में जबतक गंध रही, मन–आँगन में सुखद बसंत रही ।
भोजपुरी के एह साधक के, शब्दन में सत्य अनन्त रही ।।

–2 सी– 3–182, बोकारो इस्पात नगर, बोकारो

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



दीया बुताइल, इँजोर दे गइल

—ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी

भोजपुरी माटी के सपूत आ शब्द–शिल्पी पाण्डेय कपिल भीखम दादा के रूप में आपन पहचान दे के एह महामयी जगत से आपन नाता–जोत तूर के अनन्त लोक के बासी हो गइले । ई कहल ठीक होई कि नश्वर जीवन से आपन संघत निभावत जेतना बन सकल, हमनी खातिर अनमोल खजाना छोड़ के भोर के तरई मानिन्द देह त्याग कर देले । एह दुनिया में रहके जे अपना घर–परिवार, समाज आ देश खातिर कीमती थाती छोड़ जाला, ओकरे गुन गवाला । बढ़िया काम के बखान आ जबुन कारज के निन्दा होखेला । राम–कृष्ण, बुद्ध–महाबीर चाहे नामी–गिरामी कवि, कथाकार, समाज–सुधारक, बिग्यानी देश–भक्त के आजु तक गीत गवाला आ जबले इन्सानियत रही तबले गवाई ।

आज भोजपुरी साहित्य के पहिला दर्जा के कवि उपन्यासकार, कथाकार आ गजल–गायक पाण्डेय कपिल जी के बारे में कुछ जरूरी उपयोगी आ इयाद करेवाला कार्य–कलाप के चरचा कइला के बाद ओह अमर काव्य–शिल्पी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि आ सरधा प्रकट कइल जरूरी बुझाता । एह महामानव से मिले के हमरा बहुत कम मौका मिलल । आज से चालीस साल पहिले सन् 1978 ई. में भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

नाटककार मित्र श्रीनिवास मिश्र के संगे उनका निवास पर मिले के संजोग जुटल रहे । इन्द्रपुरी, पटना के आवास में सबसे पहिले भेंट भइल । उहे निवास उनका जीवन के आखिरी साँस तक उनकर स्थायी बसेरा रहल । बातचीत के सिलसिला में जब तत्कालीन शाहाबाद जिला के सहसराम से कवनो चालीस किलोमीटर के दूरी पर अवस्थित अपना गाँव के नाँव बतवलीं त झटसे पं. हवलदार त्रिपाठी के नाम लेके आपन निजी भातृत्व प्रेम के चरचा छेड़ देले । ई जान के कि पं. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' अपने परिवार के पितृतुल्य अग्रज बाड़न, उनका भीतर सहसा स्नेहिल भाव जाग उठल । सहृदय जी के अनुज वाला आत्मीय संबंध जान के पाण्डेय कपिल जी गद्‌गद् हो गइले । मिसिर जी के बारे में उनके गाँव के राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित सूर्यपुरा राज हाईस्कूल के सम्मानित शिक्षक पं. जगदीश शुक्ल के बारे में भातृत्व संबंध के जानकारी मिलते उनकर खुशी के ठेकाना ना रहे । बाल्मीकीय रामायण आ श्रीमद्‌भागवत पुराण के प्रखर कथावाचक राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह के अन्यतम सहयोगी के रूप में विभीषण की शरणागति, राम के प्रेम की महत्ता आ अशोक बाटिका में सीता जइसन कालजयी रचना के उद्‌गाता शुक्ल जी आ 'गंगा नदी की धार और कछार' के भगीरथ त्रिपाठी जी जइसन विद्वत प्रेमी के दूनो आत्मीयजन के अपना बीच पाके सचमुच पाण्डेय कपिल जी निहाल हो गइले । पहिले भेंट में अतिना नजदीकी हो गइल कि उनका तरफ से हमनी के बहुत आशीर्वाद आ प्रोत्साहन मिलल । अपना तरफ से हर संभव शिष्टाचार के निर्वाह में कवनो कोताही ना भइल ।

दूसर मुलाकात भोजपुरी अकादमी के कार्यालय में भइल रहे, जहवाँ 'सहृदय' जी निदेशक के पद प कायम रहीं । पाण्डेय कपिल ओह अकादमी के एगो सम्मानित सदस्य रहीं। त्रिपाठी जी जइसे हमरा बारे में परिचय देबे के चहलीं, ओइसे उहाँ के मुस्कुरा के कह देलीं– बाबा ! राउर छोट भाई से हम बहुत पहिले से परिचित बानी । इहाँ का संगे पं. जगदीश जी शुक्ल के गँवई एगो होनहार नाटककार श्रीनिवास मिश्र से भी मिल चुकल बानी । भोजपुरी साहित्य के प्रचार–प्रसार में दूनो लोगन के सराहना करत नवोदित उदीयमान व्यक्तित्व के आगे बढ़े के मंगलकामना कइलीं । साँच पूछीं त ओह बखत भोजपुरी में हमार कवनो रचना प्रकाशित ना भइल रहे । कुछ गीत, गजल, स्तुति आ लोक भजन कापी पर टाँकल रहे । उहाँ के एहबारे में जानकारी करावे प बहुत प्रोत्साहन

www.bhojpurisahityangan.com

मिलल रहे । सचमुच उनका से मिल के हमरा रोईया रोईया में भोजपुरी के तार–तरलूम आपन झनकार देल शुरू कर देलस ।

भोजपुरी के भीखम दादा पाण्डेय कपिल जी के पूरा नॉव कपिल देव नारायण सिन्हा रहे । साहित्य रचना में पाण्डेय कपिल के नाम से सबकुछ लिखल गइल । 25 सितम्बर 1930 में इनकर जनम सारण जिला के शीतलपुर बरेजा नामक उर्वर माटी में भइल रहे । ओह गॉव में पाण्डेय सुरेन्द्र, डॉ. वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, व्यास मिश्र, पी. चन्द्र विनोद जइसन साहित्य–आराधक के भी हिन्दी आ भोजपुरी में रचना भइल बाटे । डॉ. अर्जुन तिवारी अपना भोजपुरी साहित्य के इतिहास में एह लोगन के विधिवत चरचा कइले बाड़े ।

पाण्डेय कपिल के पिताश्री पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह भी हिन्दी आ भोजपुरी के एगो चर्चित रचनाकार रहसु । योग्य पिता के योग्य संतान के रूप में पाण्डेय कपिल भोजपुरी साहित्य जगत में ढेर यश अर्जित कइलीं। अइसे हिन्दी कविता–संग्रह 'आभास' के सन् 1956 में प्रकाशन भइल रहे जेह में इनकर हिन्दी में कुछ कविता छपल रहे । पीछे चलके अपना माई के बोली भोजपुरी में लिखे–लिखवावे के नशा सवार हो गइल ।

प्रकाशित ग्रंथ– सन् 1971 में भोजपुरी गीत संग्रह 'भोर हो गइल' के प्रकाशन भइल । एह में तीन गो गजल सामिल रहे, जवन बाद में स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित भइल ।

पाण्डेय कपिल के एगो आंचलिक उपन्यास 'फुलसुंघी' सन् 1977 में छपल रहे । एह रचना के अतिना मॉग भइल कि दूबारा सन् 1980 में दूसर संस्करण निकाले के पड़ल । 'फुलसुंघी' के भीतर के कुछ बानगी–

'ए जी ! जिरिया त मिलते नइखे ।'

बाबू हलिवन्त सहाय जम्हाई लेत मुस्कइले– "हूँ ! जिरिया नइखे मिलत ? त छोड़ जिरिया के गुलजारी । ऊ अब तोहरा कहॉ भेंटाई ? पॉव जामल चिरई लेखा उड़ गइल होई । आ गुलजारी, ई काहे भुला जात बाड़ू कि ऊ रंडी के लउँड़ी ह ।"

"चुप !" कड़कत आवाज में डपटली गुलजारी बाई ।" पृष्ठ 48

सन् 1977 में प्रकाशित ई आंचलिक उपन्यास अपना शिल्प आ कथ्य दूनू खातिर एगो बेजोड़ कृति बा, जेवना में इतिहासपरक तथ्य, किंवदन्ती, लोकगीत, लोकजीवन आ अंचल विशेष के पुट देके पाण्डेय

www.bhojpurisahityangan.com

कपिल जी द्वारा सचमुच कालजयी रचना लिखाइल बाटे । भारतीय वाङ्मय के कवनो भाषा के उपन्यास के तुलना में ई अतुलनीय बा । कथा के रूप–विन्यास आ सिलसिला अतिना कलात्मक लागता कि एकबेर शुरू कइला प बिना पूरा कइले एह उपन्यास के बीच में छोड़ल ना जा सके । महेन्दर मिसिर, हलिवन्त सहाय आ रिवेल साहेब जइसन पात्रन के अलावे पलटुआ, जिरिया आ बुलाकी के समान छोट–मोट चरित्रन के रुचिगर ढंग से उकेरल गइल बा ।

इनकर गजल–संग्रह 'कह ना सकलीं' सन् 1995 में प्रकाशित भइल । एगो दोहा–संग्रह 'जीभ बेचारी का कही' सन् 2004 में निकलल रहे, जेकर खुशबू ढेर दिन तक भोजपुरी जगत में आपन सिक्का जमा के पूरा यश अर्जित करे में सफल भइल । दिसम्बर 2001 ई. में भोजपुरी संस्थान से एगो बढ़िया गजल–संग्रह 'परिन्दा उड़ान पर' प्रकाशित भइल । एह पुस्तक के भूमिका भोजपुरी के चर्चित कवि आ कथाकार बड़हरा (भोजपुर) निवासी सत्यनारायण जी लिखले रहसु । एह पुस्तकन के कुछ पाँती ध्यान से देखीं–

कबतक ले पोसले रहब मन में माया मोह ।
आखिर एक–न–एक दिन होइबे करी बिछोह ।।
जोड़ सके ना छंद जे ऊ का तूड़ी छन्द ।
लिखे गद्य कविता कहे, लय विहीन मतिमन्द ।।

xx xx xx

अब त दिल सबसे नरम भइल बाटे ।
दर्द समूचा हद से गुजर गइल बाटे ।।
छन में कुछ अउर कुछ भइल छन में ।
मन में कुछ अउर कुछ भइल तन में ।।
का बताईं कि दिल के जरल का हऽ ।
का ह अमरीत गरल ऊ का हऽ ।।

xx xx xx

मन में आउर बा जीभ पर आउर ।
नीक लागे कहाँ कहीं मगर बाउर ।।

कार्य–सम्पादन– पाण्डेय कपिल हिन्दी में एम.ए. तक पढ़ल रहसु । बिहार सरकार के राजभाषा विभाग में साधारण कर्मचारी से तरक्की पाके उपनिदेशक पद से अवकाश ग्रहण कइले । अपना रचना से ज्यादा रचनाकार के प्रोत्साहित करे आ भोजपुरी के अलख जगावे में

www.bhojpurisahityangan.com

इनकर सहयोग ना भुलावल जा सके । समय–समय पर विचार–गोष्ठी, भोजपुरी–सम्मेलन आपन लेखन के मदद से नवका कवि कथाकार आ पाठक के तइयार करे में इनकर विशेष योगदान रहल ।

अनेक गुमनाम कवि, रचना, कथा–कहाउत आ मुहाबरा के संग्रह करे में इनकर सहयोग ना भुलावल जा सके ।

भोजपुरी साहित्य के इतिहास लेखन में डॉ. उदय नारायण तिवारी, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, श्री दुर्गाशरण सिंह, रास बिहारी पाण्डेय, पं. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. राजेश्वरी शाण्डिल्य, डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित', डॉ. गदाधर सिंह, महेश्वराचार्य, डॉ. नागेन्द्र प्रसाद सिंह, अखिलेश्वर सिन्हा आ पत्रकारिता जगत के स्वनामधन्य विद्वान आ इतिहास लेखक डॉ. अर्जुन तिवारी के सहयोग करे में पाण्डेय कपिल के मदद ना भुलावल जा सके ।

सन् 2004 ई. के अप्रील अंक 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में पाण्डेय कपिल सम्पादित 'एक मुट्ठी लाई' लघुकथा–संकलन के समीक्षा डॉ. विजय बलियाटिक कइले रहसु । सन् 2005 के अप्रील अंक में पाण्डेय कपिल के दोहा–संग्रह 'जीभ बेचारी का कहीं' के समीक्षा प्रो. रामदेव शुक्ल कइले बाड़े ।

सन् 1988 में पाण्डेय कपिल के सम्पादन में 'दस रतन' छपल रहे, जेकर शोधात्मक महत्व बा ।

सन् 1975 ई. में पाण्डेय कपिल आ नागेन्द्र प्रसाद सिंह के सम्पादन में 'लोग' त्रैमासिक के प्रकाशन भइल । तीन अंक निकलला के बाद नागेन्द्र प्रसाद सिंह सन् 1977 में नाम बदल के 'भोजपुरी उचार' के प्रकाशन शुरू कइले । बाद में कुछ अंक निकल के बन्द हो गइल । ओही साल 'गोहार' नामक पत्रिका भी आरा से राकेश कुमार सिंह निकलले ।

अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के पहिला अधिवेशन प्रयाग में 8–9 मार्च 1975 में भइल ।

अध्यक्ष– डॉ. उदयनारायण तिवारी, महामंत्री– पाण्डेय कपिल, दूसरा अधिवेशन पटना में 15–16 मार्च 1976 में भइल, अध्यक्ष– डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, महामंत्री– पाण्डेय कपिल,, पन्द्रहवाँ अधिवेशन– गाजीपुर 6–7 अप्रील 1996, अध्यक्ष– पाण्डेय कपिल, महामंत्री– कृष्णानन्द 'कृष्ण' ।

एही अधिवेशन के साथे भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एगो

www.bhojpurisahityangan.com

कालखण्ड पूरा हो गइल । आचार्य पाण्डेय कपिल के योगदान खाली नीति नियामक के ना रहल, बलुक भोजपुरी साहित्य–सम्मेलन के हर सफलता–असफलता के जमा पूँजी के दायित्वबोध भी खुद धारण कइले रहसु ।

बाबू जगजीवन राम, जयप्रकाश नारायण, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन आ बिहार के ढेर मुख्य मंत्री के संगे आत्मीयता में पाण्डेय कपिल दूध में पानी के समान फेंटाइल रहसु ।

राष्ट्रपति पद से अवकाश ग्रहण कइके डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पटना सदाकत आश्रम में रहे लगले । उनका पास प्रायः मिल–जुल के राज्य आ देश के विषय में चर्चा करे खातिर पाण्डेय कपिल बराबर चहुँपत रहसु ।

शरशय्या पर उतरायण सूर्य के प्रतीक्षा में जइसे भीष्म पितामह मृत्यु के टारत रहले, ओइसे भोजपुरी भाषा के अष्टम सूची में स्थान दिलावे के आसरा में भीखम दादा के पुरनका खेमा के महामानव पाण्डेय कपिल जी भी बाट जोहत रह गइले । केन्द्र सरकार के इशारा पाके उनका भीतर मातृभाषा के कल्याण के आश्वासन पर आपन नश्वर देह त्याग के अनन्त लोक के वासी हो गइले ।

ओह भोजपुरी माटी के सपुत के यादगार में हमार ई मार्मिक श्रद्धाभाव से भरल स्मृति शब्द चित्र समर्पित बा ।

जटा भोजपुरिया माटी, दिन–दिन करे उछाह जीवन में ।
जबले सूरज चाँद रहे, चमकत रहे रोशनी दे भुवन में ।।

–बाबा सदन, रामनगर कॉलोनी, चास (बोकारो)

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



सरलता, सहजता के जीवन्त मूर्ति : कपिल जी

—मार्कण्डेय शारदेय

पाण्डेय कपिल जी के आगे पुण्यश्लोक जोड़त गजिबे लागत बा । बाकिर दिव्यलोकी होखला से उहाँ का अपना यशः शरीरे से नू एहिजा बानीं । भर्त्तृहरि जी कहलहूँ बानी–

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कविश्वराः ।
नास्ति तेषां यशः काये जरा मरणजं भयं ।।

अर्थात् रस में पगाइल ओह कवियन के जय होखे, जेकर यश रूपी शरीर बुढ़ापा आ मृत्यु से दूर रहेला ।

दुनिया में केहू भा कुछुओ अइसन नइखे, जे मृत्यु देवी से बचि जाउ । आजु ना त काल्हु ऊ उठाइये ले जइहें । जे मरियो के जीये, ओकरे जीयल जीयल ह ।

कपिल जी अपने खातिर ना; साहित्य देवता खातिर, भोजपुरी माता खातिर आ साहित्यकार बंधुअनो खातिर जीयत रहलीं । उहाँ का राजभाषा विभाग पटना में उपनिदेशक रहलीं, बाकिर सहित के भाव से अतना ओतप्रोत रहलीं कि एगो छोटो साहित्यसेवी उहाँ के पास चलि जाउ त अपनत्व से ओकरा के खींच लेत रहीं ।

बात 1983 के ह । हम भोजपुरी में 'पाशुपत–प्राप्ति' (खण्ड काव्य) लिखले रहीं । जब पाण्डुलिपि पर सम्मति खातिर कविवर विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' के पास गइलीं त उहाँ का आपन सम्मति देला के बाद यशस्वी साहित्यकार रासबिहारी राय शर्मा जी से भी अभिमत लेबे के परामर्श कइलीं। एके गाँव के बात रहे। हम ओही घरी ऋषितुल्य शर्मा जी किहाँ पहुँच गइलीं । अस्सी ऋतुअन के षट्चक्र से तपल साधुवृत्ति के कारण सस्नेह बइठा के पढ़लीं आ टटके आपन शुभाशंसा लिख देलीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

देखीं, सत्संगति कइसे–कइसे जोड़त जाले । उहाँ का कहलीं जे रउआ पटना जाईं त श्रीरंजन सूरिदेव, रामदयाल पाण्डेय आ पाण्डेय कपिल जी से भेंट करबि । युवा मन उत्साह से भर गइल । कुछे दिन बाद हम पुरनका सचिवालय में स्थित राजभाषा विभाग में पहुँच गइलीं । कपिल जी अपना चेम्बर में श्री कृष्णानंद कृष्ण आ श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी के साथे बइठल रहलीं । शर्मा जी के नाम लेके आपन परिचय देलीं त उहाँ के स्नेहपूर्वक बइठवलीं आ हमार काव्य सुनलीं । उहाँ का छपवावे के उपायो सुझइलीं, बाकिर हम सफल ना हो पइलीं । खैर, ई प्रथम साक्षात्कार रहे । बाकिर उहाँ के मुँहे आपन कृति के प्रशंसा सुनि के संतुष्टि मिलल आ लेखन में गतियो आइल । ओही साले हमार एगो लेख 'कवि, कविता आ काव्य' भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के अक्टूबर (शायद) अंक में छापि के मनोबलो बढ़इनीं ।

दुसरका संक्षिप्ते भेंट हमरा डुमराँव में कवि–सम्मेलन में भइल । ओह घरी साहित्यिक बंधु श्री रामेश्वर चौधरी के प्रशंसनीय प्रयास से महाकवि रामदयाल पाण्डेय के साथे पटना के कतने शीर्षस्थ कवि पधरले रहीं सभे । ओही में हमार भोजपुरी कविता–संग्रह 'गठरी' के रामदयाल जी के कर–कमलन से लोकार्पनो भइल रहे । कवि–वृन्द में बइठल कपिल जी के ओर हमार ध्यान ना गइल, बाकिर उहाँ के तुरते बोला के अपना सौहार्द्र से हमरा के सुगन्धित आ आर्द्र कर दीहलीं ।

1994 से हम पटने रहे लगलीं त सान्निध्य–सुख में वृद्धि भइल ।

हम एगो व्यक्ति के रूप में पाण्डेय जी के सदा सरल आ सहज पइलीं । उहाँ के रचल साहित्यो खूब पढ़लीं, ओहू में व्यक्तित्व के जवन सुगन्धि रहल, ऊ समाइल रहे । साहित्य–सृजन एगो अलग काम ह आ संगठन चलावल अलग । बाकिर कुशल, कर्मठ, जुझारू, दूरदर्शी आ परिपक्व लोगन खातिर कुछुओ असंभव आ बेमेल ना होला, पाण्डेय कपिल जी के देखिके हमरा अतने बुझाइल । भोजपुरी के उत्थान में उहाँ के योगदान के कबो भुलाइल ना जा सकेला । उहाँ के कीर्ति खाली कृतियन से ना, सम्पादकीय कौशलो से सदैव पसरल रही आ उहाँ का अमर रहबि– कीर्तियस्य स : जीवति ।

–पाटलिग्राम अपार्टमेंट, बजरंगपुरी, गुलजारबाग,
पटना–7, मो0 : 9835202448

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



संत सुभाव के साहित्यकार : पांडेय कपिल

—दिलीप कुमार

ओह बेरा हम पटना में अपना आवास पर पढ़ाई–लिखाई संबंधी कुछ काम करत रहलीं, तलक अचानक फोन के रिंग बाजल, देखलीं त डॉ. आसिफ रोहतासवी साहब के कॉल रहे । रिसीव कइलीं, आवाज आइल कि –'दिलीप जी, कहवाँ बानीं ? कपिल जी त अब ना रहनीं । हम अबहिये उहाँ के अंतिम संस्कार से वापस लवटल बानीं ।' अतना सुनते कि माथा ठनकल । ई का भइल । भोजपुरी के ई केकर नजर लागि गइल बा जे एक–एक करके सभे दिग्गज ओराइल जात बाड़े । फेनु बाद में महामाया बाबू आ अउरी सभ लोगन से बात भइल । देखते–देखत मुँहा–मुँही आ सोशल मीडिया पर भोजपुरी के एह संत–मनीषी के महाप्रयाण के खबर छा गइल । अखबार में सूचना आइल । उहाँ के व्यक्तित्व आ कृतित्व के लेके आलेख अइले स । अनेक जगहन पर कवि–साहित्यकारन के जुटान होखे लागल । शोक–सभा मनावल गइल । पटना में बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ भवन में एगो वृहत्त शोक–सभा के आयोजन भइल, जवना में हमरो भागीदारी रहल ।

पांडेय कपिल जी से हमार परिचय त बहुते बाद में भइल, लेकिन उहाँ का भोजपुरी लेखन से हमार जुड़ाव काफी पहिले हो चुकल रहे । एगो विषय के रूप में भोजपुरी से हमार जुड़ाव तब भइल, जब हम इंटरमीडियट के छात्र रहीं । साहित्य आ संस्कृति से हाईस्कूल से ही

www.bhojpurisahityangan.com

रुचि रहला का कारन किताबन के खरीदे, पढ़े आ संग्रह के शौक मन में रहे । एही दौरान हमरा कपिल जी के उपन्यास 'फुलसुंघी' हाथ लागल । पूरा पढ़ि गइलीं । लेकिन बाद में भोजपुरी विषय में ऑनर्स करत खानि एह उपन्यास के महत्व समझ पवलीं। फेनु आगे चलके एम.ए. के पाठ्यक्रम में भी ई उपन्यास पढ़े के रहे । अपना कथ्य आ शिल्प दूनूँ के दिसाई 'फुलसुंघी' आजुओ भोजपुरी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का रूप में लोकप्रिय बा । एह उपन्यास के सन् 1980 ई. में 'भोजपुरी अकादमी पुरस्कार' आ 1990 ई. में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन 'अभय आनंद पुरस्कार' से सम्मानित कइलस ।

कपिल जी के पुस्तकन से पहिले उहाँ का लेख आ कविता से परिचित भइल रहीं। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के नियमित गाँहक रहीं। मनीआर्डर से वार्षिक शुल्क भेज देत रहीं आ डाक से ससमय पत्रिका हमरा घरे पहुँच जाय । किताबन का तुलना में कपिल जी के हम सबसे जादे पत्र–पत्रिकन में छपल उहाँ के रचनन से समझ पवलीं । एह तरे उहाँ से हमार वैचारिक जुड़ाव काफी पहिले से रहे ।

बात ओह समय के ह । जब हम भोजपुरी विषय में स्नातकोत्तर कक्षा के छात्र रहीं । ओह बेरा भोजपुरी विषय में एम.ए. के पढ़ाई के व्यवस्था एकमात्र वीरकुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा में भइल रहे । नया विश्वविद्यालय स्थापित भइला गुने एकर जादेतर विभाग कवनो ना कवनो स्थानीय कॉलेजन में रहे । भोजपुरियो के पढ़ाई के व्यवस्था जगजीवन कॉलेज के कैम्पस में कइल गइल रहे । तब प्रो. (डॉ.) गदाधर सिंह विभाग के अध्यक्ष रहीं । उहाँ के निर्देशन में भोजपुरी विभाग के शोधकर्त्ता पन्नालाल प्रसाद चौरसिया से हमार परिचय भइल । चूँकि विश्व में पहिला बेर स्नातकोत्तर स्तर के पढ़ाई आ शोध के व्यवस्था एह विश्वविद्यालय में भइल रहे, एह से चौरसिया जी भोजपुरी विषय लेके विश्व के पहिल पी–एच.डी. उपाधि पावेवाला व्यक्ति भइलीं । एम.ए. अंतिम वर्ष के परीक्षा समाप्त भइला का बादो शोधकार्य के इच्छा के लेके आरा में हमार रहल होत रहे। विश्वविद्यालय के सत्र के अनियमितता के लेके हम ससमय पंजीकृत ना हो सकलीं। आरा प्रवास के दौरान घरे (बेतिया, प. चम्पारन) आवत खानि एक बेर चौरसिया जी के साथ हो गइल । उहों के घर (अरेराज, मोतिहारी) गंगा पारे रहे । हमनी दुनूँ आदमी के पटना से हाजीपुर आके गाड़ी पकड़े के रहे । ओही जतरा के दौरान पटना में पांडेय कपिल जी के निवास स्थान इन्द्रपुरी जाये के मौका लागल । कपिल जी से ई हमार पहिल भेंट रहे । उहाँ का बारे में जेतना सुनले

www.bhojpurisahityangan.com

रहीं, ओह से बेसी पवलीं । बिल्कुल सरल, सहज आ संत सुभाव के व्यक्ति । हमरा तनिको ना बुझाइल कि उहाँ से हमार ई पहिल भेंट रहे । अपनापन के अइसना भाव केहू संत हृदय के मनीषी में ही देखे के मिल सकेला । सुभाव से जेतने सरल, विचार से ओतने स्पष्ट । ओह समय हमरा आग्रह पर उहाँ के कई गो भोजपुरी में छपल पुस्तक बिना मुनाफा के कम दाम पर दीहलीं, जवन बाद के दिनन में हरमेसा खातिर काफी उपयोगी साबित भइल । फेनु त आवे–जाये के सिलसिला चल पड़ल । एगो अभिभावक के रूप में उहाँ का आपन सही सुझाव देत मार्गदर्शन करत रहीं । इहे वजह बा कि उहाँ के छाया में केतने नवयुवक भोजपुरी के ओर आकर्षित भइले आ भोजपुरी में सृजनशील होत एकरा आंदोलन के झण्डा आगे बढ़ावे में जी–जान से लगलें ।

एक बेर के घटना ह । हमरा 'भोजपुरी पत्रकारिता' के लेके कुछ सामग्री के जरूरत रहे । हम उहाँ का पास गइलीं । उहाँ का कई गो संकेत आ सुझाव का साथे 'परास' पत्रिका के संपादक आ पटना सायंस कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक डॉ. इन्द्रनारायण सिंह उर्फ आसिफ रोहतासवी से मिले के कहलीं । साथ ही, मिले जाये खातिर उहाँ के डेरा तक पहुँचे के पूरा नक्शा हमरा सोझा राखि दिहलीं । दरअसल उहाँ के एगो लमहर आलेख 'परास' के प्रवेशांक में छपल रहे, जवना से हम लाभ ले सकत रहीं । उहाँ का बतवला का अनुसार हम अपना गंतव्य पर पहुँच गइलीं । कपिल जी के अनुशंसावाली बात सुन के डॉ. आसिफ साहब हर तरह से मदद करे के बात कहलीं ।

पाडेय कपिल जी अपना जिनिगी में निरंतर सृजनशील रहीं । चाहे पद्य होखे भा गद्य– दूनूँ में उहाँ के लेखनी निरंतर प्रवहमान रहल । जॉन जेम्स हॉल्स के पुस्तक 'टू मंथ्स इन आरा' के हिन्दी अनुवादो 'आरा में दो मास' नाँव से कइलीं, जवन काफी चर्चित रहल । अपना जीवनकाल में अनेक पुस्तक आ पत्र–पत्रिकन के संपादनो कइलीं । सन् 2011 ई. में इहाँ के ग्रंथ 'विविधा' छप के आइल, जवन पत्र–पत्रिकन में निरंतर लिखल संपादकीय टिप्पणियन के दस्तावेज–स्वरूप बा । एह पुस्तक के समीक्षा हम कइले रहीं, जवन 'विविधवर्णी विविधा' नाँव से 'गदहपूरना' (बक्सर) के प्रवेशांक में छपल रहे ।

कपिल जी के गिरत स्वास्थ्य के लेके मन में एगो डर त रहबे कइल । साथ ही, भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति आ संगठन का दिसाईं लमहर चिन्ता के भी सवाल रहे । हम उहाँ के एगो साक्षात्कार लेबे के मन बनवलीं। ओह बखत उहाँ का अपना बेटी के इहाँ ए.जी.

www.bhojpurisahityangan.com

कॉलोनी, पटना में रहत रहीं । हम उहवाँ पहुँचलीं । बातचीत का क्रम में उहाँ के हमरा सभ सवालन के जबाब देत जात रहीं । बीच–बीच में स्मृति–भ्रंश के स्थिति में दुहराव से तारतम्यता भंग होत रहे, तबो उहाँ का हमरा सभ सवालन पर बेबाकी से बात करत रहीं । हम ओह सभके अपना अनुसार नोट करत जात रहीं । उहाँ के निधन के उपरांत भोजपुरी के तिमाही पत्रिका 'परास' में ओह साक्षात्कार के जगह मिलल ।

28–29 दिसम्बर 2013 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पच्चीसवाँ अधिवेशन पटना में आयोजित करे के तय भइल । एह आयोजन में पांडेय कपिल जी के ले आवे आ ले जाके पहुँचावे के जिम्मा हमरा के सउँपल गइल । गाड़ी के इंतजाम रहे । आयोजन के दिन जब हम गाड़ी लेके उहाँ के बेटी के घरे पहुँचलीं त उहाँ का पहिलहीं से तइयार इंतजार करत रहीं । आयोजन में मंच से उहाँ के भाषण अतना संतुलित आ सुस्पष्ट रहे कि श्रोता सभे काफी प्रभावित भइलें। उहाँ के स्वास्थ्य के प्रतिकूलता केहू महसूस तक ना कर पावल । दोसरका दिन उहाँ के कवि सम्मेलन के अध्यक्षतो कइलीं ।

कपिल जी में एगो बहुत बड़ खूबी रहे कि उहाँ के अपना जिनिगी का आखिरी क्षण तक अपना के लेखन–कार्य से जोड़ के रखले रहीं आ अपना ताजा रचनन के विभिन्न पत्र–पत्रिकन में भेजतो रहीं । उहाँ के निधन के एक सप्ताह पहिले उहाँ के आखिरी पुस्तक 'साँस चलत जबले रहे' छप के आइल ।

हिंदी से अपना लेखन के शुरुआत करेवाला पांडेय कपिल जी बाद के दिनन में पूरा तरे भोजपुरी के हो गइल रहीं आ आखिरी साँस ले बखूबी एकर निर्वाहो कइलीं । लेखन आ सम्पादन का साथे भोजपुरी संगठन के एगो मजबूत स्तंभ का रूप में एकरा आंदोलन के नया दिशा आ गति देत रहलीं । उहाँ के निधन से भोजपुरी जगत के अपूरणीय क्षति भइल बा । भोजपुरी खातिर उहाँ के हृदय में जवन प्रेम, श्रद्धा आ सपना रहे ओकरा के साकार करे खातिर उहाँ के सही मूल्यांकन जरूरी बा। नइकी पीढ़ी में उहाँ के विचारन के फइलाव जरूरी बा । उहाँ के किताबन के सही जगह पहुँचवला आ ओहन पर चर्चा आदि के जरूरत बा, ताकि आवेवाली पीढ़ी ओह से प्रेरित होत अपना के गतिमान बना सके ।

–द्वारा नागेन्द्र पंडित, ग्राम–बगही बढ़ैया टोला, थाना+पोस्ट–बैरिया, जिला–प. चम्पारण, –845438

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी के मजबूत स्तम्भ : पाण्डेय कपिल

—प्रो. अरविन्द कुमार वर्मा 'अरविन्द'

पश्चिम चम्पारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पुनर्गठन सन् 1985 ई. में जब होखे जात रहे, तवने बेरिया के बात हवे कि हम बेतिया से डॉ. अखिलेश्वर प्रसाद 'अखिलेश' (बेतिया) के संगे परमश्रद्धेय पाण्डेय कपिल जी किंहा पटना प्रवास निवास पर गइल रहनी । कारण ई रहे जाये के कि पश्चिमी चम्पारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पुनर्गठन विधिवत ढंग से करावे वास्ते काहे ना एकरा खातिरा पहिले पाण्डेय जी से सम्पर्क कइ लिहल जाय । डॉ. 'अखिलेश्वर' जी के ई सुझाव रहे कि जवन भोजपुरी सम्मेलन मंच हमनी के खड़ियावत बानीं, ई काम पाण्डेय कपिल जी के उपस्थिति में होखे त बहुत बढ़िया रही । बेतिया के भोजपुरी भाषा के कवि साहित्यकार आ प्रेमी अनुरागी लोग से भी ई सहमति मिलले कारन अइसनका सुयोग बइठल कि हमनीं दुनूँ जने पटना पहुँच गइनीं । ई बात हवे जून 1985 ई. के । लगभग 5 बजे शाम के बेरा में हमनीं उहाँ के डेरा पर पहुँचनीं, ओतनी बेरा पाण्डेय जी अपने दरवजे पर कुछ भोजपुरिया कवि साहित्यकार प्रेमी लोगन के साथे विराजत रहनीं । हमरा से उहाँ का परिचय ना रहे, बाकिर डॉ. 'अखिलेश' जी उहाँ के पुरान परिचित रहनी । जाते मातर उहाँ के हमनीं के तुरंत

www.bhojpurisahityangan.com

बइठवनी आ हाल–चाल करे लगनी । डॉ. अखिलेश जी से हमरो बारे में उहाँ के विधिवत परिचय आ जानकारी लिहनी । तुरंत पहिले शरबत, नमकीन आ वोकरा बाद चाय आइल । चाय के चुसुकी लेत तब उहाँ के आवे के प्रयोजन हमनीं से पुछनीं । वोतनी बेरा संयोग से उहाँ के पिताजी पाण्डेय जगन्नाथ आ छोट भाई पाण्डेय सुरेन्द्र जी से भी हमनीं के मुलाकात भ गइल । पाण्डेय जी वोह सब से हमनी के परिचय करवनी । इहो सब बड़ा खुश भइनीं ई जान के कि इहो सभे बेतिया के भोजपुरी से जुड़ल लोग बानीं । पाण्डेय कपिल जी के बात व्यवहार देख के हम दंग रह गइनी । गजब के मुलायम व्यक्ति उहाँ के रहनीं, का कहे के । भोजपुरिया संस्कार आ स्वभाव के धनी व्यक्तित्व के स्वामी पाण्डेय जी के सोझा हमनी के काफी तृप्त हो गइनीं ।

पाण्डेय जी तत्कालीन बिहार राजभाषा विभाग के उपनिदेशक रहनी । बातचीत के सिलसिला में उहाँ के हमनी से डिटेल बतकही करे लगनी, हमरा अइसन बुझात रहे बहुत बढ़िया जगहे वाला हितैषी में हमनीं पहुँच गइल बानीं । जेतना सोंचले ना रहनीं, वोकरो से अधिक व्यवहार कुशलता हम उहाँ में पवनीं । खैर, कुछ कारण वश उहाँ के बेतिया ना पहुँचे के आपन लाचारी बतवनीं आ जिला स्तर के सम्मेलन के आदेश आ सुझाव उहाँ के दे दिहनीं । वोतनी बेरा उहें अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रहनीं । एह नाते उहाँ से अनुमति लिहल जरूरी रहे कि बेतिया में जवन पश्चिम चम्पारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से गठन होखे, वोकर लिंक अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से हो जाय आ इहे भइल । पश्चिम चम्पारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन सन् 1954 ई. में भइल रहे । वोकर अध्यक्ष भवानी प्रसाद जायसवाल जी रहनीं । वोह समय में लोहा सिंह डॉ. रामेश्वर सिंह 'काश्यप' जी आइल रहस आ उहाँ के देख–रेख में लोहा सिंह नाटक के मंचन भी भइल रहे । पश्चिम चम्पारन के धरती पर भोजपुरी के एगो आपन इतिहास बा । इतिहास के आगे बढ़ावे में पाण्डेय जी से एगो महत्वपूर्ण सहयोग बाद में भी लगातार मिलले के कारन इहाँ भोजपुरी लहलहाये लागल ।

दूसरका बार, 'फुलसुंघी' भोजपुरी 'उपन्यास जवना के रचइता उहें के रहनीं आ पाण्डेय सुरेन्द्र के रचल ई हरनाकुस मन' । ई दुनूँ पुस्तक लेबे वास्ते हम उहाँ किंहा गइल रहनीं; काहे कि ई दुनूँ पुस्तक वोह बेरा बी.ए. के सिलेबस में रहे (बिहार यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर) ।

www.bhojpurisahityangan.com

पाण्डेय जी से किताब लेत बतकही के क्रम में हम उहाँ से कहले रहनीं कि अपने साक्षात् भोजपुरी के प्रेमचन्द बानीं । राउर 'फुलसुंघी' पढ़ला पर लागेला कि सामने टी.वी. चल रहल बा । प्रेमचन्द जी के त हम नइखीं देखले, बाकिर ऊ दर्शन लाभ रउरा के देख के हमरा मिले लागेला । एपर उहाँ के ठठा के हँसले रहनीं आ हमार करेजा गद्गद् हो गइल रहे । एकरा बाद उहाँ से बहुते विद्यार्थी मिलल रहे । हमरा फिर मिले के सुयोग ना मिलल, ई आपन दुर्भाग्य मानत बानी । बेतिया से जे भी उहाँ से मिले जाये, कम–से–कम उहाँ के हमार हाल चाल जरूर पूछत रहीं । लवटला पर, भेंटइला पर ऊ आदमी ई सब बात जब करे त हमार दिमाग चकरा जात रहे कि उहाँ के क्षणिक मुलकाती के क्षण के केतना जोगवले आ रहल बानी । केहू माने ना माने, भोजपुरी भाषा–साहित्य के इतिहास में भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के जन्मदाता पाण्डेय अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के भी एक मात्र जन्मदाता रहीं, काहेंकि ए दुनूँ के जन्म देवे के केन्द्र में उहें के एक मात्र संयोजक रहनीं । हमरा मूल्यांकन में त पूरा भोजपुरी भाषा–साहित्य जगत में भोजपुरी के विकास विस्तार खातिर पाण्डेय कपिल जी खानी भोजपुरी के प्रति समर्पित आदमी ढिबरी बार के खोजलो से ना मिली । भोजपुरी भासा के, साहित्य के धरती पर जठ बान्हे के काम आ भोजपुरी के राष्ट्रीय पहचान बनावे में इहाँ के एगो महत्वपूर्ण भूमिका रहल बा, एकरा ला भोजपुरी साहित्य संसार हमेशा उहाँ के ऋणी रही ।

कलम के ई जादूगरी के साथे भोजपुरी के प्रचार–प्रसार के भी अद्भुत क्षमता उहाँ के रहे । अन्त में, उहाँ के प्रति सरधा–सुमन के दू शब्द–

केहू जी के जहर हो जाला ।
केहू मर के अमर हो जाला ।
भोजपुरी के रउआ एगो भोर रहनीं
विहान कइनी, बटोर कइनी
जबले जिअनीं तबले
लमहर अँजोर कइनीं ।

–पूर्व भोजपुरी विभागाध्यक्ष
रामलखन सिंह यादव कॉलेज, बेतिया

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



इयाद के ऐनक में पाण्डेय कपिल

—श्रीमती सुशीला पाण्डेय

कहवाँ से शुरू करीं, कहवाँ से ना, कुछ बुझाते नइखे। इनकरा ऊपर लिखलको बहुते कठिन बा, कारण इनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व बहुआयामी रहे। प्रयास करऽतानी कुछ भूलल–बिसरल चित्र के उकेरेके ।

इहाँ के बियाह करके जब हमरा के अपना दुआरी उतरले रहीं त हम सोलह पार क चुकल रहीं आ इहों के सतरहवें चलत रहे; हमरा से कुलि चार माह बरहन रहन ।

हमरा बियाह के दिन याद बा, साल 1947 के अप्रील महीना के 30 तारीख । तबले देश स्वतंत्र ना भइल रहे, बाकिर ई मालूम रहे कि आज ना काल आजाद हो जाई । जब हमार बियाह भइल रहे त इहाँ के बी.एच.यू. में पढ़त रहीं । आइए फर्स्ट इयर के इम्तहान दे चुकल रहन । कॉलेज खुलत रहे, एह से इहाँ के बियाह बाद तुरंते लौटियो गइल रहीं । सुनले रहीं कि इहाँ के बिरला हॉस्टल में रहत रहीं । गर्मी छुट्टी में कॉलेज दू माह खातिर बन्द रहत रहे त इहाँ के गाँव आ जात रहीं आ ओही बीचे एकमा हाईस्कूल में पढ़ावत रहीं । दसहरा के छुट्टी में जब आवत रहीं त आपन दुआरी से कुछ दूर पर आपन पुस्तैनी

www.bhojpurisahityangan.com

लाइब्रेरी से सटल अंगनई में नाटक के मंचन करत रहीं आ इहों के पार्ट करत रहीं । हमनी के अपना कोठा पर से नाटक देखत रहीं ।

इहाँ के जब बी.ए. में गइलीं, तबसे हमनी के बीचे चिट्ठी के आवा–जाही होखे लागल रहे। हमरा इयाद बा कि हम इनकर चिट्ठी के बाट जोहत रहत रहीं आ सब के संजोके रखलहूँ रहीं ।

हमार ससुराल के साहित्यिक परिवेश रहे, हमार श्वसुर जी स्व. पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह जी के साहित्यिक मित्रमंडली गाँवें आवत रहे, ददिया स्वसुर पाण्डेय दामोदर सहाय कविकिंकर अपना जमाना के प्रतिष्ठित साहित्यकार रहले। जमीन्दारी रहला के बजह से इलाका में बरहन प्रतिष्ठा रहे । अप्रैल 1950 में बी.ए. के इम्तहान देला के बाद इहाँ के बनारस से गाँवे अइनीं आ आगा के पढ़ाई करे खातिर पटना चल अइनीं आ लॉ कॉलेज में एडमिशन ले लेलीं । ओही साले इनकर नौकरियो हो गइल सचिवालय के राजभाषा विभाग में । जब इहाँ के पटना चल गइल रहीं त फाइनल के सर्टिफिकेट आइल रहे । सुनले रहीं कि जब इहाँ के पटना में रहत रहीं त जनता होटल में साहित्यकार लोगन के जुटान होत रहे । इहाँ जब गाँव आवत रहीं त पटना के बात बतावत रहीं, जेह से हम जनले रहीं कि इहाँ के जनजीवन आ चाणक्य पत्रिका खातिर भी काम करत रहीं ।

जब इहाँ के पटना में अकेला रहत रहीं, ओही बीचे 1956 ई. में हिन्दी गीत–संग्रह 'आभास' प्रकाशित हो गइल रहे । हम ओह किताब के पढ़ले रहीं, ऊ किताब इहाँ के अपना दादाजी स्व. दामोदर सहाय कविकिंकर जी के पुण्य स्मृति में समर्पित कइले रहीं । ऊ गीत–संग्रह के दू–चार लाइन हमरा आजो इयाद बा–

"सागर स्वप्न तुम्हारे मन का
जिसकी कोई चाह नहीं है ।
और यहाँ ऐसी लाचारी
आगे की ही राह नहीं है ।"

साल 1957 में इनका पटना के गार्डिनर रोड में क्वाटर मिल गइल रहे । क्वाटर मिलला पर इनकरा साथे हमार मझिला देवर पाण्डेय सुरेन्द्र रहे लगलीं, उनको के टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में पढ़ावे के काम मिल गइल रहे । कुछ दिन बाद हमहूँ क्वाटर में आ गइल रहीं । हमरा अइला के बाद इहाँ के लइकन खातिर हिन्दी के व्याकरण लिखले रहीं

www.bhojpurisahityangan.com

जे साल 1959 में 'नवीन सुबोध व्याकरण' नाम से प्रकाशित भइल रहे ।

इहाँ के बहुत सुन्दर चित्रकारी करत रहीं, इनकर बनावल पेंटिंग हम संजो के रखले रहीं, बाकिर 1975 के बाढ़ में कुल्हि सब बर्बाद हो गइल । जवन साहित्यिक मंडली जनता होटल में जमत रहे, धीरे–धीरे ऊ मंडली गार्डिनर रोड के हमनी के क्वाटर में जमे लागल रहे, अधरतिया ले कवितन के पाठ चलत रहे आ गजल–गीतन के गायन साहित्यिक मंडली में प्रमुख रूप से आवेवाला लोगन में नारायण जी (ब्रजकिशोर नारायण), रूद्र जी (राम गोपाल शर्मा रुद्र) । कभी–कभार सत्यानारायण जी आवत रहले । कुछ दिन बाद हमर श्वसुर जी आ इनकर माई भी हमनिए के साथे गार्डिनर रोड में रहे लागल रहीं । इनकरा बाबूजी के अइला से उनकर साहित्यिक मित्र आवे लगले जेमे बेनीपुरी जी, रेणु जी रहले । समय इयाद नइखे, एक बार हरिवंश राय बच्चन जी भी हमनी इहाँ गार्डिनर रोड में आइल रहले । आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी त पारिवारिक सदस्ये रहले, शीतलपुर गाँवे से इनकर आना–जाना रहे । हमनी के घर के बियाह–सादी में पारिवारिक सदस्य नियर ही जुटल रहत रहीं, उहाँ के हिन्दी आ भोजपुरी के कवि रहीं ।

उन्नीस सौ इकसठ में छपल इनकर कुछ बालोपयोगी कवितन के किताब 1975 के बाढ़ में बर्बाद होए से बाँच गइल रहे । 'हीरे के टुकड़े' आउर 'फूल और कलियाँ' । इ दूनो किताब जब छपल रहे त हमार बड़ लइकी 'अम्बुजा' आठ नौ बरिस के रही । हमरा इयाद बा कि हमार लइकी 'फूल और कलियाँ' किताब पर छपल अपना 'अम्बुजा' नाम देख के एतना खुश भइल रहे, जेकर कवनो ठिकान ना रहे । किताब में छपल सब कवितन के ऊ इयाद क गइल रही आ जे केहू आवत रहे ओकरा सुनावत रही, हमनी के क्वाटर में भी आपन एगो फुलवारी रहे एह से ओकरा ई गीत बहुते पसन्द रहे–

मेरी फुलवारी में खिलते
रंग–बिरंगे फूल ।
लाल गुलाब मनोहर लगता
उजला–सा कचनार ।
चम्पा जूही और चमेली
बेला हरसिंगार ।।

साठ के दसक में इहाँ के भोजपुरी साहित्य लेखन में जुट

www.bhojpurisahityangan.com

गइलीं । आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी के सानिध्य के कारण इनकर झुकाव भोजपुरी के ओर गइल । आचार्य महेन्द्र शास्त्री के 'व्यक्तित्व आ कृतित्व' पर लोगन के आलेख आउर आचार्य जी के हिन्दी आ भोजपुरी में लिखल कविता के संग्रह करके अपना सम्पादन में छपवइले रहन ।

इनकर भोजपुरी में लिखल पहिलका कविता–संग्रह 'भोर हो गइल' 1971 साल में छपल । ओह किताब के उहाँ के अपना माई के नामें समर्पित करत लिखले रहीं– 'जेकरा मुँह से भोजपुरी छोड़ के दोसर बोली नइखीं सुनले' । जब ऊ किताब छप के आइल रहे त हम उहाँ के अम्मा के पढ़ के सुनवले रहीं । बाद में उनकर पोती अम्बुजा किताब में छपल पूरा कविता अपना दादी के सुनवले रही । ओह में के एगो कविता के बोल हमरा आजो इयाद बा–

'काहे फूँकेलऽ बंसुरिया हम तऽ आवते रहनी हँ' । भोर हो गइल के बाद इनकर उपन्यास 'फुलसुंघी' आइल, हम ओ किताब के कई हाली पढले रहीं, बाकिर कबहूँ ना समझ पवलीं कि ढेला बाई उर्फ गुलजारी बाई के महेन्द्र मिसिर से का सम्बम्ध रहे आ गुलजारी बाई सुहागन मुअली त उनकर सुहाग के रहे ? 2007 साल में इनकर दूसरका गजल–संग्रह आइल 'परिन्दा उड़ान पर' । किताब छपके आवत रहे त एकबार पढ़त त जरूरे रहीं । ऊ किताब इहाँ के अपना बाबूजी के पुण्य–स्मृति में समर्पित कइले रहीं । आज बुझाता कि ओह में के 'परिन्दा' इनकरे आत्मा रहे ।

फिर उनकर कविता–संग्रह 'दुनिया के सतरंज बिछल बा' साल 2014 में आइल, जेकरा में अधिकतर गजल बा । ओह में एगो गजल बा जेकरा ई अपना डायरी में रिटायरमेन्ट के बादे लिखले रहीं, जेकरा के ई आपन दूसर डायरी में लिखले रहीं जब बम्बई में बेटी इहाँ रहीं । पेंशन पवला से आदमी के जीवन केतना खुशहाल रहेला ओकर भाव पृष्ठ–43 पर आइल बा; देखीं–

बुढ़वा–बुढ़िया हमनी दूनो परानीजी ।
अपना गिरही में हमनी खुश बानी जी ।।

पेंशन पाके हम भइली मन के राजा ।
बुढ़िया भइली हमरा घर के रानी जी ।।

www.bhojpurisahityangan.com

करत रहीले हम दिन–रात मटरगस्ती ।
दोस्त महिम का साथे काटीं चानी जी।।

बुढ़िया रानी देखस कुल घर के धंधा ।
अउर सम्हारस भोरे–साँझ चुहानी जी ।।

नइखी जानत जे दोसरके का होई ।
जब एगो मउअत के चादर तानी जी ।।

जब 2017 के अक्टूबर महीना में इहाँ के हॉस्पिटलाइज रहीं त ओही बीचे इनकर अंतिम किताब दोहावली के रूप में छप के आइल रहे 'साँस चलत जबले रहे' । अस्पताल से घरे लवटला के बाद इहाँ के आपन छपल किताब देख लेले रहीं आउर ओही दिने विदा भी हो गइलीं। साँचो इहाँ के जबतक साँस चलत रहल, तबतक लिखत रहलीं ।

कहल जाला सोहबत के असर पड़ेला । इनकर लिखलका पढ़ सुन के हमरो मन कइल कुछ लिखे के, त बचपन में फुआ नानी से सुनल कहानी के इयाद पारत लिख गइली, जेकरा संकलित करके 'बेलवंती रानी' नाम से छपाइल ।

अब इनका संगे आपन बितलका कुछ बात कहीं हम दूनों एगो सिनेमा देखले रहीं 'मुगले आजम' रात के 9 से 12 बजे वाला शो । इनका संगे हम विश्व भोजपुरी सम्मेलन, जे दिल्ली में भइल रहे, में शरीक भइल रहीं । तबियत खराब रहला के बजह से हम इनका संगे आगरा के विश्व भोजपुरी सम्मेलन में शरीक न हो सकल रहीं, जेकरा में इनका 'सेतु सम्मान' मिलल रहे ।

इनका संगे हमरा बद्रीनाथ, द्वारिका, बालाजी, वैष्णो देवी, रामेश्वरम्, जगन्नाथपुरी आदि तीर्थन के दर्शन करेके सौभाग्य मिलल । हमनिए के दूनो प्राणी रहत रहीं त इहाँ के जहाँ–जहाँ जात रहीं त हमहूँ साथे जात रहीं । हमनी के बनारस कईएक बार गइली, बी.एच.यू. में इनकर छोट भाई प्रोफेसर रहले । उहों जे हॉस्टल में इहाँ के रहत रहीं, ओकरा के देखवले रहीं ।

गाँव त छूट गइल रहे अंठावने–उनसठ से, पर इहाँ के शीतलपुर

www.bhojpurisahityangan.com

भुला ना पवलीं । जे केहू आवत रहे, ओकरा से आपन गाँव के 'हिन्दी मंदिर' (पुस्तकालय) के बारे में बात जरूरे करत रहीं । शीतलपुर के नाम उनकर पहिलका उपन्यास से लेले 'घर आ बाहर' आउर 'दुनिया के संतरज बिछल बा' तक में आइल बा । जनवरी 2017 में आखर के लोग भोजपुरिया स्वाभिमान कलेन्डर के लोकार्पण इनकरे हाथे करइले रहन । भोजपुरिया स्वाभिमान के 2018 के जून अंक इनकरे नामे छापल रहले । 2 नवम्बर 2017 में इनकर निधन हो गइल । अब इनकर इयादे शेष रह गइल बा । बस एह इयाद के ऐनक में जवन सूरत झलकल, ओकरे तस्वीर राखि देले बानीं । ओह स्मृति के सरध–सुमन चढ़ावत बानीं ।

(ई संस्मरण हम अपना बड़का दामाद 'राजेश' जी के बोलत गइली ? हँ आ उहाँ के लिखत गइली ? हँ) ।

–इन्द्रपुरी, पटना

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

बानगी

आचार्य पाण्डेय कपिल के चुनिन्दा गजल

: 1 :

जिन्दगी बाँध के बइठल रहीं तोहरे खातिर
अपनहीं आप में पइठल रहीं तोहरे खातिर

मन के रसरी त जरल आग से दुनिया के, मगर
खाक होके भी हम अइँठल रहीं तोहरे खातिर

जिन्दगी लाख धुँआइल त धुँआइल, बाकिर
आग जइसन तबो सँइठल रहीं तोहरे खातिर

नील आकाश में सुरता के जब घिरल बदरी
मोर बन के तबे थिरकल रहीं तोहरे खातिर

प्रान-वंशी के लहर साँस के संगीत भइल
बन के जमुना तबे उमड़ल रहीं तोहरे खातिर

: 2 :

अब त दिल सबसे भर गइल बाटे
दर्द हद से गुजर गइल बाटे

दुश्मनी के जहर चढ़ल जे रहे
पोरे-पोरे पसर गइल बाटे

बुद्धि का जोम में जमाना ई
खेत ममता के चर गइल बाटे

www.bhojpurisahityangan.com

आदमी के भइल बढ़न्ती बा
आदमीयत त मर गइल बाटे

अबले जे ना गइल ऊ अइँठन ह
मन के रसरी त जर गइल बाटे

: 3 :

रहे पहिले जे अब ऊ चाह नइखे
ए जिनिगी में ऊ धधकत धाह नइखे

दरद दिल में अँगेजे के लकम बा
कबो ओठन प आइल आह नइखे

मरम आँखिन के का केहू बताई
समुन्दर के त कवनो थाह नइखे

भइल अपराध कुछ रूपो से बाटे
ई खाली आँख के त गुनाह नइखे

कवन बाटे ऊ मंजिल जिन्दगी के
जहाँ पहुँचे के कवनो राह नइखे

: 4 :

करनी बिना कहला से का
चाहत बिना चहला से का

मन साफ ना जो बा अगर
गंगा नहा लिहला से का

www.bhojpurisahityangan.com

छीनल-कटल जे बा दही
अेकर तरी महला से का

जेकरा दया ना लाज बा
ओकरा चरन गहला से का

जहवाँ ना जेकर पुछ बा
उहवाँ बनल रहला से का

: 5 :

अब त जीयल पहाड़ लागत बा
काहे जिनिगी उजाड़ लागत बा

कइसे अपनन से केहू बतियावो
एहू अँगना में बाड़ लागत बा

का करो ई चना,अकेला बा
तनिको फूटत ना भाड़ लागत बा

बन्द बा हो रहल गइल-आइल
बीच राहे प झाड़ लागत बा

झर रहल बा जहें-तहें ओढ़ना
एही मौसम में जाड़ लागत बा

: 6 :

झुकल सिर बा, मगर नइखे झुकल शर्मिन्दगी में ई
झुकल जब भी,झुकल सरधा से, मन से बन्दगी में ई

www.bhojpurisahityangan.com

करीं मझधार के मत बात दरिया के, तलातुम के
फँसल बा नाव आपन जिन्दगी के तीरगी में ई

कहाँ रंगीनियत में खोज सुन्दरता के हो पाई
अगर खोजे के बा रउआ त खोजीं सादगी में ई

अरे अजबे ई रउआ एह तरे गुमसुम भइल बानी
फुलल नइखे त कतहीं मुँह भला नाराजगी में ई

: 7 :

बात मन से उतर गइल बाटे
जिन्दगी अब ठहर गइल बाटे

कइसे पंछी भला उड़ान भरो
पाँख केहू कुतर गइल बाटे

एह जमाना के का कहे के बा
चाल जेकर सुतर गइल बाटे

धाह कबले सहत रहे केहू
आग बहुते लहर गइल बाटे

तेज भागत समय के आँधी में
पाँव आपन लथर गइल बाटे

:: 8 ::

बुढ़वा-बुढ़िया हमनी दुनू परानी जी
अपना गिरही में हमनी खुश बानी जी

www.bhojpurisahityangan.com

पेंशन पाके हम भइनी मन के राजा
बुढ़िया भइली हमरा घर के रानी जी

करत रहीले हम दिन-रात मटरगस्ती
दोस्त-महिम का साथे काटीं चानी जी

बुढ़िया रानी देखस कुल घर के धंधा
अउर सम्हारस भोरे-साँझ चुहानी जी

नइखीं जानत जे दोसर के का होई
जब एगो मउअत के चद्दर तानी जी

:: 9 ::

ठान लिहला पर कठिन आसान हो जाला
काम हो जाये के तबहीं भान हो जाला

आँख मुँदलो पर जे छवि झलकल करे
रूप उनकर चौदवीं के चान हो जाला

होत प्राते पास का अमराइ से
'पी कहा' के दर्द-बेकल गान हो जाला

आप मुँह खोलीं सम्हर के जान लीं
जान लीं, दीवार के भी कान हो जाला

लालिमा आकाश में जब दिख पड़े
भोर भइला के तबहिए भान हो जाला

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com



पाण्डेय कपिल के प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथ

मौलिक

1. आभास (हिन्दी कविता–संग्रह) 1956 ई.
2. फुलसुंघी (भोजपुरी उपन्यास) 1977 ई.
3. कह ना सकलीं (भोजपुरी गजल) 1995 ई.
4. जीम बेचारी का कही (भोजपुरी गजल) 2004 ई.
5. परिन्दा उड़ान पर (भोजपुरी गजल) 2007 ई.
6. विविधा (संपादकीय निबंध तथा अन्य) 2011 ई.
7. दुनिया के सतरंज बिछल बा 2014 ई.
8. साँस चलत जब ले रहे (भोजपुरी दोहा–संग्रह) 2017 ई.

अनूदित

1. आरा में दो मास
   (मूल : 'टू मंथ्स इन आरा इन 1857',
   जॉन जेम्स हॉल्स) 1961–2007 ई.
2. कृष्णार्जुन संवाद (गीता के भोजपुरी अनुवाद) 2015 ई.

संपादित

1. नवाजंलि 1965 ई.
2. सारण्यक 1966 ई.
3. आचार्य महेन्द्र शास्त्री : व्यक्तित्व और कृतित्व 1971 ई.
4. दसरतन 1988 ई.
5. एक मुट्ठी लाई 1997 ई.
6. भोजपुरी कहानी हाल–साल के 1997 ई.
7. भोजपुरी सतसई 1997 ई.
8. धार के खिलाफ 2001 ई.
9. भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला 1971–2007 ई

www.bhojpurisahityangan.com

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. Pt-428/90
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका जुलाई-अगस्त-सितंबर-अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर, 2018

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रकाशन

क्रम	पुस्तक	लेखक / संपादक	मूल्य
1.	मानिक मोर हेरइले	—विद्यानिवास मिश्र	40.00
2.	श्रीमंत	सं0 —नागेन्द्र प्र0 सिंह —प्रो. ब्रजकिशार	50.00
3.	भोजपुरी सपूत डॉ. प्रभुनाथ सिंह	सं0 —प्रो. ब्रजकिशोर —जौहर शाफियाबादी —गुरुचरण सिंह, —जीतेन्द्र वर्मा	100.00
4.	निरगुन वाणी	सं0 —कुलदीपनारायण 'झड़प' —प्रो. शंभुशरण	50.00
5.	भोजपुरी सिनेमा	सं0 —प्रो. ब्रजकिशोर —जीतेन्द्र वर्मा	200.00
6.	मितवा : एक अनुशीलन	सं0 —गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'	100.00
7.	अन्हार के साँच	—अतुल मोहन प्रसाद	200.00
8.	रामनाथ पांडेय	सं0 —प्रो. ब्रजकिशोर —गुरुचरण सिंह —जीतेन्द्र वर्मा	60.00
9.	दण्डी स्वामी विमलानंद सरस्वती	सं0 —प्रो. ब्रजकिशोर, —सूर्यदेव पाठक 'पराग' —जीतेन्द्र वर्मा	100
10.	भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (2014 से अब तक के अंक आधा दाम पर उपलब्ध)		50.00 सलाना

❖❖❖

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, 204, साकेत प्लाजा, जमालरोड, पटना-1 से प्रकाशित, आउर प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा जे॰ एम॰ कम्प्यूटर, पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-3 में अक्षर-संयोजित आ शिवा इन्टरप्राइजेज, पटना-6 से मुद्रित। सम्पादक: प्रो॰ ब्रजकिशोर